لَنۡ يَّجۡعَلَ اللّٰهُ لِلۡكٰفِرِيۡنَ عَلَى الۡمُؤۡمِنِيۡنَ سَبِيۡلًا (अन्निसा - 142)

यह कदापि नहीं होगा कि काफ़िर मोमिनों को दोषी करने के लिए मार्ग पा सकें।

अद्वितीय पुस्तक

शहन-ए-हक़

(सत्य का कोड़ा)

जिसका दूसरा नाम यह है

आर्यों की कुछ सेवा और उनके वेदों तथा आलोचनाओं की कुछ वास्तविकता

यह पुस्तक जो मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब लेखक बराहीन अहमदिया की कृतियों में से है उस इफ़्तिरा से भरी हुई पुस्तक का उत्तर है जो क़ादियान के कुछ हिन्दुओं की ओर से लेखराम पेशावरी की सहायता से चश्मा नूर अमृतसर में छापी थी सामान्य हित के लिए मिर्ज़ा साहिब की ओर से प्रकाशित की गई।

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

मसीह मौऊद-व-महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक	:	शहन-ए-हक़्क़ (सत्य का कोड़ा)
Name of book	:	Shahna-E-Haq
लेखक	:	हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम
Author	:	Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani Masih Mau'ud Alaihissalam
अनुवादक	:	डा अन्सार अहमद पी.एच.डी आनर्स इन अरबिक
Translator	:	Dr Ansar Ahmad, Ph.D, Hons in Arabic
टाइपिंग, सैटिंग	:	मलीहा सबाह
Typing Setting	:	Maliha Sabah
संस्करण तथा वर्ष	:	प्रथम संस्करण (हिन्दी) अगस्त 2018 ई०
Edition. Year	:	1st Edition (Hindi) August 2018
संख्या, Quantity	:	1000
प्रकाशक	:	नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
Publisher	:	Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
मुद्रक	:	फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर, (पंजाब)
Printed at	:	Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur (Punjab)

प्रकाशक की ओर से

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित इस पुस्तक का यह हिन्दी अनुवाद श्री डॉ० अन्सार अहमद ने किया है और तत्पश्चात मुकर्रम शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रिव्यू कमेटी), मुकर्रम फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), मुकर्रम अली हसन एम. ए., मुकर्रम नसीरुल हक़ आचार्य, सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद एम. ए. और इब्नुल मेहदी लईक एम. ए. ने इसकी प्रूफ़ रीडिंग और रिव्यू आदि किया है। अल्लाह तआला इन सब को उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विनीत

हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़

नाज़िर नश्र व इशाअत क़ादियान

पुस्तक परिचय

शहन-ए-हक़

(सत्य का कोड़ा)

यह पुस्तक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने आर्यों की एक पुस्तक जिसका नाम था- 'सुर्मा चश्म आर्य की हक़ीक़त और फ़न्न-व-फ़रेब ग़ुलाम अहमद की कैफ़ियत' के रद्द में लिखी जो अत्यन्त गन्दी, दिल दुखाने वाली और गालियों से भरी हुई थी। जो क़ादियान के कुछ हिन्दुओं की ओर से लेखराम पेशावरी की आर्थिक सहायता से चश्म-ए-नूर प्रेस अमृतसर से छपी थी, के खंडन में लिखी। लेखक ने उसका नाम शहनए हक़ रखने का यह कारण वर्णन किया है-

"चूंकि हमारी इस पुस्तक में उनकी अनुचित मीन-मेख करने पर चेतावनी का कोड़ा जड़ना तथा निन्दा के आरोप का हण्टर ताड़-ताड़ मारना हित का प्रतीक समझा गया है। इसलिए इस पुस्तक का नाम भी शहन-ए-हक़ रखा गया है क्योंकि यह पुस्तक आर्यों के आवारा स्वभाव लोगों को सीधा करने के लिए कोड़े का आदेश रखती है और विनोद पूर्वक इस पुस्तक का एक अन्य नाम भी रखा गया है और वह यह है-

आर्यों की कुछ सेवा तथा उनके वेदों
और
नुक्त: चीनियों की कुछ माहियत

अश्शिर्कतुलइस्लामिया ने इस पुस्तक का लेखन बुकडिपो तालीफ़-
-व-इशाअत क़ादियान के प्रकाशित संस्करण 1923 ई. से कराया और प्रूफों को सही करने के साथ उसका मुकाबला शहनए हक़ के द्वितीय संस्क-

रण से किया गया। तालीफ़-व-इशाअत बुकडिपो द्वारा प्रकाशित पुस्तक में शहन-ए-हक़ के पृष्ठ 42 से संबंधित हाशिया जिसमें "हिन्दू-व-आर्य नाम का बयान" लेख प्रकाशित हुआ है। पुस्तक के अन्त में लगाया गया है और शहनए हक़ द्वितीय संस्करण में यही हाशिया असल स्थान पर पृष्ठ 30 से 35 में दर्ज है इसी प्रकार द्वितीय संस्करण की तिथि पृष्ठ 46 से संबंधित हाशिए से पहले दर्ज है और द्वितीय संस्करण के पृष्ठ हाशिए पर दे दिए गए हैं।★

घोषणा

चूंकि पुस्तक सिराजे मुनीर जो भविष्यवाणी पर आधारित होगी, चौदह सौ रुपए की लागत से छपेगी। इसलिए छपने से पूर्व खरीदारों की मांगें आना आवश्यक है ताकि बाद में कठिनाइयां पैदा न हों। इस पुस्तक का मूल्य डाक-खर्च के अतिरिक्त एक रुपया होगा। इसलिए सूचित किया जाता है कि जो सज्जन पक्के इरादे से 'सिराजे मुनीर' को खरीदना चाहते हैं वे अपनी दरख़्वास्त पते सहित भेजें। जब पर्याप्त दरख़्वास्तों का एक भाग आ जाएगा तो पुस्तक का छपना तुरन्त आरंभ हो जाएगा।

والسلام علی من اتبع الهدی

ख़ाकसार
ग़ुलाम अहमद, क़ादियान

★**नोट -** पृष्ठ 324 से 326 तक घोषणा और सार्वजनिक सूचना पर आधारित लेख शाहन-ए-हक़ प्रथम संस्करण में सम्मिलित नहीं है। आदरणीय मौलाना जलालुद्दीन शम्स साहिब के लिखित पुस्तक परिचय शाहन-ए-हक़ के अनुसार यह लेख केवल 1923 ई० वाले संस्करण में सम्मिलित है, जहाँ से इसे नक़ल किया गया है।

सार्वजनिक सूचना

पाठकों पर स्पष्ट रहे कि हमारा यह आचरण हरगिज़ नहीं कि बहस-मुबाहसों में या अपनी पुस्तकों में अपने सम्बोधित के लिए किसी प्रकार के कठोर शब्द पसन्द करें। या कोई दिल दुखाने वाला शब्द उसके पक्ष में या उस के किसी बुज़ुर्ग के हक़ में बोलें। क्योंकि यह आचरण सभ्यता के विरुद्ध होने के अतिरिक्त उन लोगों के लिए हानिप्रद भी है जो विरोधी राय की स्थिति में दूसरे सदस्य की पुस्तक को देखना चाहते हैं। कारण यह है कि जब किसी पुस्तक को देखते ही दिल को कष्ट पहुंच जाए तो स्वभाव खराब होने के कारण किस का मन चाहता है कि ऐसी दिल दुखाने वाली पुस्तक पर दृष्टि भी डाले। किन्तु हम अफ़सोस के साथ लिखते हैं कि हमें इस पुस्तक में एक ऐसे डींगे मारने वाले व्यक्ति के लेख का उत्तर लिखना पड़ा जिसने अपने झूठ से प्रश्न ही ऐसे किए थे जिसका पूरा-पूरा तथा वास्तव में सच्चा वही उत्तर था जो हमने लिखा है। यद्यपि हमने यथासंभव विनम्रता और नर्मी को अपने हाथ से नहीं जाने दिया और वही शब्द लिखे जो वास्तव में सही और यथोचित हैं। परन्तु हमारी अन्तर्आत्मा तथा पदों का ध्यान रखने के जोश ने हमें इस बात से भी रोका कि हम नीच प्रकृति और गन्दे स्वभाव के लोगों के लिए वे शिष्टाचार प्रयोग करें जो एक सुशील, सभ्य और सज्जन पुरुष के लिए अनिवार्य हैं। इन आर्यों ने हमसे किस प्रकार की सभ्यता का व्यवहार किया? यह हम अभी वर्णन करेंगे और हमें विश्वास है कि सभ्य आर्य इन अनुचित हरकतों को बिल्कुल उचित नहीं समझते होंगे जो हमारे बारे में कुछ दिलजले आर्यों ने अपने अश्लील कथन अपने पागलों जैसे जोश से व्यक्त किए हैं। उन्होंने मेरे बारे में ऐसे गन्दे इश्तिहार छापे

हैं, ऐसे गालियों से भरे बेनाम पत्र भेजे हैं, पीठ पीछे ऐसी गन्दी बातें कही हैं कि मुझे हरगिज़ आशा नहीं कि कोई अच्छे स्वभाव वाला आर्य इस सलाह और मशवरे में सम्मिलित रहा होगा। और फिर इन भाग्यवान लोगों ने इसी को पर्याप्त नहीं समझा बल्कि बार-बार पत्रों एवं विज्ञापनों द्वारा मुझे क़त्ल करने की भी धमकी दी है। लेखराम पेशावरी ने जिसने गन्दे और दुर्गन्ध युक्त पत्र हमारी ओर लिखे, वे सब हमारे पास मौजूद हैं और बेनाम पत्र जो जान से मार देने के बारे में किसी उन्मादी आर्य की ओर से पहुंचे यद्यपि हम कुछ नहीं कह सकते कि किस आर्य की ओर से हैं, किन्तु हम यह जानते हैं कि उद्दण्ड लोगों के गिरोह में से कोई एक है। इसी प्रकार जिन विज्ञापनों को ये लोग यदा-कदा जारी करते रहते हैं उनके पढ़ने से प्रत्येक व्यक्ति समझ सकता है कि उनके दिलों में क्या कुछ भरा हुआ है। बेनाम पत्र जितने आर्यों की ओर से आते हैं वे प्राय: बैरिंग होते हैं और अपना एक टैक्स व्यर्थ करने के अतिरिक्त जब अन्दर से खोला जाता है तो निरी गालियां और बहुत गन्दी बातें होती हैं और ऐसा प्रतीत होता है कि ये पत्र ख़राब लिखावट वाले लड़के से लिखाए जाते हैं। इबारत वही मामूली उन गन्दी ज़बान वाले आर्यों की होती है और लिखावट बच्चों की सी। हम नहीं जानते कि हमने इन का क्या बुरा किया है। सच्चाई को सभ्यता और प्रेमभाव से व्यक्त करना हमारा स्वभाव है। यद्यपि चूंकि ये लोग किसी प्रकार झूठ को छोड़ना नहीं चाहते। इसलिए सच बोलने वाले के प्राणों के दुश्मन हो जाते हैं। अत: चूंकि हमारे नज़दीक सच बात से खामोश रहना और जो कुछ अल्लाह तआला ने साफ तथा स्पष्ट ज्ञान दिया है उसे ख़ुदा की जनता तक न पहुंचाना समस्त पापों से बड़ा पाप है। इसलिए हम उनकी मौत की धमकियों से तो नहीं डरते और न ही ख़ुदा की इच्छा के बिना मार

देना उनके वश में है। परन्तु हम यह भी नहीं चाहते कि किसी अन्याय करने वाले आर्य के हमारे देशवासी और समनगरीय आर्य पुलिस की खींचातानी में फंस जाएं। अतः हम सर्व प्रथम तो उन्हें यह नसीहत करते हैं कि इस सीमावर्ती मनुष्य से जिसका नाम लेखराम या लेखराज है बच कर रहें। उसके साथ उनका गुप्त रूप से पत्र लिखना अच्छा नहीं। उसके पत्र जो हमारे नाम आए हैं बहुत ख़तरनाक हैं। दूसरे हम यह भी उचित समझते हैं कि हम अब अपनी प्रिय जन्म भूमि कथित हित को दृष्टिगत रखते हुए छोड़ दें और किसी अन्य शहर में जाकर रहने लगें। क्योंकि जिस स्थान पर हमारा रहना हम से ईर्ष्या करने वालों के लिए दुःख का कारण हो उनका दुःख दूर करना उचित है। क्योंकि ख़ुदा की क़सम हम शत्रुओं के दिलों को भी दुःख देना नहीं चाहते। हमारा ख़ुदा हर स्थान पर हमारे साथ है। हज़रत ईसा मसीह (अलैहिस्सलाम) क कथन है कि-"नबी अपमानित नहीं परन्तु अपने देश में।" किन्तु मैं कहता हूं कि न केवल नबी कोई सत्यनिष्ठ भी अपने देश के अतिरिक्त कहीं भी अपमानित नहीं होता। अल्लाह तआला फ़रमाता है-

وَمَنْ يُّهَاجِرْ فِي سَبِيْلِ اللّٰهِ يَجِدْ فِي الْاَرْضِ مُرَاغَمًا كَثِيْرًا وَّسَعَةً

(अन्निसा-101)

अर्थात् जो व्यक्ति ख़ुदा की आज्ञा का पालन करते हुए अपने देश से हिजरत (प्रवास) करे तो ख़ुदा तआला की पृथ्वी पर ऐसे विश्राम-स्थान पाएगा जहां बिना किसी हानि के धार्मिक सेवा कर सके। अतः हे देशवासियो! हम शीघ्र तुम्हें अलविदा कहने वाले हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली

आजकल धार्मिक आन्दोलन की एक जोशीली वायु के चलने से उनको भी मुबाहसे और शास्त्रार्थ करने का विचार हो गया है, जिनकी खोपड़ी में ईर्ष्या और शत्रुता के जोश के अतिरिक्त अन्य किसी प्रकार की योग्यता नहीं। ये लोग जब देखते हैं कि ख़ुदा का एक बन्दा उसकी असीम कृपा से शक्ति प्राप्त करके अधर्म तथा अविश्वासों को दूर करने के लिए खड़ा हो गया है और ख़ुदा की सहायता ने उसके भाषणों, लेखों, उसकी ज़ुबान तथा उसके प्रवचनों में कुछ ऐसा प्रभाव (तासीर) और बरकत रखी है कि वह एक तीव्र अग्नि के समान झूठ को भस्म करती जाती है। तब उनके प्राणों पर कंपन पड़ता है कि कहीं ऐसा न हो कि यह सच्चाई का शोला ऐसा बढ़ जाए कि हमारे अपवित्र सिद्धान्तों को जो धर्म की बुनियाद समझे जाते हैं पूर्णतया नष्ट कर दे। तब ये लोग पहले तो यह सोचते हैं कि गालियों एवं अपशब्दों से रिफॉर्मर एवं सुधारक का मुंह बन्द किया जाए। जब उस पर कोई प्रभाव नहीं होता तो फिर आरोपों और झूठे इल्ज़ामों से यह मतलब निकालना चाहते हैं, ताकि यदि वह अपने कार्य को नहीं छोड़ता तो लोगों को ही उसके सिद्धानतों के बारे में भ्रमित करें। इस प्रकार उसके कार्य में विघ्न उत्पन्न करें। फिर यदि यह योजना भी व्यर्थ जाती है तो अन्ततः उसकी जान (प्राण) पर आक्रमण करते हैं। इतिहास के पन्नों पर दृष्टि डालने से ज्ञात होगा कि सैकड़ों सच्चे और ईमानदार ऐसे ही मंदबुद्धि वाले लोगों द्वारा कथित कष्टों को सहन करके अन्ततः किसी नीच के हाथों शहीद हुए, और जिसके प्रताप को प्रकट

करने का दृढ़ संकल्प किया था, अन्ततः उसी के मार्ग में प्राण दे दिए। अतः जिस प्रकार प्राचीन काल से अज्ञानियों की यह आदत चली आई है कि जब वे युक्तिसंगत बातों से खामोश और निरुत्तर हो जाते हैं तो अन्त में उन्हें यही उपाय सूझता है कि उस व्यक्ति को हर प्रकार के दुःख एवं कष्ट पहुंचाएं या उसकी जीवन-यात्रा ही समाप्त कर दें। इस बारे में हमें आर्य सज्जनों पर जो हमारे साथ भी ऐसा ही व्यवहार कर रहे हैं★ कुछ अफ़सोस नहीं करना चाहिए बल्कि हम हर प्रकार का कष्ट सहन करने

★**नोट**- जिस व्यक्ति को हमारे बारे में आर्यों के अपशब्द और गालियां सुननी हों वह लेखराम पैशावरी की पुस्तक तथा भाषणों को सुने। 27 जुलाई 1888 ई० का विज्ञापन जो आर्यों की ओर से 'चश्म-ए-नूर' प्रेस अमृतसर में हमारे बारे में छपा है वह देखें और साथ ही उनका एक विज्ञापन "बैल न कूदा कूदी गोन" नामक है, भी पढ़ें और इसके साथ ही आर्यों की वह पुस्तक जिस का विषय यह है कि "सुरमा चश्म आर्य की हक़ीकी और फन-ए-फरेब ग़ुलाम अहमद की कैफ़ियत" हमारी इस पुस्तक के साथ देखने योग्य है। इस लेखराम पेशावरी का प्रत्येक स्थान तथा प्रत्येक सभा में यही आचरण रहा है कि बकवास करना और गालियां देना तथा झूठे आरोप लगाना। उसने अपनी पुस्तक 'तकज़ीब बराहीन अहमदिया' में हज़रत मुहम्म्द सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बहुत निरादर किया है और एक अपवित्र एवं मूर्ख व्यक्ति से पवित्र नबी के जीवन-चरित्र की तुलना करना चाहता है। परन्तु धन्य हो कि 'आर्य-दर्पण' के पर्चों तथा इन्दरमन के विज्ञापनों और पंडित शिवनरायण साहब के भेजे हुए लेखों ने इस तुलना की आवश्यकता ही नहीं रहने दी। 27, जुलाई 1886 ई० के विज्ञापन में जो आर्यों की ओर से 'चश्म-ए-नूर' प्रेस में छपा है हमें मारने की भी धमकी दी गई है कि तीन वर्ष के अन्दर-अन्दर तुम्हारा काम तमाम हो जाएगा। फिर एक पत्र 3 दिसम्बर 1886 ई० को एक गुमनाम (अज्ञात) आर्य बनकर किसी आर्य ने जिसकी वास्तविकता ज्ञात है बेरिंग तौर पर भेजा है। उसमें बड़े स्पष्ट तौर पर मार देने की घोषणा है। परन्तु यह ज्ञात नहीं कि विष पिलाकर या किसी अन्य प्रकार से। ख़ैर कुछ अन्दर ही अन्दर

के लिए हर समय तैयार हैं। क्योंकि हम जानते हैं कि संसार में सौभाग्य का इस से बढ़कर अन्य कोई मार्ग नहीं कि गुमराह लोगों को भयंकर कष्टों से मुक्त करने के लिए स्वयं को कष्टों में डाला जाए। परन्तु यदि हमें कोई अफ़सोस या आश्चर्य है तो केवल यही है कि यदि हम उनके कथनानुसार उनके धर्म से पूर्णतया अपरिचित और अनभिज्ञ, अज्ञान और कामवासनाओं में डूबे हुए हैं तो फिर हमारे बारे में उनके दिलों में इतनी

शेष हाशिया- विचार-विमर्श कर लिया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि किसी मदरसा के मूर्ख छात्र से लिखाया गया है जिसकी लिखावट ख़राब है। परन्तु लेख ऐसे ढंग का है जैसा 27,जुलाई 1886 ई० का लेख है। परन्तु स्मरण रहे कि हम सच को प्रकट करने में ऐसी घोषणाओं से नहीं डरते। जीवन तो क्या यदि हमारे हज़ार जीवन भी हों तो यही इच्छा है कि इस मार्ग में न्योछावर हो जाएं। यद्यपि हम जानते हैं कि ये पुस्तकें किन सज्जनों की हैं और किन बाह्य एवं आन्तरिक षड़यंत्रों, परामर्शों एवं परस्पर पत्र-व्यवहार के पश्चात् किसी ठोस आशा से इसी स्थान के किसी यहूदा इस्क्रियूती या बिगड़े हुए सिख की दुमदही से जारी किए गए हैं, परन्तु हमें कोई आवश्यकता नहीं कि सरकारी शासकों को इस की सूचना दें क्योंकि ये लोग हमारे बारे में जो कुछ बुरे इरादे कर रहे हैं हमारे वास्तविक न्यायधीश (ख़ुदा) को उसका ज्ञान पहले से ही है। हम आश्चर्य चकित हैं कि उन की इन उमंगों का कारण क्या है। क्या कहीं उनमें रामसिंह के कूकों की आत्मा तो नहीं घुस गई। हे आर्यो हमें मौत से मत डराओ। हम इन व्यर्थ धमकियों से डरने वाले बिलकुल नहीं। हम झूठ से अवश्य पर्दा उठाएंगे और तुम्हारे वेदों की वास्तविकता को कण-कण करके खोल देंगे।

نمی ترسیم از مُردن چنیں خوف از دل افگندیم : کہ مُردیم زاں روزے کہ دل از غیر برکندیم
دل و جاں دررہِ آں دلستانِ خود فدا کرویم : اگر جاں ماز ماخوذ زہد بصد دل آرزو مندیم

धैर्य से काम लेना तो हमारा स्वभाव है, परन्तु पाठक समझ सकते हैं कि दयानन्द के सम्प्रदाय की कैसी भयानक नीति है उत्तर न दे सकने की स्थिति में क्या भली योजना सोच रखी है कि मौत की धमकी दी जाए। यों तो कौन व्यक्ति

घबराहट क्यों हो गई है कि हमारा वध करने की सोचने लगे। क्या जो व्यक्ति ऐसा नादान और तामसिक वृत्ति के पेचों में ग्रस्त है उसका वध करने के लिए भी कोई जलता और दांत पीसता है परन्तु सच तो यह है कि हमने उनके सिद्धान्तों की जितनी धज्जियां उड़ाई हैं, उनके मिथ्या नियमों को तबाह किया है। हमने जिस प्रकार उन पर क़ुर्आन की सच्चाइयों को प्रकट किया है वास्तव में यह ऐसी ही घटना है जिससे एक झूठे के धोखे में लिप्त व्यक्ति के दिल में ऐसे-ऐसे विचार और जोश उत्पन्न होने

शेष हाशिया- है जो एक दिन नहीं मरेगा। किन्तु ये लोग विचार नहीं करते कि ऐसी धमकियां उन लोगों के दिलों पर क्या असर डाल सकती हैं जिनको ख़ुदा की किताब ने पहले से ही यह शिक्षा दे रखी है-

قُلْ اِنَّ صَلوٰتِیْ وَنُسُکِیْ وَمَحْیَایَ وَمَمَاتِیْ لِلّٰہِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ

(अलअन्आम-163)

अर्थात् विरोधियों से कह दे कि मैं अपने प्राण को मित्र नहीं समझता। मेरी इबादत, मेरी क़ुर्बानी, मेरा जीवित रहना और मेरा मरना ख़ुदा के लिए है। वही अधिकार रखने वाला ख़ुदा जिसने प्रत्येक वस्तु की सृष्टि की है। हां ये धमकियां उन दिलों पर प्रभाव कर सकती हैं जो ख़ुदा के मार्ग में प्राण देना नहीं चाहते। क्योंकि वे उसके समान सदैव से अनादि और अनुत्पत्त बने बैठे हैं और उस (ख़ुदा) को इस योग्य नहीं समझते कि उसके लिए प्राण दिए जाएं, और जबकि इनको उस से प्रेम नहीं, अपने जीवन से प्रेम करते हैं। यही कारण है कि वेदों में इस प्रकार की प्रार्थनाएं हैं। जैसे ऋग्वेद प्रथम अष्टक में यह प्रार्थना है-

"हे! अग्नि तू ऐसा कर कि हम सौ जाड़ों तक जीवित रहें और अपने समस्त शत्रुओं का वध कर दें और उनका माल लूट लें।"

किन्तु जो लोग पवित्र शिक्षा के प्रभाव से संसार से संबंध तोड़ कर ख़ुदा के आदेशों के दास हो जाते हैं उनमें इस अस्थायी जीवन के प्रति स्वयं ही निराशा पैदा हो जाती है। हम इस स्थान तक इस पुस्तक को लिख चुके थे कि उसी समय 6

चाहिए। यदि हम मर गए या किसी आर्य के हाथ से मारे गए तो इससे हमारी हानि क्या है? हमारी पूर्ण एवं पवित्र पुस्तकें आर्यों के बुरे विचारों का हमेशा खण्डन करती रहेंगी, और यदि उन में से एक भी सीधे मार्ग पर आ गया तब भी हम उसका पुण्य (सवाब) प्राप्त करेंगे। इस समय हमें आर्यों के व्यक्तिगत कार्य-कलापों पर कोई वाद-विवाद नहीं, बल्कि केवल यह दिखाना चाहते हैं कि ये लोग झूठ से कितना प्रेम और सच से द्वेष रखते हैं। उनमें से कोई सज्जन पुरुष नहीं सोचता कि पहले मैं उन

शेष हाशिया- मार्च 1887 ई० का अख़बार 'धर्म जीवन' आ पहुंचा। उसे पढ़ने से ज्ञात हुआ कि पंडित शिवनारायण के वध के लिए आर्यों की ओर से एक घोषणा प्रकाशित की गई है। इस मृत्यु-दण्ड के लिए उनके तीन अपराध हैं- प्रथम यह कि बड़ी जांच-पड़ताल और दावे के साथ उन्होंने 'धर्म-जीवन' में कई बार यह लेख प्रकाशित किया है कि वेद उन अल्प ज्ञान रखने वालों के विचार हैं जो वास्तव में अग्नि, सूर्य और जल इत्यादि को अपना परमेश्वर समझते थे। उनकी बुद्धि भी उसी सीमा तक थी। दूसरा अपराध यह कि उन्होंने अपने इसी अखबार में यह भी प्रकाशित किया कि वेदों में लिखा है कि यदि किसी स्त्री के सन्तान न हो तो वह किसी अन्य पुरुष से जो वास्तव में उसका पति नहीं है सन्तान-प्राप्ति के लिए संभोग कर सकती है। इस प्रक्रिया का नाम वेदों में नियोग है। योग्य पंडित दयानन्द जी इस कार्य को निरन्तर जारी रखने के लिए सत्यार्थ प्रकाश में आर्यों को विशेष निर्देश देते हैं कि इस प्रकार उनकी स्त्रियां सन्तान अवश्य प्राप्त करती रहें नि:सन्तान न रहें। तीसरा अपराध यह है कि उन्होंने अपने अख़बार 'धर्म जीवन' में अख़बार 'आर्य दर्पण' इत्यादि के प्रमाण द्वारा तथा अपनी जांच-पड़ताल के आधार पर कहा कि दयानन्द जी हिन्दुओं के अवतारों को बुरा कहते हैं। बाबा नानक साहिब का नाम धोखेबाज़, मक्कार और ठग रखते हैं, परन्तु उनकी अपनी करतूतें ऐसी हैं कि उनका सम्पूर्ण जीवन ही संसारिक मोह का रहा। जिससे किया धोखा ही किया, यहां तक कि मां-बाप से भी जिनके वीर्य से जन्म लिया

वेदों का दर्शन तो कर लूं जिनके समर्थन में मुंह से इतना झाग निकल रहा है। हम सच-सच कहते हैं कि यदि आर्यों के योग्य लोग नमूने के तौर पर ऋग्वेद का उर्दू में शाब्दिक अनुवाद करवा कर एक-एक प्रति उन अज्ञान आर्यों को दे दें जो उस पर बिना देखे आशिक़ हो रहे हैं तो सारा जोश पल भर में ठण्डा हो जाए। अब एक ओर तो ये लोग अनुवादों को नहीं देखते जो बड़े प्रयास एवं परिश्रम से अंग्रेज़ी और उर्दू में किए गए हैं तथा केवल मूर्खता से ऐसा सोच रहे हैं कि ये समस्त अनुवाद

शेष हाशिया- था। बुद्धि के भी ऐसे मोटे कि एक बात पर कभी नहीं डटे। कभी चार पुस्तकों का नाम वेद रखा और कभी उसी ज़ुबान से 22 या 24 वेद बना डाले। कभी उनके परमेश्वर को संसार का ही ज्ञान नहीं, कि कितना है। कभी ऐसा तुनक मिजाज़ (चिड़-चिड़ा) कि मुक्ति प्रदान करके और बड़े-बड़े पवित्र ऋषि बनाकर फिर उनके समस्त आदर-सम्मान को मिट्टी में मिला देता है और कीड़े-मकौड़े बना देता है। अत: 'धर्म जीवन' और अखबार 'बिरादर हिन्द' में ऐसे बहुत से प्रहार परन्तु सच्चे दयानन्द पर किए गए थे, जिसके परिण्म स्वरूप आज पंडित शिव नारायण भी मृत्यु-दण्ड के भागीदार ठहरे। अफ़सोस कि कोई आर्य यह विचार नहीं करता कि जिन अपराधों का दयानन्द स्वयं इक़रारी है यां जो अभद्र बातें जैसे नियोग का कार्य उसने स्वयं ही सत्यार्थ प्रकाश में लिखकर तथा वेदों से प्रमाण देकर आर्यों की चरित्रवान स्त्रियों को पर पुरुषों के साथ चरित्रहीन बनाना चाहा है इन बातों में पंडित शिवनारायन का क्या दोष है। यह तो वेद का दोष है जिसमें ऐसा पवित्र ज्ञान मौजूद है और या दयानन्द का दोष है जिसने ना समझी से ऐसा संवेदनशील विषय सत्यार्थ प्रकाश में वर्णन कर दिए तथा वेदों की पवित्रता का डंका बजाकर नमूना दिखा दिया। इसी से

आर्यों की कुछ सेवा

उनके वेदों और **आलोचनाओं** की कुछ वास्तविकता अत: हर प्रकार की प्रशंसा उस ख़ुदा के लिए है जिसने हमें इसकी हिदायत दी वह हमारा स्वामी (ख़ुदा) तथा हर स्थान पर हमारा सहायक है और काफ़िरों का कोई स्वामी (ख़ुदा) नहीं।

मनगढ़त और धोखेबाज़ी हैं और दूसरी ओर संस्कृत पढ़ने की कला भी नहीं रखते। समस्त दारोमदार डींगें मारने पर है। 'तीन बकाइन और लाला जी बाग़ में (अर्थात् ग़रीब होकर शेखियां बघारते हैं) न्याय पूर्वक देखना चाहिए कि मुसलमान जिस पवित्र और कामिल (पूर्ण) किताब (क़ुर्आन) पर ईमान लाए हैं। उन्होंने इस पवित्र किताब को अपने अन्दर कितना ढाल लिया है। सामान्य रूप से सभी मुसलमान पवित्र क़ुर्आन का पर्याप्त भाग कंठस्थ रखते हैं जिसे पांच समय मस्जिद में नमाज़ की अवस्था में पढ़ते हैं। अभी बच्चा पांच या छ: वर्ष का हुआ कि उसके सामने पवित्र क़ुर्आन रखा गया। ऐसे लाखों लोग पाओगे जिन्हें सम्पूर्ण पवित्र क़ुर्आन प्रारंभ से अन्त तक कंठस्थ है। यदि एक अक्षर भी किसी स्थान से पूछो तो अगली पिछली सब इबारतें पढ़कर सुना दें। फिर केवल पुरुषों पर ही क्या, हज़ारों स्त्रियां सम्पूर्ण पवित्र क़ुर्आन कंठस्थ रखती हैं। किसी शहर में जाकर देखो सैकड़ों लड़कों और लड़कियों को देखोगे कि पवित्र क़ुर्आन आगे रखे हैं और अनुवाद सहित पढ़ रहे हैं। अब सच-सच कहो कि इस की तुलना में वेद का क्या हाल है? और स्वयं ईमानदारी से अपनी ही अन्तरात्मा से पूछ कर देखो कि वेद की हालत की इससे क्या समानता है? अत: तुम इससे ही समझ सकते हो कि ख़ुदा की सहायता किस किताब के साथ है और कौन सी किताब अपनी शिक्षाओं में पूर्ण रूप से ख्याति प्राप्त कर चुकी है। यों तो द्वेष रखने वालों का द्वेष ख़ुदा ही मिटाए तो मिट सकता है, परन्तु विचार करने वाले लोग समझ सकते हैं कि आजकल वेद के संबंध में आर्यों की कार्रवाई चोरों की भांति हो रही है। न तो वेदों के अनुवाद उर्दू और अंग्रेज़ी में स्वयं प्रकाशित करें और न प्रकाशित हो चुके को स्वीकार करें। भला मैं पूछता हूं उदाहरणतया यदि ॠग्वेद का वह अनुवाद जो दिल्ली सोसायटी ने प्रकाशित किया है और

लाखों लोगों में प्रसिद्ध हो चुका है सही नहीं है तथा उपद्रव में डालने वाला है, तो क्या इस उपद्रव को दूर करने के लिए आर्यों के योग्य लोगों का यह कर्त्तव्य नहीं है कि वे भी इसी ॠग्वेद का एक शाब्दिक अनुवाद उर्दू भाषा में प्रकाशित कर दें ताकि फैसला करने वाले स्वयं फ़ैसला कर लें कि उस पहले अनुवाद में कौन सी बेईमानी और हेरा-फेरी हुई है। परन्तु याद रखना चाहिए कि आर्य लोग ऐसा शाब्दिक अनुवाद उर्दू में कभी प्रकाशित नहीं करेंगे, क्योंकि वास्तव में यही लोग बेईमान और चोर हैं और अपने हाथों से वेदों के शब्दार्थ पर आधारित अनुवाद उर्दू में प्रकाशित कर दिए उस दिन हमारे वेदों की ख़ैर नहीं और ऐसे उड़ जाएंगे जैसे आग लग जाने से सम्पूर्ण बरूद घर उड़ जाता है। इसी कारण से उन्हें साहस न हुआ कि सत्यार्थ प्रकाश का ही उर्दू में अनुवाद कर दें।

अत: 6 मार्च 1887 ई० के 'धर्म जीवन' में लिखा है कि कुछ सरल स्वभाव आर्यों ने अनुवाद के लिए आग्रह भी किया। परन्तु योग्य सदस्यों की ओर से उत्तर मिला कि उचित अवसर नहीं है। हां पंडित शिवनारायन साहिब अग्निहोत्री ने वचन दिया है कि इस मुबारक पुस्तक का हम अनुवाद करेंगे। अफ़सोस आर्यों में ऐसे लोग बहुत ही कम हैं जो अपनी गांठ की बुद्धि रखते हों। लाखों लोगों की गवाही छोड़ कर एक दयानन्द पर मरे जाते हैं। अब हम इस किस्से को संक्षिप्त करके एक नई पुस्तक के मासिक प्रकाशन की खुशखबरी देंगे तथा उसी के विषय में आर्यों की उस पुस्तक का खण्डन लिखा जाएगा, जिस का नाम उन्होंने "सुर्मा चश्म आर्य की हक़ीक़त' रखा है। संभव है कि ऐसे व्यर्थ कार्य के लिए अपने अमूल्य तथा प्रिय समय को नष्ट करना शायद लोगों की दृष्टि में लाभप्रद न हो। परन्तु हमने अपने प्रिय समय के चार या पांच घण्टे इस छोटी पुस्तक को लिखने में व्यय किए हैं और वह

भी इसलिए ताकि हिन्दुओं के पुत्र और सरल स्वभाव लोग अपने बच्चों सहित हमारी खामोशी का यह अर्थ न समझ लें कि उनकी गन्दगी से भरी हुई पुस्तक कुछ हैसियत रखती है। चूंकि हमारी इस पुस्तक में उनकी निरर्थक मीन मेख पर चेतावनी का कोड़ा लगाना तथा भर्त्सना का हन्टर ताड़-ताड़ मारना उचित समझा गया है। इसलिए इस पुस्तक का नाम भी 'शहन-ए-हक़' (सत्य का संरक्षक) रखा गया है। क्योंकि यह पुस्तक आर्यों के दुष्चरित्र लोगों को सीधा करने के लिए संरक्षक के समान हैं। सहानुभूति के तौर पर इस पुस्तक का एक अन्य नाम भी लिखा गया है और वह यह है-

आर्यों की कुछ सेवा तथा उनके वेदों
और
नुक्तः चीनियों की कुछ माहियत

فَالْحَمْدُلِلّٰہِ الَّذِیْ ھَدَانَا لِھٰذَا ھُوَمَوْلَانَا وَ نَاصِرُنَا
فِیْ کُلِّ مَوْطِنٍ وَلَا مَوْلٰی لِلْکَافِرِیْنَ

چو شیر شرزۂ قرآں نماید رو بغریدن
دگر آنجا نماند روبہ ناچیز را غوغا

विज्ञापन

मासिक पत्रिका

क़ुर्आनी ताक़तों का जल्वागाह

(क़ुर्आनी शक्तियों का प्रदर्शन-स्थल)

जो जून 1887 ई० की 20वीं तिथि से प्रति मास प्रकाशित होगी।

जब तक मैंने आर्यों की वह पुस्तक नहीं देखी थी जिसका नाम है "सुर्मा चश्म आर्य की हक़ीकत और फ़न और फ़रेब ग़ुलाम अहमद की कैफ़ियत" तब तक इस दिशा में मेरा थोड़ा भी ध्यान न था कि मैं क़ुर्आन के ज्ञान और सच्चाइयों पर आधारित कोई मासिक पत्रिका इस कारण प्रकाशित करूं ताकि यदि कोई आर्य वेदों की कुछ वास्तविकता समझता हो तो क़ुर्आनी सच्चाइयों से उसकी तुलना करके दिखाए। परन्तु सुब्हान अल्लाह क्या हिकमत और अल्लाह की क़ुदरत है कि उसने कुछ अशुभ चिन्तकों को इस भलाई का कारण बना दिया ताकि संसार को क़ुर्आनी किरणों से प्रकाशमान करे और चमगादड़ की प्रकृतियाँ रखने वाले लोगों पर उनकी नासमझी प्रकट करे। अत: जिस पत्रिका का नाम मैंने शीर्षक में लिख दिया है, अर्थात् 'क़ुर्आनी शक्तियों का प्रदर्शन-स्थल' यह मोमिनों का वही सच्चा मित्र है जिसके शुभ आगमन का वास्तविक कारण शत्रु ही हुए अन्यथा कृपालु ख़ुदा को भली भांति ज्ञात है कि इससे पहले मैं जानता भी न था कि ऐसी मासिक पत्रिका के प्रकाशन का कार्य भी मेरे

द्वारा सम्पादित होगा। अब इस विषय का व्याख्यात्मक विवरण इस प्रकार है कि जब ख़ुदा की इच्छा इस बात की ओर हुई कि कोई ऐसी मासिक पत्रिका निकाली जाए जो प्रतिमाह क़ुर्आनी शक्तियों एवं सच्चाइयों को दिखा कर वेदों से भी ऐसे ही ज्ञान की अपेक्षा करे। इस प्रकार वेदों की अपनी विशेषता प्रत्येक पर पूर्णरूप से स्पष्ट कर दे और पवित्र क़ुर्आन की श्रेष्ठता एवं महत्त्व प्रत्येक न्यायवान पर प्रकट करे। अत: इस साक्षात हकीम ने सार्वजनिक हित के लिए यह योजना बनाई जो कुछ आर्यों ने एक विज्ञापन पुस्तक के रूप में फरवरी 1887 ई० को चश्म-ए-नूर अमृतसर में छपवाया और उसमें इन्हीं विषयों पर जिनका हमने ऊपर वर्णन किया है बड़े ज़ोर से प्रेरणा दी। मालूम होता है कि इस विज्ञापन का लेखक या सम्पादक केवल पंडित लेखराम पेशावरी ही नहीं है, बल्कि इसके वास्तविक कर्ताधर्ता आर्यों के कई सभ्य देवता समान तथा सत्यवादी इसी बस्ती क़ादियान के निवासी हैं जिन में से एक केशधारी आर्य भी है। उनकी इस पुस्तक के मूल लेख को आर्य सभ्यता के अनुसार एक अन्य मृदुभाषी, शुद्ध भाषण देने वाले आर्य ने सुधार किया है जो शायद नाभा की रियासत में नौकर है। निष्कर्ष यह कि आर्यों की यह पुस्तक उन लोगों की ओर से है, जिन्होंने वेद तथा क़ुर्आन की तुलना के लिए हम से एक ऐसी पुस्तक लिखने का निवेदन किया है जो क़ुर्आनी ज्ञान एवं वास्तविकताओं का वर्णन करने वाली हो और निवेदन भी ऐसे सम्मान सूचक एवं सभ्य शब्दों द्वारा किया है जिसका प्रत्येक वर्णन उनकी सुशीलता, आन्तरिक पवित्रता एवं सत्यनिष्ठ होने का सूचक है। अत: वे लिखते हैं कि सर्वप्रथम तो मिर्ज़ा को इस कार्य का विचार आना ही एक भ्रम है, क्योंकि वह हिन्दुओं के साथ मुबाहसे: का नाम लेने के भी योग्य नहीं, धार्मिक पुस्तकों से पूर्णत: अनभिज्ञ है। यहां तक कि अक्षरों को

पहचानने से भी सर्वथा वंचित है। फिर यदि लज्जावश इस कार्य को प्रारंभ करेगा तो नीचा देखेगा। केवल क़ुर्आन की आयतों से अपना पक्ष सिद्ध करके दिखाए अन्यथा हम बहुत नीचा दिखाएंगे। क़ुर्आन से ज्ञान की कोई बात हरगिज़ नहीं निकलेगी, और अरब के अनपढ़ों का ज्ञान से काम ही क्या था, ★ सम्पूर्ण संसार में जो ज्ञान प्रकट हुआ है वह पवित्र वेद के कारण है मिर्ज़ा को हम घोषणा करते हुए चुनौती देते हैं कि वह निस्सन्देह वादा की गई पत्रिका तैयार करे। यदि करेगा तो नीचा देखेगा। हम ख़ूब नीचा दिखाएंगे। हम मिर्ज़ा से कोई शर्त नहीं लगाते, क्योंकि उसका अवैध माल हमारे किस काम का है। वह छल-कपट से एकत्र किया गया है, फिर मिर्ज़ा चारों ओर से कर्ज़दार है और कौड़ी-कौड़ी का मुहताज तथा समस्त सम्पत्ति भी बिक गई। मिर्ज़ा के दिल पर अज्ञानता का पर्दा पड़ा हुआ है और साथ ही वह बड़ा दरिद्र (कंगाल) है। ज़मीन भी बिक गई। देखो क़र्ज़दारी और दरिद्रता के प्रमाण में उसके दो पत्र हैं जो किसी हिन्दू के नाम लिखे थे। खेवट प्रबन्ध द्वारा बटवारे से भी यही सिद्ध होता है। इसकी केवल साठ घुमाव भूमि है। बड़ा धोखेबाज़ है। क़ुर्आन, क़ुर्आन लिए फिरता है। क़ुर्आन से तो यह भी सिद्ध नहीं होता कि ख़ुदा शरीर और भौतिक नहीं। मिर्ज़ा तो क्या कोई मुहम्मदी विद्वान भी सिद्ध नहीं कर सकता। जिस क़ुर्आन का हाल यह है तो फिर उसमें ज्ञान क्या हो। ये पवित्र शब्द हैं जिनमें से हमने कुछ कम स्तर के कठोर शब्द छांट कर संक्षिप्त तौर पर यहां लिखे हैं। परन्तु हम इस बच्चों जैसी समझ और मूर्खता पर जो अत्यन्त क्रोध एवं उत्तेजना पूर्वक व्यक्त की गई है हंसें या रोएं वास्तव में हिन्दू लोग दुनिया कमाने में यद्यपि कितने ही चतुर और

★फुटनोट- यह शब्द उसने हमारे सरदार और मौला नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बारे में प्रयोग किया है। ऐसे अनादर पूर्ण और भी बहुत से शब्द हैं जो हमने नहीं लिखे हैं।

होशियार हों, परन्तु धर्म के विषय में बहुत ही अबला और बुद्धिहीन हैं। इसके अतिरिक्त बेईमानी की भी वही आदत चली आती है, जैसे नमक-मिर्च के बेचने और तोलने में बचपन से रखते हैं। अकारण मूर्खता और नादानी से स्वयं ही एक बात कह कर बुद्धिजीवियों पर प्रमाणित करा देते हैं कि उनका मस्तिष्क ज्ञान के प्रकाश से कितना भरा हुआ है तथा उनकी जनकारियां कितनी विस्तृत हैं। वाह-वाह! क्या ख़ूब समझ है। इसी समझ पर तो यह उपहास कराने वाला आरोप प्रस्तुत कर दिया कि क़ुर्आन ख़ुदा तआला को शरीर एवं भौतिक बताता है और इसमें कोई कटाक्षपूर्ण आयत नहीं। काश इन सज्जनों ने पवित्र क़ुर्आन का एक-पृष्ठ ही किसी से पढ़ लिया होता, फिर आरोप के लिए अग्रसर होते। भला जो व्यक्ति पवित्र क़ुर्आन का एक अक्षर भी सही प्रकार से पढ़ नहीं सकता और न ही किसी इस्लामी पुस्तक में उसने ऐसा कोई इक़रार देखा है जिस पर आरोप हो सके। तो क्या ऐसे व्यक्ति का यह अधिकार है कि यों ही आरोप के लिए दस गज़ की जीभ निकाले। हम वादा करते हैं कि पुस्तक 'क़ुर्आनी ताकतों का जलवागाह' (क़ुर्आनी शक्तियों का प्रदर्शन स्थल) में सर्वप्रथम यही बहस करेंगे कि ख़ुदा तआला की पवित्र एवं पूर्ण विशेषताओं और उसकी ख़ुदाई की विशेषताओं एवं क़ुदरतों (जिन में से एक यह भी है कि वह शरीर एवं भौतिक होने से पवित्र है) किस पुस्तक में सही और पूर्णता के साथ पाई जाती हैं, वेद में या क़ुर्आन में? और फिर क़ुर्आन से खुले-खुले प्रमाण प्रस्तुत करके लाला साहिब के वेद से भी ऐसे ही प्रमाण की अपेक्षा करेंगे। तब मालूम नहीं कि मिश्रा जी किस बिल में घुसते फिरेंगे। कोई पढ़े तो उसे मालूम हो कि पवित्र क़ुर्आन अल्लाह की विशेषताओं का वर्णन करने में, उन्हें शरीर एवं भौतिक वस्तुओं से अलग और विशेष ठहराने में ऐसा अद्वितीय है कि यह स्पष्ट वर्णन किसी अन्य

पुस्तक में हरगिज़ पाया ही नहीं जाता। हां यह सत्य है कि उसके कलाम का पढ़ना और समझना प्रत्येक घास खाने वाली बकरी का काम नहीं, कुछ तो विशिष्टता चाहिए। बिल्कुल खड़पंच बनकर राय देने वाला न बन बैठे। भला हम तुम से ही इन्साफ चाहते हैं कि जो व्यक्ति एक विशाल लहरों वाले दरिया के संबंध में यह विचार व्यक्त करे कि उसमें एक बूंद पानी भी नहीं, ऐसे व्यक्ति का क्या नाम रखना चाहिए? अन्धा या सुजाखा। खेद कि आर्य लोग ऋग्वेद की उन श्रुतियों को नहीं पढ़ते जिनमें इन्द्र को ख़ुदा बना कर फिर उसके कंठ में सोमरस डाला गया है और अग्नि को परमेश्वर मान कर धुएं की झंडी उसके सर पर रखी गई है। और फिर इसी पर बस नहीं अपितु ऋग्वेद संहिता अष्टक प्रथम में इन्द्र परमेश्वर को कोसिका ऋषि का पुत्र भी बना दिया गया है, जिसके घर इन्द्र ने स्वयं ही जन्म ले लिया था। फिर इस पर ही बस नहीं किया बल्कि इसी अष्टक में परमेश्वर के परमेश्वरत्व का यहां तक सत्यानाश किया गया है कि उसके बारे में लिखा है कि वह जवान भी होता है और बूढ़ा भी तथा सोमरस पीते-पीते उसका पेट समुद्र के समान हो जाता है। अग्नि परमेश्वर के बारे में लिखा है कि वह दो लकड़ियों के रगड़ने से उत्पन्न होता है और उसके माता-पिता भी हैं। अत: हम कहां तक अपने पृष्ठों को काला करें। जिन लोगों का परमेश्वर इतना शरीर एवं भौतिक विशेषताओं बल्कि संकटों में डूबा हुआ हो वे पवित्र क़ुर्आन पर ऐतराज़ करें। क्या यह अफ़सोस का स्थान है या नहीं? हमें उनके कठोर शब्दों का तो कोई दु:ख नहीं और न ही होना चाहिए, क्योंकि हम देखते हैं कि यदि किसी पर किसी अदालत से दस रुपए की डिग्री हो जाती है तो वह अपने आन्तरिक दोष के कारण उस न्यायाधीश को अपने घर तक बुरा-भला कहता चला जाता है। अत: जबकि अपने स्वभाव के विपरीत छोटी सी

बात पर मूर्खों की उत्तेजना का यह हाल है तो फिर हम जो उनकी धार्मिक बुराइयों की जड़ उखाड़ रहे हैं हमें यदि बुरा न कहें तो किस को कहें? और साथ ही जब उन्होंने अपने प्रसिद्ध पूर्वजों राजा रामचन्द्र जी और राजा श्री कृष्णा जी जो सर्वोत्तम हिन्दुओं के पूर्वज हैं जिनकी ख्याति के आगे ऋषियों का अस्तित्व और निशान नहीं खुल्लम खुल्ला तौर पर बुरा बल्कि आर्य गज़ट 1886 ई० में जिसका हम प्रमाण रखते हैं कितने शेरों में गन्दी गालियां दीं और इसी प्रकार दयानन्द ने अपने सत्यार्थ प्रकाश में पृष्ठ-356 पर बाबा नानक जी का नाम धोखेबाज़ और मक्कार रखा।★ अत: ऐसे लोगों पर हमें कुछ भी अफ़सोस नहीं करना चाहिए। कारण यह कि जब ये लोग जिनमें से कुछ ने सर पर बड़े-बड़े बाल भी रख लिए हैं और किशन सिंह, बिशन सिंह तथा नारायन सिंह नाम रख लिया है। स्वयं अपने गुरू को ही यह पुरस्कार देते हैं तो फिर अन्य स्थानों पर ये लोग कब चूकने वाले हैं। जिन्होंने शिष्य होकर अपने पुराने पेशवाओं को यह सम्मान दिया कि वे ठग और धोखेबाज़ हैं तो वे दूसरों के साथ किस आन्तरिक शुद्धता से व्यवहार करेंगे। फिर जब अपने पथ-प्रदर्शक की ही पगड़ी उतारने लगे तो उन्हें दूसरों के सम्मान का क्या ध्यान होगा। उनके संबंध में निम्नलिखित शे'र क्या खूब चरितार्थ होता है-

تو بدوستان چہ کردی کہ کنی بدیگراں ہم
حقّاً کہ واجب آمدز تو احتراز کردن

अर्थात्- तूने दोस्तों के साथ जैसा व्यवहार किया है वैसा ही दूसरों के साथ करना चाहिए (अन्यथा) तुझ से सावधान रहना अनिवार्य हो गया है।

★फुटनोट– इस अनादर का वर्णन अखबार धर्म जीवन 6 मार्च 1887 में भी मौजूद है कि सत्यार्थ प्रकाश में बड़े योग्य दयानन्द ने बाबा नानक जी को मक्कार कहा है।

अत: हम इन लोगों की अपमानजनक बातों के बारे में कुछ नहीं सोचते और न ही कुछ अफ़सोस, परन्तु इतना अवश्य है कि जब कोई अज्ञान होकर ज्ञानवान होने का दावा करे और मूर्ख होकर विद्वान होने का दम भरे तथा झूठा होकर सच्चा बन बैठे और चोर होकर उल्टा कोतवाल को डांटे तो ऐसा व्यक्ति प्रत्येक को बुरा मालूम होता है और इसी प्रकार हमें भी। रही यह बात कि उसकी विचित्र बुद्धि के अनुसार पवित्र क़ुर्आन ख़ुदाई ज्ञान से रिक्त और वेद ज्ञान से भरा हुआ है। तो इसका निर्णय (फैसला) तो स्वयं तुलना से हो जाएगा। हाथ कंगन को आरसी क्या है। हम स्वयं प्रतीक्षा में थे कि ऐसा निर्णय अति शीघ्र हो जाए। अत: आर्यों ने इसके लिए स्वयं ही मध्यस्थता का प्रबंध किया। हम उनकी इस प्रेरणा और मध्यस्थता के प्रबंध को ध्यानपूर्वक स्वीकार करते हैं और उन्हें शुभ सन्देश देते हैं कि अल्लाह ने चाहा तो ख़ुदा की कृपा और उसकी दी हुई सामर्थ्य से जून 1887 से उनके निवेदन के अनुसार ऐसी मासिक पत्रिका प्रकाशित करना आरंभ करेंगे। परन्तु साथ ही हम सादर निवेदन करते हैं कि जब वह पत्रिका अर्थात् क़ुर्आनी शक्तियों का प्रदर्शन स्थल प्रकाशित होने प्रारंभ हो जाए तो फिर लाला लोग मुक़ाबले से कहीं भाग न जाएं। अपने वेद की सहायता करने को तैयार रहें। हम यह तो जानते हैं कि आजकल हमारे देशवासी आर्यों में वेदों के प्रति जितना उत्साह पाया जाता है वह वास्तव में एक ही व्यक्ति की डींगे मारने के कारण है, जो इस संसार से चला भी गया, अन्यथा उसके संबंध में यही कहावत चरितार्थ होती है कि 'देखा न भाला सदक़े गई ख़ाला'। परन्तु जन सामान्य पर सिद्ध करके दिखाना हमारा कर्त्तव्य है कि वेद केवल उस युग के मोटे एवं निम्न स्तरीय विचार हैं कि जब आर्यों में अब तक सृष्टि और स्रष्टा में अन्तर करने का तत्त्व नहीं था, तत्त्वों तथा आकाशीय ग्रहों को ख़ुदा

तआला का स्थान दिया गया था। अत: ऋग्वेद के कवियों के वे समस्त उत्साहवर्धक काव्य जिनमें इन्द्र और अग्नि इत्यादि से बहुत सी गाएं, घोड़े तथा बहुत सा लूट का माल मांगा गया है इस बात पर गवाह हैं। इसके विपरीत पवित्र क़ुर्आन ऐसी विद्याओं, अध्यात्म ज्ञानों, बाह्य एवं आन्तरिक विशेषताओं को परिधि में लिए हुए है जो प्रत्यक्ष इन्सानियत की सीमा से आगे है और स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है कि इसने जिस प्रकार वास्तविकताओं तथा बारीक बातों को एक अनुपम सरस एवं सुबोध शैली में वर्णन किया है और फिर ऐसे सरस एवं सुबोध वर्णन की अनिवार्यता के साथ समस्त धार्मिक सच्चाइयों को एक दायरे के समान अपनी परिधि में ले लिया है। वास्तव में यह ऐसा कार्य है जिसे चमत्कार कहना चाहिए, क्योंकि यह मानवीय शक्तियों से परे और श्रेष्ठतर है। अन्तत: हम यह भी उचित समझते हैं कि आर्यों के नवयुवकों ने जितना हमें और हमारे मित्रों के सामाजिक कार्यों इस्लामी विशेषताओं तथा क़ुर्आनी विशेषताओं में अपने स्वभाव के अनुसार निराधार और अभद्र मीन-मेख की है उनका अलग-अलग संक्षिप्त उत्तर दिया जाए।

उसका कथन- मिर्ज़ा हमारी धार्मिक पुस्तकों से अनभिज्ञ है।

मेरा कथन- मैं कहता हूं कि यदि यही स्थिति है तो ऐसे अनभिज्ञ मात्र के सम्मुख तुम क्षण भर के लिए भी क्यों नहीं ठहर सकते? और उस चिड़िया की भांति जो बाज़ (श्येन) से भयभीत होकर चूहे के बिल में घुस जाती है इधर-उधर क्यों छुपते और भागते फिरते हो इसका क्या कारण है? क्या 'सुर्मा चश्म आर्य' ने आपके धर्म का कुछ शेष भी छोड़ा? क्या ठीक-ठीक दुर्गत बनाने में कोई कसर शेष रखी। इसलिए समझ लो कि यदि हम आपके घर के भेदी नहीं थे तो फिर हमने कैसे वेद के गुप्त दोषों को खोल कर रख दिया? यदि हम पूर्ण भेदी नहीं हैं तो हमने वेदों

के कई अंश 'बराहीन अहमदिया' में लिख दिए और कैसे 'सुर्मा चश्म आर्य' में आप लोगों को वह गंभीर घाव पहुंचा दिया जिसका अभी तक कोई उत्तर न बन पड़ा। अब छ: माह के पश्चात् उत्तर निकला तो यह निकला, जिसमें लिखा है गन्दी गालियों, झूठे आरोप लगाने के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं। प्रतीक्षा करते-करते हम थक भी गए कि कौन सा उत्तम एवं विद्वत्तापूर्ण उत्तर आता है। अन्ततः आपके मर्तबान में से केवल एक मक्खी निकली। क्या उत्तर देना और खण्डन लिखना इसी का नाम है। भला कोई न्यायप्रिय हिन्दू ही आप लोगों की पुस्तक को पढ़कर देखे और फिर क़सम खाकर कहे कि हमारी पुस्तक 'सुर्मा चश्म आर्य' का एक बिन्दु मात्र का भी इस कूड़ा-कर्कट से निवारण हुआ है? यदि कहो कि तुम्हें संस्कृत भाषा का ज्ञान नहीं तो मैं कहता हूं कि जिस स्थिति में दयानन्दी वेद चार-चार आने में बाज़ारों में ख़राब होते हैं और आपके वेद का उर्दू भाषा में अनुवाद भी हो चुका है और इसी प्रकार अंग्रेज़ी भाषा में भी प्रकाशित हो गया है तथा स्वयं दयानन्द ने भी जगह-जगह वेद की आस्थाओं एवं सिद्धान्तों को स्पष्ट करके सुना दिया है बल्कि 'वेद-भाष्य' का पर्याप्त भाग सामान्य जन की समझ में आने वाली उर्दू भाषा में प्रकाशित भी हो गया। इसी प्रकार आर्यमत की आस्थाओं के बारे में अन्य बहुत सी पुस्तकें स्पष्ट रूप से उर्दू भाषा में प्रकाशित हो गईं और मौखिक भाषणों द्वारा भी उनके योग्य अनुयायियों ने अपने सिद्धान्तों तथा आस्थाओं का प्रचार किया। तो क्या अब हमारे परिचित होने में कोई कमी रह गई? क्या अभी तक हम यही विचार करते रहें कि वेदों के सिद्धान्त तथा अस्थाओं की गठरी किसी ब्राह्मण की अंधेरी कोठरी में बहुत सी धूल के नीचे दबी पड़ी है कि किस युक्ति और उपाय से जिस तक हमारा पहुंचना संभव ही नहीं। क्या तुम्हें दयानन्द जी की पुस्तकों

और उनके मौखिक भाषणों तथा उनके लिखित मुबाहसे पर भी विश्वास नहीं, क्या वे लोग बिल्कुल झूठे ही हैं, जिन्होंने वेदों का उर्दू और अंग्रेज़ी भाषा में अनुवाद करने के लिए अंग्रेज़ी सरकार से सैकड़ों रुपए लिए हैं। फिर जब परिचय प्राप्त करने के लिए इतना सामान और पुस्तकें हमारे पास मौजूद हैं और वेद एवं वेदभाष्य तथा दयानन्दी 'सत्यार्थ प्रकाश' आदि पुस्तकें हमारी अलमारियों में भरी पड़ी हैं और मौखिक शास्त्रार्थों (मुबाहसों) में भी हमारी आयु गुज़र गई है। तो क्या हम अब तक आप लोगों के घर से अपरिचित हैं। फिर जब हमारा ज्ञान इतना विस्तृत है तो यदि एक संस्कृत नहीं तो न सही, इस विस्तृत ज्ञान के होते हुए जो वर्षों का भण्डार है इस काग-भाषा की आवश्यकता ही क्या है?

उसका कथन- मिर्ज़ा कौड़ी-कौड़ी से लाचार और क़र्ज़दार है।

मेरा कथन- इस स्थान पर हमें आश्चर्य है कि लाला लोगों को हमारे कर्ज़ की क्यों चिन्ता हो गई। यदि वे 'सुर्मा चश्म आर्य' का खण्डन लिख कर दिखाते और फिर मुंशी जीवनदास उस खण्डन के सही होने तथा उसकी उत्कृष्टता पर क़सम खाने को तैयार हो जाते, तब यदि हम उस क़सम वाली सभा में अपने वादे के अनुसार पांच सौ रुपए नक़द न दे पाते तो ऐसे आरोपों का औचित्य भी होता। परन्तु अब तो हमारी समझ में नहीं आता कि हमारी घरेलू हैसियत के बारे में इस चोर स्वभाव लेखक को जिसने हमारे सम्मुख कभी अपना नाम भी प्रकट नहीं किया इतनी चिन्ताएं क्यों लग गई हैं यहां तक कि बंदोबस्त के खेवट (पटवारी का काग़ज़) में हमारी भूमि खोजता फिरता है और अपने दुर्भाग्य से उस खोज में भी धोखा ही खाता है और झूठ बोलता है। हमें बहुत आश्चर्य है कि उसके दिल में इतनी चिन्ता क्यों पड़ गई तथा इसका कारण क्या है? हमारे इस देश में हिन्दुओं की जो एक जाति जट्ट है जिनमें से कुछ

लोग सर पर लम्बे केश भी रखते हैं, मैंने किसी विश्वसनीय व्यक्ति द्वारा सुना है कि सामान्यत: उनका यह स्वभाव है कि जब वे अपनी पुत्री का विवाह-संबंध किसी स्थान पर करना चाहते हैं तो पहले चुपके-चुपके उस गांव में चले जाते हैं जिस स्थान पर अपनी पुत्री का विवाह करने का इरादा होता है तब उस गांव में पहुंच कर छान-बीन करने के इरादे से पटवारी की खेवट, गिरदावरी, रोज़नाम: तथा अन्य माध्यमों से भी ज्ञात कर लेते हैं कि उस मनुष्य की कितनी भूमि है और वार्षिक आय कितनी है तथा वारिसों में इसका कितना भाग है। तब इस पूर्ण छान-बीन के बाद अपनी पुत्री उसे दे देते हैं। परन्तु यहां तो ऐसा कोई प्रसंग भी नहीं था। हां यदि कोई हमारे इल्हामी विज्ञापनों के मुकाबले पर आता तो उसे अधिकार था कि पहले अपनी सन्तुष्टि कर लेता और बैंक में रुपए जमा कराने के लिए हमें विवश करता, फिर यदि हम रुपए जमा न करवा सकते तो जो चाहता हम पर दोष लगाता। परन्तु हमारे मुकाबले के लिए तो किसी ने इस ओर मुंह भी न किया और ऐसे भागे जैसे कि सिक्ख अंग्रेज़ों से पराजित होकर नदी में डूब-डूब कर मृत्यु प्राप्त हुए थे। तो अब क्या अभद्र बातें करना शर्म और लज्जा का कार्य है। क्या हमने मुंशी इन्द्रमन मुरादाबादी के लिए चौबीस सौ रुपए नहीं भेजे थे जिससे लाला लोग लुप्त होकर अब तक दिखाई नहीं दिए कि कहां हैं।

उसका कथन- मिर्ज़ा ने इमाम मस्जिद क़ादियान जान मुहम्म्द से कहा कि मुझे इल्हाम हुआ है कि तुम अपने लड़के की कब्र खोदो। अर्थात् अब वह मरेगा जब कि वह नहीं मरा।

मेरा कथन- इस मनगढ़त झूठ का उत्तर यही पर्याप्त है कि لَعْنَةُ اللهِ عَلَى الْكَاذِبِيْنَ अर्थात् झूठों पर अल्लाह की लानत। यदि अन्य कोई सबूत भी चाहो तो यहां जान मुहम्मद साहिब का हस्ताक्षर किया

हुआ लेख मौजूद है★ उसे तनिक आंख खोल कर पढ़ लो। कुछ आनन्द उठाओ और यदि कुछ लाज-शर्म है तो क़ादियान में एक जल्सा आयोजित करके उस हिन्दू को हमारे सामने प्रस्तुत करो जिसने यह निराधार किस्सा लिख कर भेजा है क्योंकि केवल मनगढ़त झूठ का और केवल हम इसी सार्वजनिक जल्से में उस हिन्दू को कोई ऐसी क़सम देंगे जो उस पर प्रभाव डाल सके। इस प्रकार जो झूठा हो उसकी पोल खुल जाएगी। परन्तु केवल अभद्र लेखों द्वारा उस झूठ गढ़ने वाले हिन्दू का नाम लेना पर्याप्त न होगा, क्योंकि यह अनुभव हो चुका है कि यहां के हिन्दुओं पर लेखों द्वारा आरोप लगाया जाता है, पीछे से वे कानों को हाथ लगाते हैं कि हमें उसकी खबर भी नहीं। अत: उदाहरण के लिए वह विज्ञापन पर्याप्त है जिसमें लिखा है जैसे लाला शरमपत कहता है कि मैं मिर्ज़ा के इल्हामों की घोषणा को पूर्ण रूप से चालाकी और धोखा समझता हूं और मैं उनके किसी इल्हाम तथा भविष्यवाणी का गवाह नहीं हूं। जबकि हमारे पूछने पर लाला शरमपत उस लेख के प्रकाशित करने तथा ऐसे विज्ञापनों के लिखने का बिल्कुल इन्कारी है और क़सम खाकर कहता है कि मुझे इसकी खबर तक नहीं, बल्कि इससे पहले कई बार हमारे सामने अपनी सहमति व्यक्त कर चुका है कि उन इल्हामी भविष्यवाणियों को जिनका वह गवाह है सार्वजनिक तौर पर प्रकाशित करे। एक बार

★**हाशिया-** यह आरोप कि जैसे मिर्ज़ा साहिब ने यह कहा कि वास्तव में तुम्हारे लड़के के लिए इल्हाम हुआ कि तुम उसकी कब्र खोदो सरासर मनगढ़त झूठ है जिसकी कुछ भी वास्तविकता नहीं। मैं जानता हूं कि यह उन मूर्ख लोगों का मनगढ़त झूठ है जो न ख़ुदा की लानत से डरते हैं और न लोगों की लानत से डरते हैं। क्या ही अच्छा हो कि एक जल्सा आयोजित करके ऐसा व्यक्ति मेरे सामने लाया जाए ताकि मैं भी उसे बैठाकर पूछ लूं कि हे सुशील व्यक्ति! मिर्ज़ा साहिब ने कब तेरे सामने मुझे ऐसा इल्हाम सुनाया था।

ख़ाकसार- जान मुहम्मद इमाम मस्जिद क़ादियान

लेखराम पेशावरी क़ादियान में आकर उसे बहुत बहकाता रहा कि इल्हामों की गवाही से इन्कार करना चाहिए। किन्तु वह स्पष्ट झूठ से घृणा करके उसके बहकाने में नहीं आया और अब भी यदि उससे सार्वजनिक जल्से में क़सम देकर पूछा जाए तो वह स्पष्ट तौर पर बता सकता है कि उसे दयानन्द की मृत्यु की भविष्यवाणी उसकी मृत्यु से कई दिन पूर्व बताई गई थी। स्वयं लाला शरमपत के भाई पर जो एक जटिल और ख़तरनाक मुकद्दमा चीफ़ कोर्ट में दायर हुआ था, उसका परिणाम भी भविष्यवाणी द्वारा उस पर स्पष्ट कर दिया गया था। ऐसा ही दिलीप सिंह की दो हालतों में से एक हालत अर्थात् मृत्यु या अपमान तथा पंजाब की यात्रा से हानि के बारे में उसे स्पष्ट तौर पर उस समय सुना दिया गया था जबकि उस संकट का नामो निशान भी मौजूद न था। ऐसी ही बहुत सी बातें घटित होने से पूर्व प्रकट कर दी गई थीं जिनका वह बड़ी दृढ़तापूर्वक गवाह है परन्तु इसकी प्रमाणिकता किसी सार्वजनिक जल्से में क़सम देकर होनी चाहिए न कि यों ही द्वेषपूर्ण लेखों के छल-कपट से। इसके अतिरिक्त पुस्तक सिराजे मुनीर भी जो भविष्यवाणियों पर आधारित हैं अति शीघ्र प्रकाशित होकर झूठों का मुंह काला करने वाली हैं।

उसका कथन- हमने अपने विज्ञापन में सिद्ध कर दिया है कि मिर्ज़ा के 8 अप्रैल 1886 ई० के विज्ञापन में वादा किए गए पुत्र की भविष्यवाणी का दारोमदार वर्तमान गर्भावस्था पर रखा गया है जिसमें अन्ततः लड़की पैदा हुई।

मेरा कथन- वह विज्ञापन जिसमें हमारी ओर से इल्हामी या व्याख्या के तौर पर इस दारोमदार के शब्द मौजूद हैं कि इसी गर्भ से वह लड़का जन्म लेगा, उससे कदापि विलम्ब नहीं करेगा। उसमें अवश्य जन्म ले लेगा। वही विज्ञापन एक जल्सा आयोजित करके कुछ मुसलमानों, हिन्दुओं

और ईसाइयों की उपस्थिति में प्रस्तुत कर देना चाहिए ताकि झूठे का मुंह काला सब पर प्रकट हो जाए। परन्तु यदि विज्ञापन के प्रस्तुत करने के पश्चात् विज्ञापन की इबारत से यही बात स्पष्ट रूप से सिद्ध होती हो कि शायद वह पुत्र अब हो या बाद में हो तो ऐसे निर्लज्ज और झूठे के लिए जो हमारे इस विज्ञापन व्याख्या के विपरीत बार-बार अकारण अल्लाह की प्रजा को धोखा दे उस पर केवल अल्लाह की लानत हो कहना पर्याप्त नहीं बल्कि उसे कुछ दण्ड देना भी अनिवार्य है ताकि फिर कभी अपनी निर्लज्जता दिखाने का साहस न करे।

उसका कथन- एक टुकड़े खाने वाले अपरिचित डोम ने मिर्ज़ा की प्रशंसा में दो पृष्ठ का विज्ञापन जिसका शीर्षक 'सुरमा चश्म आर्य' है लिखा है केवल सांसारिक लोभ में अंधा हो रहा है। इस अदूरदर्शी मूर्ख पर क्या संकट आया कि अकारण झूठ बोल रहा है।

मेरा कथन- यह विज्ञापन का चरित्रवान लेखक जो शायद अपने विचार में स्वयं को किसी राजा का पुत्र समझता होगा, हम उसे डोम या डोम की सन्तान नहीं कहेंगे। ख़ुदा जाने ये कौन है और किसका है। परन्तु स्मरण रहे कि यह व्यक्ति अपने उन अभद्र शब्दों से जो थोड़े-बहुत अभी हमने लिखे हैं और कुछ सभ्यता के विरुद्ध तथा घृणास्पद देख कर छोड़ दिए हैं।

एक बहुत ऊंचे खानदान वाले सय्यद साहिब के संबंध में जो बड़े सभ्य और शहर के प्रतिष्ठित एवं प्रसिद्ध रईस हैं मान हानि करने वाला हो रहा है और उसे ख़ुदा तआला का भय क्यों होगा। परन्तु इण्डियन पैनल कोड (भारतीय दण्ड-विधान) की धारा 500 तथा अन्य ऐसे अपराधों से जिनमें इस प्रकार के अभद्र बकने वाले लोग प्राय: फंस जाया करते हैं उसे विचार करना चाहिए। हमने आदरणीय सय्यद साहिब की सेवा में

कई बार निवेदन किया है कि आप ऐसे अशिष्ट लोगों की दिल दुखाने वाली बातों को दिल में जगह न दें और सब्र से काम लें। जैसा कि पवित्र रसूल के खानदान वाले हमेशा से यही करते चले आए हैं और यही सय्यद साहिब के विशेषताओं से भरपूर व्यक्तित्व से भी आशा है क्योंकि वह बहुत सुशील, सभ्य तथा ज्ञान-विज्ञान से विभूषित एवं अंग्रेज़ी भाषा में महारत के कारण अंग्रेज़ी कार्यालयों के प्रतिष्ठित पदों पर कार्यरत रह चुके हैं। उनके स्वभाव में स्वाभाविक तौर पर उत्तेजना तो जैसे है ही नहीं परन्तु फिर भी चूंकि मकरवी के प्रकृति वाले व्यक्ति का क़लम का बुखार यदा-कदा अच्छे समाज के सभ्यजनों को भी साथ खींच लिया करता है। इसलिए हम अत्यन्त विनयपूर्वक सुशील मुंशी जीवनदास साहिब की सेवा में तथा अन्य आदरणीय आर्यों की सेवा में शुभेच्छा के तौर पर निवेदन करते हैं कि ऐसे सभ्य भाषी आर्य को ऐसी गन्दी गालियों की धुन से रोक दें। क्योंकि इसका परिणाम अच्छा नहीं। यदि हमारे व्यक्तित्व के बारे में कोई बुरा कहे या भला कहे, झूठ बनाकर कहे या धोखेबाज़ी करे, उसे अधिकार है क्योंकि हम सांसारिक न्यायालयों की ओर मुख करना नहीं चाहते और अपना तथा अपने गालियां देने वालों का निर्णय समस्त न्यायाधीशों के न्यायाधीश (ख़ुदा तआला) पर छोड़ते हैं। किन्तु उन नौजवानों को जो अपने प्रत्येक लेख में आर्यों की नवीन सभ्यता का चांद चढ़ा रहे हैं, अन्य धनवान, सुशील और प्रतिष्ठित मुसलमानों के अपमान एवं निरादर करने से डरना चाहिए ताकि किसी लपेटे में आकर बड़े घर की हवा न खानी पड़े। क्या बहस करना इसी का नाम है कि गंदी गालियां दे और अपशब्द बोलें। अत: प्रत्येक अभद्र बोलने वाले तथा पथ भ्रष्टों (गुमराहों) के लिए कानूनी भरपाई मौजूद है। भविष्य में जिसकी लाठी उसकी भेंस।

उसका कथन- 'सुर्मा चश्म आर्य' में न हमारी किसी पुस्तक का प्रमाण है, न खण्ड एवं अध्याय का पता।

मेरा कथन- कितना झूठ है। जिस व्यक्ति का झूठ इस सीमा तक पहुंच जाए तो कोई क्या कहे। भला जिस स्थिति में द्वितीय पक्ष के जगह-जगह इन्कार करने पर उसकी प्रमाणित पुस्तकों का खण्ड एवं पृष्ठ तक का पता बता दिया गया तो क्या अभी हमने पुस्तक का प्रमाण नहीं दिया? देखो पृष्ठ-73 सुर्मा चश्म आर्य। हां जिन बातों की बहस में स्वयं ही मानते गए, उनका प्रमाण देना बहस (शास्त्रार्थ) के नियमों के विरुद्ध तथा अकारण समय नष्ट करना था। यदि वह न मानते तो प्रमाण भी सुन लेते। किन्तु फिर भी प्रत्येक स्थान पर संक्षेप में यह कहा गया कि ये तुम्हारी आस्थाएं और सिद्धान्त हैं। अतः स्थान-स्थान पर लाला साहिब आरोपों को स्वीकार करते गए और कुछ चूंचरा न की। 'देखो सुर्मा चश्म आर्य' पृष्ठ-114,179,194,204,206। इसके अतिरिक्त यह स्मरण रहे कि हमने आर्यों पर जितने भी आरोप 'सुर्मा चश्म आर्य' पुस्तक में किए हैं उन सब को हमने उनके योग्य गुरू दयानंद जी की पुस्तक 'सत्यार्थ प्रकाश' से लिया है। तुम मुंह से तनिक यह बात निकाल कर तो देखो कि वे आस्थाएं हम आर्यों की नहीं हैं। फिर देखना कि कैसी खबर ली जाती है। अत्यन्त हठधर्मी है कि जिन आस्थाओं और सिद्धान्तों को स्वयं ही प्रत्येक घर तथा बाज़ार में प्रसिद्ध कर चुके हो अब उन से इधर-उधर भागना चाहते हो, किन्तु फंसी हुई चिड़िया अब भागे कहां? अब तो दयानन्द जी की जान (प्राण) को रोना चाहिए जो तुम्हें फंसा कर स्वयं अलग हो गए और वेद का अन्तिम निचोड़ ये छोड़ गए कि जैसे परमेश्वर स्वयंभू वैसे ही संसार का कण-कण स्वयंभू।

उसका कथन- सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड (क़ायनात) में जो ज्ञान और

कारीगरी प्रकट हो रही है सब पवित्र वेद के द्वारा है।

मेरा कथन- वेदों के ज्ञान और कारीगरी की वास्तविकता बहुत सी खुल गई तथा खुलती जा रही है। भला जिन वेदों ने इन विभिन्न प्रजातियों के बारे में अपनी फ़िलास्फ़ी यह बताई है कि ये समस्त वस्तुएं और समस्त रूहें (आत्माएं) यहां तक कि इस संसार का कण-कण स्वयंभू ही अपना प्रतिपालक है। कोई उसका स्रष्टा, पैदा करने वाला तथा वास्तविक सहारा नहीं। उनमें अन्य ज्ञान और कारीगरियां अवश्य होंगी। ऐसे गुणों से युक्त वेदों का अस्तित्व कलाहीन और ज्ञानहीन रह सकता है। यद्यपि वेदों के तत्वों की हमें स्वयं बहुत जानकारी है परन्तु आर्यों के योग्य पंडित दयानन्द जी ने जो सत्यार्थ प्रकाश में वैदिक-दर्शन के बारे में व्यक्त किया है पाठक उसी से उदाहरणतया अनुमान लगा सकते हैं कि आर्यों का पवित्र वेद किस उच्चकोटि का ग्रन्थ है।

अत: उन में से एक असीम काल तक आवागमन की निरन्तरता के विषय को ही देखो जिसमें वैदिक-दर्शन के अनुसार असीम काल तक आत्माओं का इसी संसार में बारम्बार आना और बड़े-बड़े विद्वान एवं तत्त्वज्ञानी ऋषि तथा देवता बनने के पश्चात् भी सर्वदा कुत्ते, बिल्ले, कीड़े-मकोड़े बनते रहना अनिवार्य है।★ इस दुर्भाग्य का वास्तविक कारण

★**फुट नोट-** यों तो आर्य लोग कहते हैं कि आवागमन अवश्य सच है और ऐसा अनन्तकाल तक होना अनिवार्य है कि मुक्ति के बाद भी उससे पीछा नहीं छूटता। परन्तु मूर्खता के कारण उन्हें ध्यान नहीं कि अनन्तकाल आवागमन मानने से समस्त पवित्र और आदरणीय लोगों का ऐसा अपमान होता है कि प्रत्येक के लिए स्वीकार करना पड़ता है कि वह असंख्य बार मुक्ति प्राप्त करने के पश्चात् भी कीड़े-मकोड़े बन चुके हैं और आगे भी बनते रहने की कोई सीमा नहीं। क्योंकि यह सब पशु, कुत्ते, बिल्ले, गधे, सुअर इत्यादि असंख्य बार मुक्ति प्राप्त कर चुके हैं, तो इस बात को अस्वीकार करने का कोई कारण नहीं कि किसी समय में यही पशु वेद के ऋषि या अवतार आदि भी रहे

यह है कि आत्माएं (रूहें) सीमित और परमेश्वर सृष्टि करने में असमर्थ, पूर्ण रूप से शक्तिहीन बल्कि कुछ भी नहीं। फिर यदि वही मुक्ति-प्राप्त बारम्बार मनुष्य, कुत्ता, बिल्ला न बनते रहें तो संसार कैसे चले। परन्तु इस प्रमाण को छुपा कर वेद की ओर से एक झूठा प्रमाण प्रस्तुत किया गया है कि मुक्ति-गृह में अनन्त काल तक रहने के लिए मनुष्यों के कर्म साथ नहीं देते और परमेश्वर इतना ही दे सकता है जितना कि उनका अधिकार है, कम या अधिक नहीं। क्या ख़ूब।

परन्तु यह भाषण इस स्थिति में कुछ चरितार्थ हो सकता है कि मुक्ति को जब ऐसी चीज़ समझा जाए कि जो नमक-मिर्च की भांति बिकती है और परमेश्वर को एक बनिया समझ लिया जाए जो उस चीज़ को मूल्य के अनुसार बेचता है या यह समझा जाए कि परमेश्वर का मुक्ति-गृह किराए पर चलता है। जितने दिनों का किराया दिया उतने दिन रहे। और फिर निकाले गए। अब हम आर्यों के महान सरदारों से पूछना चाहते हैं कि क्या मुक्ति की वास्तविकता में यही फ़िलास्फ़ी है जिसकी आप का पवित्र वेद शिक्षा दे रहा है? क्या वेद का यही ज्ञान और कारीगरी है, जिस पर गर्व किया जाता है। समस्त बुद्धिमान जानते हैं कि मुक्ति की जड़ और उसका मूल प्रकाश जिससे यह प्रकाश उत्पन्न होता है यही है

होंगे। अत: इस स्थिति में तो आर्यों को सहमत होना चाहिए कि संभव है कि वास्तव में ये सब उनके आदरणीय ही हों या फिर उनमें से कुछ तो अवश्य ही हों। स्पष्ट रहे कि हम ऐसे विचार को बहुत गन्दा और सम्मान से बहुत दूर समझते हैं कि अल्लाह तआला किसी पर इतना प्रसन्न होकर कि उसको मुक्ति देकर फिर किसी समय कुत्ता, बिल्ला, सुअर आदि बना दे। इसलिए हम आर्यों को केवल परामर्श के तौर पर कहते हैं कि यदि तुम अन्य अवतारों को गालियां देते और बुरा भला कहते हो। भले लोगो! तुम अपने वेद के ऋषियों के ऐसे अपमान से तो रुक जाओ। यदि प्रमाण के इच्छुक हो तो देखो योग्य पंडित दयानन्द जी की पुस्तक 'सत्यार्थ-प्रकाश' और 'आवागमन की बहस'।

कि अल्लाह के अतिरिक्त सब से संबंध तोड़ कर ख़ुदा तआला से ऐसा संबंध स्थापित हो जाए कि वह प्रेम एवं प्यार से प्रत्येक वस्तु पर बल्कि अपने प्राण (जान) से भी बढ़कर हो जाए और आराम, प्रेम, इच्छा तथा हार्दिक प्रसन्नता उसी से और उसी के साथ हो और जैसा कि वह अकेला अद्वितीय है ऐसा ही प्रेम की दृष्टि से अपनी महानता, तेज एवं सर्वांगपूर्ण विशेषताओं में अकेला अद्वितीय दिखाई दे। यह मुक्ति का प्रकाश है जो सच्चे प्रेमी के साथ इसी लोक से साथ जाता है और उसके शरीर में रूह की भांति प्रवेश करके अनन्तकाल तक उसके साथ रहता है। अत: जबकि मुक्ति प्राप्त व्यक्ति अनन्तकाल तक मुक्ति का यह अनिवार्य कारण अपने साथ रखता है तो फिर वेद की यह किस प्रकार की बुद्धिमत्ता है कि पूर्ण कारण होते हुए भी अर्थात् मुक्ति के प्रकाश के फल (मुक्ति) को उससे वापस ले लेना उचित समझता है। क्या कोई आर्य अपने वेदों की इस विचित्र फ़िलास्फी (दार्शनिकता) को हमें समझा सकता है।

फिर आवागमन में प्रमाण पर सत्यार्थ प्रकाश में क्या ही खूब तर्क लिखा गया कि जब बालक जन्म लेता है तो उसी समय अपनी मां का दूध पीने लगता है। कारण यह है कि उसे पूर्व जन्म का ध्यान रहता है। अत: इससे सिद्ध हो गया कि आवागमन सत्य है। आश्चर्य है कि ऐसी तीक्ष्ण बुद्धि वाले पंडित ने क्यों न माहवारी के रक्त को भी जो पेट के अन्दर बच्चे का आहार बनता है उसी पुनर्जन्म की याददाश्त पर प्रमाण ठहराया ताकि एक की बजाए दो प्रमाण मिल जाते।

अफ़सोस ये लोग आवागमन के जाल में फंस कर तथा यूनानियों के असंभव विचार में पड़ कर उसमें ऐसे लिप्त हुए हैं कि फिर किसी वस्तु, जिसका कारण मालूम नहीं, उसके वास्तविक कारण को तलाश करने की आदत ही न रही और वेदों के भटकाने वाले ज्ञान ने दर्शन

शास्त्रीय हज़ारों उत्तम और आकर्षक बिन्दुओं से उनका मुंह फेर कर निरन्तर आवागमन के गड्ढे में ही डाला। सम्पूर्ण विश्व के ज्ञान-भण्डार में से केवल यही एक ग़लत अक्षर उनके दिल में समा गया कि संसार का अस्तित्व और पृथ्वी तथा आकाश का प्रकट होना केवल मनुष्य के कर्मों का दुर्भाग्य है न कि किसी रचायिता की बुद्धिमत्ता से। यदि अशुभ और बुरे कर्म न हों तो फिर गाय-बैल आदि मनुष्य की आवश्यक वस्तुएं भी न हों बल्कि स्वयं मनुष्य में से स्त्री भी न हो। अत: इसी कारण ये लोग बुद्धिमत्तापूर्वक और नियमानुसार जांच-पड़ताल से सदैव मुंह फेर कर बल्कि इस विषय से पूर्णतया रिक्त, अपरिचित एवं मूर्ख रहकर अपने जीवन के तलाश करने योग्य रहस्यों तथा अन्य मानव जगत के अनन्त भेदों को यों ही पूर्व जन्म के कर्मों का दुर्भाग्य या उत्तम कार्यों पर चरितार्थ मान करके फिर भविष्य में इसमें कोई जिज्ञासा नहीं करते।

इस प्रकार एक झूठी और निराधार मान्यता को दृढ़ता से पकड़ने के कारण पूर्ण रूप से वास्तविक एवं सही सच्चाइयों को स्वीकार करने से वंचित रह जाते हैं। यद्यपि इस संसार का प्रत्येक गुण तथा वस्तु हज़ारों सूक्ष्म बुद्धिमत्ताओं, सूक्ष्म भेदों तथा वास्तविकताओं से भरी हुई है और स्रष्टा ने जो कुछ जिस-जिस स्थान पर रखा है बहुत ही उचित और बुद्धिमत्ता तथा विद्वता के हीरे–मोतियों से भरा हुआ है। परन्तु इन मूर्खों की दृष्टि में यह सब कुछ केवल पूर्व जन्मों के परिणाम की एक गड़बड़ है इससे अधिक कुछ नहीं और परमेश्वर ऐसा दुर्लभ बेकार और अलाभप्रद अस्तित्व है कि उसमें न तो कभी दया, कृपा और क्षमा देखने को मिलती है और न कभी उसको अपनी विशेषता तथा शक्ति–प्रदर्शन का अवसर प्राप्त हुआ और न कभी उसने अपने अन्दर शक्ति पाई कि अपनी ख़ुदाई के निशान प्रकट करे। बुद्धि तो पुकार–पुकार कर कहती है कि समस्त

वस्तुएं ख़ुदा तआला को प्राप्त करने का मार्ग बताने वाली और उसके उपकारों का एक संबंध स्थापित करने वाली हैं, परन्तु इन का वेद कहता है कि कुछ भी नहीं यह सब अकस्मात् है, जो पूर्व जन्मों के दुर्भाग्य से प्रकट हो रहा है अन्यथा एक बूंद पानी भी, जिसमें सैकड़ों कीटाणु हैं परमेश्वर की ओर से प्राप्त नहीं हुआ बल्कि स्वयं उन कीटाणुओं के पूर्व जन्म का अपना ही कुकर्म है जो पानी के पैदा होने और हमारी प्यास बुझाने का कारण बन गया है। अब जिनके परमेश्वर का यह हाल हो कि एक बूंद पानी पर भी अधिकार नहीं कि स्वयं पैदा कर सके तो क्या ऐसे निर्बल और कमज़ोर का नाम परमेश्वर रखना शर्म की बात है या नहीं? ऐसा अभागा परमेश्वर किस प्रशंसा या धन्यवाद या किस तारीफ और स्तुति के योग्य होगा जिसकी सम्पत्ति एक बूंद पानी भी नहीं। हाय अफ़सोस! इन लोगों ने ख़ुदा की शक्तियों, विशेषताओं तथा कारीगरियों को आवागमन और वेद के प्रेम में फंस कर धूल में मिला दिया है। केवल एक आवागमन के बुरे विचार से हज़ार सच्चाइयों का खून करते जाते हैं और दार्शनिकतापूर्ण एवं स्वाभाविक जांच-पड़ताल के नियमानुसार किसी वस्तु अथवा रोग का वास्तविक कारण ज्ञात नहीं करते।

यह नियम की बात है कि किसी अज्ञात विषय की वास्तविकता ज्ञात करने के लिए बहुत विस्तृत जांच-पड़ताल की जाती है और एक बिन्दु के लिए समस्त बिन्दुओं पर दृष्टि डालनी पड़ती है तथा वैज्ञानिक जांच-पड़ताल की दृष्टि से देखा जाता है कि यह विशेष बिन्दु जिसका कोई हाल या रोग जो विवादित विषय माना गया है क्या उसकी यह विशेषता जिसमें विवाद किया गया है उसी की रूह (आत्मा) तक सीमित है या एक सामान्य बात है जो अन्य कई बिन्दुओं में पाई जाती है। फिर यदि तलाश करते-करते उस सीमा तक पहुंच जाएं जो उस बिन्दु की

विवादित स्थिति या रोग का अन्य बिन्दुओं से विशिष्ट होना सिद्ध हो जाए या अन्य बिन्दु उसके साथी निकल आएं अर्थात् जैसी परिस्थिति हो उसके अनुसार कार्य किया जाता है और अकारण एक सामान्य को विशेष या विशेष को सामान्य नहीं बनाया जाता। परन्तु इस दार्शनिकतापूर्ण ढंग से दयानन्दी नीति अलग ही है। विचार करना चाहिए कि इस ख़ुदा के बन्दे ने आवागमन के संबंध में क्या अच्छा प्रमाण दिया है, जिसे प्रस्तुत करने के समय न तो यह सोचा कि यह जो दावा किया गया है कि तत्काल पैदा हुआ बच्चा अपनी मां की छाती की ओर अवश्य ही जाता है न कि किसी अन्य दिशा में। यह दावा वास्तव में सही है या ग़लत? और न यह विचार किया कि जैसे मेरा दावा सामान्य है जो तर्क प्रस्तुत करता हूं वह भी सामान्य है या नहीं। खैर यदि उसने न सोचा न समझा तो अब हम ही दयानन्दी तर्क-शास्त्र का नमूना प्रकट करने के लिए उसकी कलई खोल देते हैं। अत: स्पष्ट हो कि यह दावा कि जब बच्चा जन्म लेता है तो उसी समय अपनी मां का दूध पीने लगता है। वास्तव में यह दावा ही झूठा है, क्योंकि अनुभव से केवल इतना सिद्ध होता है कि बच्चा जीवित और जानदार (प्राणी) होने के कारण आहार चाहता है परन्तु यह हरगिज़ नहीं माना जा सकता कि बिना कारण मां के स्तन की ओर भागे। परन्तु यह स्पष्ट तौर पर सिद्ध है कि उस समय वह निर्मल स्वभाव का होता है और जिस काम पर लगा दिया जाए उसी पर लग जाता है तथा उसी को दृढ़तापूर्वक ग्रहण कर ले। तो उदाहरणतया यदि बच्चे को बत्ती या निपिल से दूध पिलाना आरंभ कर दें तो शीघ्र ही उसी प्रकार से पीना आरंभ कर देता है। फिर संभव नहीं कि सरलता से मां के स्तन की ओर मुंह भी करे। परन्तु शायद ही बड़े परिश्रम और कठिनाई के बाद पहली आदत को छोड़े और दूसरी आदत को ग्रहण करे। यह तो सच है कि

जन्म लेने के पश्चात् बच्चे को (भोजन) की आवश्यकता होती है, परन्तु वह इच्छा केवल भूख के कष्ट से पैदा होती है न कि किसी अन्य कारण से। प्रतिदिन के अनुभव इसका स्पष्ट प्रमाण देते हैं कि मनुष्य, पशु, किसी पक्षी या कीड़े-मकोड़े का जन्म लेने के पश्चात् अपने भोजन की ओर आकर्षित होना वास्तव में स्वाभाविक आकर्षण है जो महान दूरदर्शी ख़ुदा ने अपनी पूर्ण दूरदर्शिता के कारण प्रत्येक प्राणी में बल्कि भूमि से उगने वाले पेड़-पौधों जड़ पदार्थों के स्वभाव में रखा है ताकि वे स्वाभाविक तौर पर अपने उस भोजन के इच्छुक हों जो उनके अनुकूल हैं। इसी कारण प्रत्येक जीवन अपने तौर पर अपनी बनावट के ऊपर भोजन की ओर प्रेरित होता है। जिस प्रकार एक मनुष्य या पशु का बच्चा भोजन प्राप्त करना चाहता है इसी प्रकार पेड़-पौधों की जड़ें भी बीज बोए जाने की हालत से आगे क़दम रखती हैं और उगने तथा बढ़ने की शक्ति पाती हैं। अपने भोजन को जो कि पानी है अपनी ओर खींचना आरंभ कर देती हैं। वे जड़ें अपनी आकर्षण-शक्ति से दूर-दूर से पानी खींच लाती हैं। अतः अल्लाह की पूर्ण दूरदर्शिता से प्रत्येक प्राणी में पहले से ही भोजन प्राप्त करने की एक शक्ति रखी जाती है चाहे वह पत्थर हो या वृक्ष या मनुष्य या पशु-पक्षी। वास्तव में यह सब एक ही शक्ति की प्रेरणाओं से भोजन प्राप्त करने के लिए आकर्षित की जाती हैं। इस प्रश्न के उत्तर में कि क्यों ये चारों प्रकार की वस्तुएं भोजन की इच्छुक हैं, कोई अलग-अलग बात नहीं ताकि किसी जगह पूर्व जन्म की स्मृति (याददाश्त) और उसका विचार बना रहना समझा जाए और किसी स्थान पर कोई अन्य कारण बताया जाए बल्कि वास्तव में इन चारों वस्तुओं का भोजन के प्रति आकर्षित होने का एक ही कारण है अर्थात् स्वाभाविक शक्ति जो जन्म लेने के साथ ही उसमें पैदा हो जाती है। इसी की ओर इस पवित्र

आयत में संकेत है जो दूरदर्शितापूर्ण सच्चाइयों से भरी हुई है। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है-

أَعۡطٰی کُلَّ شَیۡءٍ خَلۡقَہٗ ثُمَّ ھَدٰی۔

(सूरह ताहा-51)

अर्थात् तुम्हारा वह ख़ुदा है जिसने प्रत्येक वस्तु को उसकी हालत के अनुसार जीवन दिया फिर भोजन आदि को प्राप्त करने के लिए जिस पर उसका जीवन निर्भर है उसके दिल में स्वयं इच्छा पैदा की यही वास्तविक सच्चाई है जिसे अल्लाह तआला ने एक व्यापक सिद्धान्त के तौर पर अपनी प्रिय पुस्तक में वर्णन कर दिया है। अज्ञानियों और मूर्खों में दृष्टि की विशालता नहीं होती। इसलिए वे केवल एक भाग को देख कर अपनी कुधारणा के अनुसार उसके लिए एक झूठी योजना बना लेते हैं तथा अन्य भागों को जो उसी के साथ हैं छोड़ देते हैं। ऐसी ही दयानन्दी दार्शनिकता (फ़िलास्फ़ी) है जो आंखे बन्द करके वेद के लिए बनाई गई है। भला कोई सोचे कि पूर्व जन्म की याददाश्त कहां से तथा किस प्रमाण से समझी गयी। क्या यह सच नहीं है कि हमेशा देखा जाता है और प्रतिदिन के अनुभव इस पर गवाही देते हैं कि जिन बच्चों को जन्म के पश्चात् बकरी के स्तन से लगाया जाए फिर वे किसी स्त्री के स्तन से दूध पीना नहीं चाहते। उदाहरणतया जिन बच्चों को निपिल पर लगाया जाए उनके लिए मां या बकरी का दूध पिलाना ऐसा ही कठिन है कि जैसे मौत है। हज़ार बहाने करो उस ओर मुंह भी नहीं करते। अब यदि दयानन्दी विचार से होता तो चाहिए था कि कोई बच्चा मां के स्तन के अतिरिक्त अन्य किसी प्रकार से दूध न पीता। अत: यह तुरन्त पैदा हुए बच्चों की कथित आदत आवागमन के असत्य होने का प्रमाण है न कि आवागमन के सिद्ध होने का इससे कोई प्रमाण पैदा न हो सके। अब दावे की विशेषता का वर्णन

तो हो चुका। दयानन्दी तर्क की हालत भी सुनिए। वह कहते हैं कि मां का दूध पीना यह पूर्ण जन्म का विचार है। मैं कहता हूं कि यदि वेदों का यह तर्क सच्चा होता तो फिर आवागमन का सिद्धान्त यह होना चाहिए था कि प्रत्येक प्राणी का बच्चा अपने पूर्व जन्म में भी उसी प्रजाति में से होता जिसमें अब पैदा हुआ है, क्योंकि हम देखते हैं कि मनुष्य का बच्चा पैदा होने के बाद दाना मांगता है, जोंक का बच्चा मिट्टी खाता है और मधुमक्खी का बच्चा मधु (शहद) से भोजन प्राप्त करता है। अत: यदि यह स्वाभाविक बात नहीं है बल्कि दयानन्द जी के कथनानुसार पूर्व जन्म का विचार बना हुआ है तो इससे अनिवार्य है कि मनुष्य का बच्चा अपने पूर्व जन्म में मनुष्य ही हो कुछ और न हो। इसी प्रकार यह भी अनिवार्य होता है कि मुर्गे का बच्चा अपने पूर्व जन्म में मुर्ग़ा ही हो और जोंक का बच्चा पूर्व जन्म में जोंक ही हो न कि कुछ और। मक्खी का बच्चा अपने पूर्व जन्म में मक्खी ही हो न कि कुछ और। क्योंकि ये समस्त विभिन्न प्रजातियों के जीवधारी पैदा होने के बाद उसी प्रकार का भोजन मांगते हैं जो उनकी प्रजाति के लिए निश्चित है। अब देखा वैदिक दार्शनिकता की कैसी क़लई खुल गई। अब यदि हम ऐसी दार्शनिकता (फ़िलास्फ़ी) को दूर से सलाम न करें तो और क्या करें? क्यों लाला साहिब? क्या ये वही वेदों के ज्ञान हैं जिनसे सम्पूर्ण संसार लाभान्वित हुआ है। आत्मा (रूह) का ओस की भांति पृथ्वी पर गिरना और फिर टुकड़े-टुकड़े होकर किसी घास-पात पर फैलना और फिर उसी से बच्चा पैदा होना जैसा कि पुस्तक 'सुर्मा चश्म आर्य' के पृष्ठ 73 में तथा सत्यार्थ प्रकाश के पृष्ठ 263 में स्पष्ट तौर पर वर्णन है। यह वेदों के द्वारा ही ज्ञान तथा कारीगरी के उपाय प्राप्त हुए हैं। आश्चर्य यह कि ऐसी बूटियों को पति वाली स्त्रियां ही खाती हैं। कभी कुंवारी या बांझ स्त्रियां या पुरुष नहीं खा लेते ताकि उन सब

को गर्भ ठहर जाए। ऐसी घास-पात को दयानन्द जी भी खा लेते तो एक तमाशा होता और वेदों की विशेषताएं ख़ूब प्रकट होतीं। बलिहारी जाएं ऐसे वेदों पर भला किस दार्शनिक या हकीम की बला को भी ख़बर थी कि रूह (आत्मा) भी टुकड़े-टुकड़े हो कर हरे-भरे खेतों में गिरा करती है और फिर वे समस्त टुकड़े कोई स्त्री खा जाती है उससे गर्भ ठहर जाता है। पुरुष को ऐसे आध्यात्मिक भोजन का कुछ भाग नहीं। यों ही बच्चों को बिना तर्क अपने पिताओं से स्वभाव आदि में आध्यात्मिक एकरूपता होती है। इससे बढ़ कर वेदों का विद्याओं का भण्डार होने पर और क्या तर्क हो। गौतम ऋषि जो वेदों के सत्य से पूर्णतः दूर तथा बाल्यावस्था के विचार समझता था। क्या ये ज्ञान की बातें उसको न मिलीं ताकि वह भी उन पर मुग्ध हो जाता (देखो बुद्ध शास्त्र अध्याय-2 सूत्र-1)

दयानन्द जी को भी मछली की भांति चाट कर अन्ततः यह कहना पड़ा कि अब मेरा विश्वास वेदों पर नहीं रहा। देखो अख़बार 'धर्म जीवन' 1886 ई०।

इस समय मुझे एक अन्य पंडित जी भी याद आ गए जिनका नाम खड़क सिंह है। यह महोदय वेदों के पक्ष में शास्त्रार्थ करने के लिए क़ादियान में आए और क़ादियान के आर्यों ने बहुत शोर मचाया कि हमारा पंडित ऐसा प्रकाण्ड विद्वान है कि उसे चारों वेद कण्ठस्थ हैं। फिर जब शास्त्रार्थ आरंभ हुआ तो पंडित जी की ऐसी बुरी गत हुई जिसका न कहना ही अच्छा है और वेद की सब विशेषताएं भूल गए। सांसारिक मोह के कारण इस्लाम स्वीकार तो न किया परन्तु क़ादियान से जाते ही वेद को सलाम (अलविदा) कह कर ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया और अपने भाषण में जो उन्होंने 'रियाज़े हिन्द प्रेस' और 'चश्म-ए-नूर' अमृतसर में प्रकाशित कराया है स्पष्ट रूप से यह इबारत लिखी है कि वेद ख़ुदा के

ज्ञान और सच्चाई से वंचित है। इसलिए वे ख़ुदा के वचन नहीं हो सकते तथा आर्यों के वेदों के ज्ञान, दर्शन और प्राचीन होने के बारे में विचार झूठे हैं। इस कमज़ोर नींव पर वह वर्तमान और अनन्तकाल के लिए अपनी आशाओं की इमारत उठाते हैं और इस टिमटिमाते हुए प्रकाश के साथ जीवन और मरण पर प्रसन्न हैं।

अन्ततः यदि हम इन समस्त विद्वानों की गवाहियां और स्वयं वेदों की ग़लत (दोष पूर्ण) दार्शनिकता (फ़िलास्फ़ी) से आंखे नीची करके स्वीकार भी कर लें कि यद्यपि वेद धार्मिक सच्चाइयों से खाली हैं तथा उनमें वाह्य दृष्टि से कोई अन्य ज्ञान या कारीगरी भी नहीं पाई जाती। किन्तु राजगीरी, तथा बढ़ईगीरी से संबंधित कारीगरी की कुछ विद्याएं उनकी गहराइयों में छुपी हुई हैं तो उससे कुछ प्रमाणित भी होगा तो यही प्रमाणित होगा कि वेद किसी लोहार या राजगीर के पुराने विचार हैं।

यह जो कहा जाता है कि हिन्दुओं के हाथ में जितने भौतिक विज्ञान संबंधी तिब्ब संबंधी विद्याएँ इत्यादि हैं वास्तव में ये सब वेद से ही निकली हैं। यह कथन वेदों के लिए सम्मान जनक नहीं बल्कि अपमानजनक एवं तिरस्कार का कारण है। क्योंकि यदि मान भी लिया जाए कि भारतीय विद्याओं का मूल तथा उद्गम वेद ही हैं तो फिर वे समस्त ग़लतियां जो आधुनिक प्रकाश की दार्शनिकता ने इन पुरानी विद्याओं में निकाली हैं वे सब अपमान के दाग़ के समान वेद के माथे पर लगेंगी। हम पाठकों को विश्वास दिलाते हैं कि वेदों में ख़ुदा के साथ भागीदार बनाने की शिक्षा के अतिरिक्त कोई मारिफ़त और बुद्धिमत्ता की बात नहीं। सर्व प्रथम अल्लाह की किताब की अपनी इसी ज़िम्मेदारी में परीक्षा की जाती है कि वह धार्मिक सच्चाइयों को जैसी कि उनकी आवश्यकता है स्पष्टता पूर्वक तथा व्यापक तौर पर अभिव्यक्त करे, न यह कि दावा तो करे रूहानी पथ-

प्रदर्शक होने का और फिर हार कर कहे कि यह तो नहीं परन्तु मुझे रेल का इंजन बनाना अवश्य आता है। भला यदि आर्यों को ख़ुदा तआला ने स्वाभिमान का कुछ भी तत्त्व दिया है तो पवित्र क़ुर्आन की इन दो आयतों की ही विषय-वस्तु अपने वेद से प्रमाण के तौर पर वेद का नाम और सूक्त आदि निकाल कर दिखाएं। अतः उन आयतों में से एक यह है:-

لَا تَسْجُدُوْا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِیْ خَلَقَهُنَّ

(हा मीम अस्सज्दह-38)

अर्थात् तुम न सूर्य की उपासना (इबादत) करो और न ही चन्द्रमा की बल्कि केवल उस अनश्वर अस्तित्व की उपासना करो जिसने इन समस्त आकाशीय और पार्थिव वस्तुओं को पैदा किया है। हम दावे से कहते हैं कि वेदों में इस सच्चाई की विषय-वस्तु हरगिज़ नहीं निकलेगी क्योंकि उन्होंने अपने परमेश्वर की दोनों टांगे तोड़ रखी हैं। न तो वह अपनी उपासना में अद्वितीय है और न ही अपने अनादि और स्वयंभू होने में।

दूसरी आयत यह है-

اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِی الْقُرْبٰی-

(अन्नहल-91)

अर्थात् अल्लाह का तुम्हें आदेश है कि तुम उससे और उसकी प्रजा से न्याय का व्यवहार करो अर्थात् अल्लाह के प्रति अपना कर्त्तव्य पूरा करो और यदि इससे बढ़ कर हो सके तो न्याय बल्कि उपकार करो अर्थात् कर्त्तव्यों से अधिक तथा ऐसी श्रद्धापूर्वक अल्लाह की उपासना करो कि जैसे तुम उसे देखते हो और यथायोग्य बल्कि उससे अधिक लोगों के साथ नर्मी और प्रेम करो। यदि इस से बढ़कर हो सके तो ऐसे तथा निस्स्वार्थ ख़ुदा की उपासना और अल्लाह की प्रजा की सेवा करो

कि जैसे कोई निकटतम संबंध की भावना से करता है।

उसका कथन- अधिकतर ईसाई और मुसलमान भी सहमत हैं कि सभी विद्याएं एवं कलाएं आर्यों से सम्पूर्ण विश्व में फ़ैली हैं।

मेरा कथन- सर्व प्रथम तो यह बात ही ग़लत है क्योंकि अंग्रेज़ इस बात पर सहमत हो चुके हैं कि इंगलिस्तान में विद्याओं और कलाओं का पौधा अरब के भव्य विद्यालयों से आया है। और दसवीं शताब्दी में जब यूरोप अंधकार में पड़ा हुआ था यूरोप वालों को घोर अंधकार से विद्याओं और कलाओं के प्रकाश में लाने वाले मुसलमान ही थे। (देखो जॉन डेविन पोर्ट साहिब की पुस्तक पृष्ठ-95)

ऐसा ही राय बहादुर डॉक्टर चेतन शाह साहिब ऑनरेरी सर्जन, डॉक्टर दत्तामल साहिब सिविल सर्जन पंजाब रिव्यू जिल्द-9 में लिखते हैं कि- यूरोप वालों को इससे इन्कार नहीं हो सकता कि सभी विद्याएं, दार्शनिक चिन्तन तथा चिकित्सा आदि उन तक अरबों के द्वारा पहुंची हैं। केमिस्ट्री अर्थात् रसायन विद्या को भी यूरोपीय लोगों ने इस्लामी साम्राज्य के उन्नत काल में अरबों से प्राप्त किया है। यद्यपि हिन्दुस्तानी चिकित्सा ने (जो आर्यों के अनुमान के अनुसार वेदों से ली गई है) जो हमारे अपने देश की चिकित्सा-प्रणाली है यूनानी और अंग्रेज़ी चिकित्सा प्रणाली से कोई अस्थायी वस्तु नहीं ली। परन्तु उसका यह अस्थायी रूप से न लेना उसके गर्व का कारण नहीं हो सकता क्योंकि उसमें उतनी ही कमियां और दोष भी शेष हैं। यह कमी इसलिए रह गयी क्योंकि प्रेस आदि न होने के कारण यूनानी विचार भारत और भारतीय विचार यूनान में कम पहुंच सके। दोनों डाक्टरों के कथन पूरे हुए। किन्तु मैं पूछता हूं यह कमी हिन्दुस्तानी चिकित्सा-प्रणाली में क्यों रह गई? वेदों से क्यों ठीक न कर लिया गया। अब देखना चाहिए कि यदि हम हिन्द की विद्याओं को जो

आर्य देश में आदिकाल से चली आ रही हैं जिनकी अब स्पष्ट ग़लतियां निकल रही हैं वेदों की ओर सम्बद्ध भी कर दें तो क्या इससे वेदों का सम्मान सिद्ध होता है या अपमान।

उसका कथन- मिर्ज़ा कला, धोखा और झूठ बोलने में अद्वितीय है। जिसकी ओर हिसाब करने के लिए पत्र लिखा गया को यह शिक्षा देता है कि तुमने यह झूठ बोलना है और ऐसा करना, वैसा करना।

मेरा कथन- इस आरोप की वास्तविकता केवल इतनी है कि अम्बाला छावनी में मैंने कई एक पत्र एक हिन्दू दुकानदार की ओर एक पुराने कर्ज़ के हिसाब का निपटारा करने के लिए लिखे थे जिसका यों ही लम्बे समय तक स्थगित पड़े रहना लाभप्रद नहीं था। उस दुकानदार को बुलाया था कि अब हिसाब पुराना हो गया है। तुम वही खाता साथ लाओ और जो कुछ हिसाब निकलता है ले जाओ और रसीद दे जाओ। यद्यपि ठीक-ठीक याद नहीं परन्तु अनुमान किया जाता है कि शायद उन पत्रों में से किसी पत्र में यह भी लिखा गया हो कि तुम हिसाब के लिए बुलाए जाने की चर्चा न करना। अब आरोप लगाने वाला बेईमान पेशा जिसने छुप कर लाला बिशनदास जिसकी ओर पत्र लिखा गया के सन्दूक से पत्र चुराए हैं। इस वास्तविक सच्चाई में हेर-फेर करके अपनी ओर से कुछ का कुछ तूफान खड़ा करके बात को कहीं ले जा कर आरोप लगाता है कि जैसे हमने यह छल-कपट किया और झूठ बोला तथा झूठ की प्रेरणा दी। अतः सर्वप्रथम तो हम आर्यों के सभ्य लोगों पर जिनको अपने समाज की प्रतिष्ठा और यश (नामवरी) का ध्यान है स्पष्ट करते हैं कि जिस अनुचित ढंग से ये पत्र प्राप्त किए गए हैं वह यह है कि लाला बिशनदास की दुकान पर एक केशों वाले आर्य ने (जो अब बाबा नानक साहिब से विमुख होकर दयानन्दी पंथ में सम्मिलित हो

गया है) एक-दो आर्य बदमाशों का भेद जानने की इच्छा और बहकाने से बैठना आरंभ किया। एक दिन बिशनदास इस दयानन्दी तांतिया भेल के भरोसे पर जैसा कि दुकानदारों का स्वभाव है अपनी दुकान खुली छोड़कर किसी कार्य के लिए बाज़ार में निकला। उसके जाने के साथ ही सिक्ख साहिब ने उसके सन्दूक पर हाथ मारा। संभवत: इस हाथ मारने से नीयत तो किसी और शिकार की होगी क्योंकि वह जानता था कि मालदार व्यक्ति है। परन्तु लाला बिशनदास का भाग्य अच्छा था कि उस जल्दी में उस आभूषण तक जो सन्दूक में पड़ा हुआ था हाथ न पहुंचा। केवल दो पत्र हाथ में आ गए जिनको उसके उन्हीं के साथ सलाह मशवरा करने वाले यारों ने जो एक ही सांचे के हैं बहुत सी बेईमानी और झूठ के साथ प्रकाशित कर दिया तथा शर्म और लज्जा से रिक्त होकर एक निराधार काट-छांट करके हम पर एक अनुचित आरोप लगाया और जिस बुरे काम को स्वयं किया उसकी ओर तनिक भी ध्यान न दिया। हम लाहौर के सम्माननीय आर्य समाज वालों को इस ओर ध्यान दिलाना चाहते हैं कि इन लोगों की बहुत जल्द ख़बर लें अन्यथा इस समाज में जिन अनुचित योजनाओं तथा बुरे विचारों की खिचड़ी पकती रहती है उसका परिणाम हरगिज़ अच्छा नहीं होगा। क्या इस बात की संभावना नहीं जिसने आज यह वारदात की कल इससे बढ़कर चांद चढ़ाएगा। क्या इन्हीं करतूतों से आर्य समाज प्रकाशमान हो जाएगा? क्या चोरों के सौ दिन के बाद एक दिन किसी साधू का नहीं आएगा। इसी वारदात को देखिए कि लाला बिशनदास ने अपनी सुशीलता से धैर्य धारण किया और मुकद्दमे को अदालत तक नहीं पहुंचाया, अन्यथा सिक्ख साहिब और उसके मित्रों को दूसरे के सन्दूक में हाथ डालने का अभी स्वाद मालूम हो जाता। हमारी जानकारी में तो यह मुक़द्दमा अब

भी दायर होने योग्य है। क्योंकि यद्यपि लाला बिशनदास के आभूषण आदि की कुछ हानि नहीं हुई। अच्छा हुआ। परन्तु पत्रों की चोरी भी अंग्रेज़ी प्रचलित क़ानून के अनुसार एक चोरी है जिसका दण्ड संभवत: तीन वर्ष तक का कारावास है। **चोरी किए हुए पत्रों के सामने आने से यह सिद्ध हो सकता है** कि उन पत्रों में कोई भी ऐसा पत्र नहीं था जो इस सिक्ख या इसके दूसरे मित्रों से कुछ संबंध रखता हो बल्कि वे केवल एक हिसाब से संबंधित पत्र थे जो केवल लाला बिशनदास से व्यक्तिगत संबंध रखते थे तथा उसके व्यक्तिगत मामलों से संबंधित थे, जिनका बिना आज्ञा खोलना भी एक अपराध था। अब इन्साफ़ का स्थान है कि जिन लोगों के अपने चरित्र का यह हाल हो कि चोरी तक वैध है वे हम पर कोई ऐतराज़ करने का प्रयास करें और ऐतराज़ भी क्या अच्छा कि बिशनदास को उससे सम्बद्ध बात को गुप्त रखने की शिक्षा दी जबकि किसी बुद्धिमान की यह राय नहीं हो सकती कि मनुष्य अपने सभी भेदों को सामान्य तौर पर प्रकट और उजागर कर दिया करे। तब उस का नाम सत्यवादी होगा अन्यथा नहीं। ध्यानपूर्वक देखना चाहिए कि जितने मामले राष्ट्रीय, घरेलू तथा स्वयं प्रत्येक मनुष्य के व्यक्तिगत होते हैं उनमें से किसी में भी यह बात नहीं है कि हर समय और हर स्थान पर उन के भेदों को खोलना हित में हो या न हो खोलने का नाम छल-कपट रखा जाए। ख़ुदा तआला ने दिल, जीभ आदि अंग मनुष्य को प्रदान करके उनके उचित प्रयोग के लिए उसे उत्तरदायी बनाया है और प्रत्येक बात की अच्छाई एवं विशेषता दिखाने के लिए पृथक-पृथक अवसर, स्थान और समय निर्धारित किए हैं। कोई आदत चाहे कैसी ही अच्छी हो परन्तु जब वह अनुचित स्थान, और अनुचित समय पर होगी तो उसकी समस्त अच्छाई और सुन्दरता मिट्टी में मिल

जाएगी। कोई लाभप्रद वस्तु अपने लाभ हरगिज़ प्रकट नहीं करेगी जब तक वह ठीक-ठीक अपने समय पर उपयोग में न लाई जाए। ख़ुदा तआला का वास्तविक आज्ञापालन और मानव जाति की सच्ची भलाई वही व्यक्ति कर सकता है जो समय के अनुसार कार्य करने वाला हो अन्यथा नहीं। उदाहरणतया एक व्यक्ति यद्यपि सत्यवादी है परन्तु अपनी सत्यता को बुद्धिमत्ता के साथ मिलाकर प्रयोग नहीं करता बल्कि लाठी की भांति मारता है। अभद्रतापूर्वक एक सज्जन स्वभाव व्यक्ति अनुचित स्थान पर प्रयोग में लाता है तो वह एक बुद्धिमान मनुष्य की दृष्टि में प्रशंसनीय कदापि नहीं ठहरता। ऐसे व्यक्ति को मूर्ख सत्यवादी कहेंगे न कि बुद्धिमान सत्यवादी। यदि कोई अन्धे को अन्धा कह कर पुकारे और फिर किसी के मना करने पर यह कहे कि मियां क्या मैं झूठ बोलता हूं तो उसे यही कहा जाएगा कि निस्सन्देह तू सत्यवादी है परन्तु मूर्ख और दुष्ट। क्योंकि जिस सत्य को व्यक्त करने की तुझे आवश्यकता ही नहीं उसे व्यक्त करना अनिवार्य समझता है और अपने भाई के दिल को कष्ट पहुंचाता है। इसी प्रकार नैतिक मामलों के मोतियों की गांठ इसी एक ही संबंध से बंधी हुई है कि प्रत्येक सदाचार यथासमय हो। कठोरता, कोमलता, क्षमा, प्रतिशोध, क्रोध, सहनशीलता, रोकना, दान करना सब समय से संबंध रखते हैं और उनकी सुन्दरता तथा अच्छाई भी तभी प्रकट होती है जब वे यथास्थान प्रयोग की जाएं। यही क़ुर्आनी दार्शनिकता (फ़िलास्फ़ी) है जिस पर सद्बुद्धि गवाही देती हैं।

अत: भले मानस आर्यों ने इस आरोप में हमारी निन्दा करनी चाही है वह पूर्ण रूप से उनकी नादानी और षड़यंत्र है। वे आजकल आरोप और इफ़्तिरा (बनाया हुआ झूठ) के पत्थरों से दूसरे को घायल करना चाहते हैं। परन्तु उन्हें स्मरण रखना चाहिए कि ये पत्थर उन्हीं पर पड़ेंगे

न कि दूसरों पर। कोई वस्तु ऐसी गुप्त जो अन्ततः प्रकट न हो तो यदि हम वास्तव में धोखे में हैं तो यही धोखा हमें तबाह करेगा परन्तु यदि हम सत्य पर हैं और वह जो हमारे दिल को देख रहा है वह इसमें कुछ धोखा नहीं पाता तो यदि आर्यों के पहले और आर्यों के पिछले, आर्यों के जीवित तथा मृत बल्कि समस्त पूर्वज और बाद में आने वाले विरोधी हमें नष्ट करने के लिए एकत्र हों तो हमें हरगिज़ नष्ट नहीं कर सकते जब तक कि हमारे हाथ से वह कार्य सम्पन्न न हो जाए जिसके लिए अल्लाह तआला ने हमें मामूर किया है। अतः आर्यों के बनाए हुए झूठ, झूठे आरोप तथा मारने की धमकियां सब तुच्छ और अप्रभावी (बेअसर) हैं जिनसे हम डरते नहीं। यदि उनका ईर्ष्या के कारण यह विचार हो कि लोग इनकी ओर क्यों आते हैं, उन्हें किसी उपाय से रोकना चाहिए। तो उन्हें समझना चाहिए कि लोग वास्तव में कुछ चीज़ ही नहीं और न हमारी लोगों पर दृष्टि है। एक ही है जो उन्हें खींच कर लाता है और साथ ही स्मरण रखना चाहिए कि हम कुधारणा रखने वालों से हरगिज़ नहीं डरते। यदि कुधारणा रखने वाले लोग इतने हो जाएं कि संसार में समा न सकें तो वे वास्तव में अपनी हानि करेंगे न कि हमारी। सच तो यह है कि हमारी दृष्टि में एक अल्लाह अथवा उसके विशुद्ध प्रेमियों के अतिरिक्त समस्त संसार में जितने लोग हैं यद्यपि वे बादशाह हैं या धनवान हैं, या मंत्री हैं या राजा हैं या नवाब हैं एक मरे हुए कीड़े के समान भी नहीं। हां हम अपने उपकारियों के कृतज्ञ हैं, इसी प्रकार बर्तानवी सरकार के भी, क्योंकि बड़ा कृतघ्न वह व्यक्ति है जो अपने उपकारी का कृतज्ञ (शुक्र गुज़ार) न हो।

अतः हे आर्यो! तुम ग़लती पर हो। निश्चित समझो कि तुम ग़लती पर हो। हमारा ख़ुदा हमारे साथ है और तुम हमारा कुछ भी बिगाड़ नहीं

सकते। यदि तुमने हमें धोखेबाज़ कहा तो उससे हम कुछ क्रोध भी नहीं करते, क्योंकि ऋग्वेद में तुम्हारे परमेश्वर का नाम भी धोखेबाज़ है और वह श्रुति यह है-

अत: जबकि इन्द्र परमेश्वर ने धोखे से वध किया तो क्या इससे बढ़कर और भी कोई धोखा होगा। दयानन्दी धोखों से भी आप अनभिज्ञ नहीं होंगे। सर्वप्रथम तो वह ऐसी पवित्र वाणी बोलते थे कि थोड़े से कष्ट से अपने सम्मानीय विरोधियों को कुत्ता बिल्ला और सुअर कह दिया करते थे। 'भ्रम-विच्छेदन' सितारा-ए-हिनद के उत्तर में बनाई है जैसे वह उनकी नैतिक अवस्था का दर्पण है, जिसमें राजा साहिब को किसी स्थान पर तो मूर्ख कहा है और किसी स्थान पर गंवार तथा किसी स्थान पर कुत्ते से उपमा दी है और सन्यासी बन कर बात-बात पर आग उगली है। देखो भारत मित्र जो 26 अगस्त 1880 ई० को प्रकाशित हुआ। हमने जो अपने किसी पिछले पृष्ठ पर इस पंडित के संबंध में 'गन्द' शब्द का प्रयोग किया है तो वह गन्दी गालियों के कारण है जिनका सर्वत्र प्रचार हो गया, यहां तक कि पंडित शिव नारायण साहिब को भी अपनी पत्रिका 'बिरादर हिन्द' सितम्बर-अक्टूबर 1880 ई० में यह प्रसिद्ध घटना लिखनी पड़ी। इसके अतिरिक्त यदि उनके धोखे का कुछ उदाहरण देखना हो तो अख़बार 'धर्म-जीवन' 13 मार्च 1887 ई० को देखना ही पर्याप्त है कि इन्होंने पहले मुंशी इन्दरमन के मुक़द्दमे के लिए हिन्दुओं में एक उत्तेजना देखकर और चन्दा देने के लिए आतुर पाकर भांप लिया कि तन्दूर तो बहुत गर्म है अच्छा हो कि इसमें हमारी भी कोई रोटी पक जाए। तब पंडित जी ने झटपट इन्दरमन को तार द्वारा सूचना दी कि मैं तुम्हारा दु:ख-दर्द का साथी हूं तुम्हें आना चाहिए। अत: वह गिरते-पड़ते उनके पास मेरठ में आया।

पंडित जी ने बातें बना कर अनुमति ले ली कि चन्दा हम जमा करवाते हैं। फिर तो रुपए पर रुपए आते देखकर सन्यासी जी की नीयत ऐसी बदल गई कि सारे रुपए निगलने चाहे, परन्तु मुंशी इन्दरमन भी तो एक पुराना खाऊ था जिसने ऐसे कई सन्यासी खा-पी छोड़े थे। उसने पंडित जी के हाव-भाव देखकर मुरादाबाद से पत्र लिखा कि तुमने मेरे नाम से हज़ारों रुपए एकत्र कर लिए है और मुझे एक कौड़ी तक देना नहीं चाहते तथा स्वयं हज़्म करना चाहते हो। अतः मैं आपके इस झूठे सन्यास की क़लई खोलने को तैयार हूं। इस पत्र को देख कर पंडित जी समझ गए कि अब यह हमारी बुरी तरह ख़बर लेगा। उसी समय कुछ राशि भेजकर उन्हें राज़ी करना चाहा परन्तु वह कब राज़ी होता था। उसने उसी समय एक लम्बा-चौड़ा विज्ञापन छपवाया जिसकी एक प्रति हमारे पास क़ादियान में भी आई थी। उस प्रति में भी सन्यासी जी की कार्रवाई का बहुत सा चर्चा था। पंडित दयानन्द ने उसका उत्तर प्रकाशित करवाया। उस ओर से एक ऐसा प्रत्युत्तर प्रकाशित हुआ जिससे पंडित जी के झूठ की समस्त वास्तविकता स्पष्ट हो गई। तत्पश्चात् पंडित जगन्नाथ ने दयानन्द के धोखों की एक पत्रिका प्रकाशित की, जिसको पढ़कर समस्त आर्य-समाज में एक हलचल मच गई। इसी बीच लोगों को यह भी खबर मिली कि यह व्यक्ति बे पेंदे का धार्मिक है। कभी आवागमन के पक्ष में कभी विपक्ष में, कभी वैष्णव सम्प्रदाय के हित में तो कभी शैव सम्प्रदाय के पक्ष में और कभी निरीश्वरवादियों का सहायक। अतः पेट की पीड़ा से कभी कुछ कभी कुछ, जैसा कि दिसम्बर 1883 ई० में 'धर्म जीवन' में इसका विवरण यह है कि इन बातों के सुनने से लोगों के दिल टूट गए और केवल मूर्ख लोग फंसे रह गए तथा शेष सब बुद्धिमान दयानन्दी बच कर निकल गए। ज्ञात

होता है कि दयानन्द की मृत्यु का कारण यही शर्मिन्दगियां थीं जो उसे अपनी करतूतों से एक ही समय में उठानी पड़ीं।

अब अपने सन्यासी जी से हमारी कार्रवाई की तुलना कर लेनी चाहिए। यदि हमने लाला बिशनदास को लिखा भी कि तुमने यह मामला गोपनीय रखना है तो क्या हमने यह भी लिखा था कि हमारा विचार है कि दूसरों के रुपए मार ले। यदि यही बात होती कि हम बाबू मुहम्मद साहिब और मुंशी अब्दुल हक़ साहिब को उनके रुपए देना नहीं चाहते थे तो उन्हें क्यों अम्बाला छावनी में रुपया लेने के लिए सन्देश दिया जाता। दोनों लोग ईमान से इस बात की गवाही दे सकते हैं कि सर्वप्रथम हमने बाबू मुहम्मद साहिब को मियां फ़तह ख़ान के द्वारा और शायद स्वयं भी अपने रुपए लेने के लिए कहा तो उन्होंने उत्तर दिया कि मेरा कोई क़र्ज़ा नहीं मैंने सब कुछ अनुदान के तौर पर दिया है। फिर मुंशी अब्दुल हक़ साहिब की सेवा में लिखा गया कि अब रुपए आते जाते हैं आप अपना क़र्ज़ पांच सौ रुपए ले लें। उन्होंने उत्तर भेजा कि मेरे कर्ज़ की आपको चिन्ता नहीं करनी चाहिए। आप उन्हीं रुपयों से 'सिराजे मुनीर' पुस्तक को प्रकाशित करें। हे आर्यो! अब तुम्हें थोड़ा शर्मिन्दा होना चाहिए कि यद्यपि हमने उसे अम्बाला छावनी में उन निष्कपट मित्रों को रुपए लेने के लिए कहा, परन्तु उन्होंने वह उत्तर दिए जो ऊपर लिखे हैं। इन्दरमन और दयानन्द भी परस्पर मित्र ही थे, परन्तु अन्त में जो गन्दगी निकली वह स्पष्ट है।

उसका कथन- बराहीन अहमदिया में जितने इल्हाम लिखे हैं वे सब कला और छल-कपट से बनाए गए हैं।

मेरा कथन- कला और छल-कपट तो दयानन्द की विशेषता है जो उसी के क़ौमी भाई इन्दरमन ने सिद्ध करके भी दिखा दी। फिर

उसकी शिक्षाओं से तुम लोगों की विशेषता जो चोरी करने से भी न डरे और बराहीन अहमदिया का नाम बराहीन अहमक़िया करके बार-बार लिखना यह फलहीन वेद की सभ्यता है। इन वेदों ने गालियों और बुरा भला कहने के अतिरिक्त और क्या सिखाया? जगह-जगह आदि से अन्त तक वेदों में यही श्रुतियां पाई जाती हैं कि हे इन्द्र! ऐसा कर कि हमारे शत्रु मर जाएं और हमेशा के लिए उनकी सम्पत्ति, उनका देश, उनकी गाएं, घोड़े और भूमि आदि सब हमें मिल जाएं। परन्तु इन्द्र की ख़ुदाई तो ख़ूब सिद्ध हुई कि एक ओर प्रार्थनाएं तो ये और दूसरी ओर शत्रुओं के नष्ट होने के स्थान पर हिन्दू लोग स्वयं ही तबाह होते गए। अत: लम्बे समय से यहूदियों की भांति दासता और दासों की भांति आदेश पालन करने के अतिरिक्त अन्य किसी स्थान पर इनका साम्राज्य शेष नहीं रहा। क्या इससे सिद्ध नहीं होता कि वेद के ऋषि ख़ुदा के इल्हामों से पूर्णत: रिक्त और ख़ुदा के सानिध्य से सर्वथा अनभिज्ञ थे, जिनकी हज़ारों प्रार्थनाओं का थोड़ा भी असर न हुआ बल्कि उल्टी पड़ गईं। इल्हामी प्रार्थना का स्वीकार न होना उस इल्हाम के झूठा होने की निशानी है और साथ ही ऐसा परमेश्वर प्रार्थना कैसे स्वीकार कर सकता है जिसके बारे में लिखा है कि वह सौम का रस पीने से जीवित तथा हृष्ठ-पुष्ट रहता है अन्यथा उसकी ख़ैर नहीं। देखो ऋग्वेद अध्याय 2 अष्टक-प्रथम। हमारे इल्हामों का नाम धोखा या बनाए जाने का दावा करना यह उस समय हिन्दुओं की सन्तान को शोभा नहीं देता कि जब वे हमारे बुलाने पर हमारे द्वार पर आ बैठते, परन्तु हम ने "सुर्मा चश्म आर्य" में चालीस दिवसीय विज्ञापन भी प्रकाशित करके देख लिया किसी हिन्दू ने कान तक नहीं हिलाया। विचार करना चाहिए कि जो व्यक्ति विज्ञापन भेज कर हर प्रकार के विरोधियों को परीक्षा के लिए बुलाता

है उसकी यह हिम्मत और बहादुरी किसी ऐसी बुनियाद पर हो सकती है जो पूर्णत: धोखा है? क्या जिसके इस्लाम के निमंत्रण और इल्हाम के दावों के पत्रों ने अमरीका★ तथा यूरोप के सुदूर देशों तक हलचल मचा दी है, क्या ऐसी दृढ़ता की नींव केवल बकवास का कूड़ा-कर्कट है? क्या सम्पूर्ण संसार के मुकाबले पर ऐसा दावा वह मक्कार भी कर सकता है जो अपने दिल में जानता है कि मैं झूठा हूं और ख़ुदा मेरे साथ नहीं? अफ़सोस! आर्यों की बुद्धि को धार्मिक पक्षपात ने ले लिया। द्वेष और आन्तरिक शत्रुता की धूल से उनकी आंखें जाती रहीं। अब इस प्रकाश के युग में वेद को ख़ुदा की वाणी बनाना चाहते हैं। नहीं जानते कि इन्द्र और अग्नि का युग एक लम्बे समय से बीत गया। कोई पुस्तक ख़ुदाई निशानों के बिना ख़ुदा तआला की वाणी कैसे बन सकती है और यदि ऐसा ही हो तो प्रत्येक व्यक्ति उठकर पुस्तक बना दे और उसका नाम ख़ुदा की वाणी रख ले। ख़ुदा तआला की वाणी

★नोट- अमरीका से अभी हमारे नाम एक पत्र आया है जिसकी विषय वस्तु का सारांश निम्नलिखित है- महोदय एक ताज़ा प्रति समाचार पत्र स्कॉट साहिब हम अवस्ती में मैंने आपका पत्र पढ़ा जिसमें आपने उनको सच दिखाने के लिए निमंत्रण दिया है। इसलिए मुझे इस प्रेरणा की इच्छा हुई। मैंने बौद्ध धर्म और ब्राह्मण मत (हिन्दू धर्म) के विषय में बहुत कुछ पढ़ा है और कुछ ज़रतुश्त एवं कन्फ्यूशियस की शिक्षाओं का अध्ययन भी किया है परन्तु मुहम्मद साहिब के विषय में ऐसे असमंजस में रहा हूं और अब भी हूं कि यद्यपि मैं ईसाई समूह के एक गिर्जा का प्रमुख हूं किन्तु नित्य तथा दैनिक सदुपदेश के अतिरिक्त अन्य कुछ सिखाने के योग्य नहीं। अत: मैं सत्य को जानने का इच्छुक हूं और आपसे निष्कपट प्रेम-भाव रखता हूं।

आपका सेवक- अलेग्ज़ेन्डर आरोब

3021, ईस्टर्न एवेन्यू सेन्ट लुइस, मसूरी

संयुक्त राज्य अमरीका।

वही है जो अपने अन्दर ख़ुदाई शक्तियां, लाभ विशेषताएं रखती हो। अत: आओ, जिसे देखना हो देख ले। वह पवित्र क़ुर्आन है जिसकी सैकड़ों आध्यात्मिक (रूहानी) विशेषताओं में से एक यह भी है कि उसके सच्चे अनुयायी ज़िल्ली (प्रतिबिम्ब) तौर पर इल्हाम पाते हैं और उसे मृत्यु तक कृपा और लाभ मिलता रहता है। अत: यह ख़ाकसार उसी वास्तविक सूर्य से लाभान्वित और उसी मारिफ़त के दरिया से बूंदें उठाने वाला है। अब यह हिन्दू प्रकाशमान दृष्टि वाला जो इस ख़ुदाई कारोबार का नाम धोखा रख रहा है, इसके उत्तर में लिखा जाता है कि यद्यपि अब हमें फ़ुर्सत नहीं कि मुकाबले में आज़मायश के लिए प्रतिदिन नए-नए विज्ञापन जारी करें। हमें स्वयं पुस्तक 'सिराजे मुनीर' ने इन पृथक-पृथक कार्रवाइयों से सन्तुष्ट कर दिया है, परन्तु इस चोर व्यक्ति की धोखेबाज़ियों का सुधार करना नितान्त आवश्यक है जो एक लम्बे समय से अपना मुंह बुर्के में छुपा कर कभी हमें अपने विज्ञापनों में गालियां देता है, कभी हम पर आरोप लगाता है और धोखेबाज़ों से हमारा संबंध बताता है और कभी हमें दरिद्र और निर्धन बता कर यह कहता है कि मुकाबले के लिए किस के पास जाएं, वह तो कुछ भी सम्पत्ति नहीं रखता हमें क्या देगा। कभी हमें मौत की धमकी देता है और अपने विज्ञापनों में 27, जुलाई 1886 ई० से तीन वर्ष तक हमारे जीवन का अन्त बताता है। इसी प्रकार एक बेरिंग पत्र में भी जो किसी अपरिचित के हाथ से लिखवाया गया है। जान से मार देने के लिए हमें डराता है। अत: हम इस प्रार्थना के बाद कि हे अल्लाह! तू उसका और हमारा फैसला कर। उसके नाम यह घोषणा जारी करते हैं और मुख्य रूप से उसी को परीक्षा के लिए बुलाते हैं कि अब बुर्के से मुंह निकाल कर हमारे सामने आए और अपना नाम और निशान बताए। पहले कुछ

सामाचार पत्रों में निम्नलिखित शर्तों के अनुसार स्वयं उसका परीक्षा के लिए हमारे पास आना प्रकाशित करके और लिखित प्रस्ताव के बाद चालीस दिन तक परीक्षा के लिए हमारे पास रहे। यदि इस समय-सीमा तक कोई ऐसी इल्हामी भविष्यवाणी प्रकट हो गई जिसके मुकाबले से वह असमर्थ रह जाए तो उसी स्थान पर अपनी लम्बी चोटी कटा कर और बेकार के जनेऊ से संबंध तोड़ कर उस पवित्र जमाअत में सम्मिलित हो जाए जो ला इलाहा इल्लल्लाह की तौहीद (एकेश्वरवाद) से मुहम्मद रसूलुल्लाह के पूर्ण मार्ग-दर्शन से शिर्क और बिदअत के जंगलों में भटके हुए लोगों को सन्मार्ग के राजमार्ग पर लाते जाते हैं। फिर देखे कि असीम क़ुदरतों और शक्तियों के मालिक ने किस प्रकार एक पल में उसे आन्तरिक गन्दगियों से साफ़ कर दिया है और कैसे एक गन्दगी से भरा हुआ कपड़ा एक स्वच्छ और पवित्र रूप में आ गया। परन्तु यदि कोई भविष्यवाणी इस चालीस दिन की समय-सीमा में प्रकट न हो तो चालीस दिन की क्षतिपूर्ति (भरपाई) में सौ रुपए या जितने रुपए अंग्रेज़ी सरकार में मासिक वेतन पा चुका हो उसका दो गुना हम से ले ले और फिर एक उचित कारण के साथ सम्पूर्ण विश्व में हमारे बारे में घोषणा करा दे कि परीक्षा के बाद मैंने उसे धोखेबाज़ और झूठा पाया। 1 अप्रैल 1887 ई० से मई 1887 ई० के अन्त तक उसे छूट है। यह भी स्पष्ट रहे कि उसकी सन्तुष्टि के लिए रुपया किसी ब्रह्म समाजी के पास रखा जाएगा जो दोनों पक्षों के लिए मध्यस्थ के रूप में है। वह ब्रह्म समाजी हमारे झूठा निकलने की स्थिति में स्वयं अपने अधिकार से जो उनको विशेष पत्र द्वारा दिया जाएगा उस विजयी आर्य को दे देंगे। यदि अब भी रुपए लेने में कोई आशंका हो तो उस उत्तम उपाय के अनुसार जो आर्य लोग समझें पालन किया जाएगा।

परन्तु रुपया बहरहाल एक प्रतिष्ठित ब्रह्म समाजी मध्यस्थ के पास रहेगा। अत: हम बल देकर उस आर्य सज्जन को जिसने हमारा नाम धोखेबाज़ रखा, अल्लाह के इल्हामों को सर्वथा छल बताया, पुराने वहशी आर्यों के समान हमें गन्दी गालियां दीं और जान से मारने की धमकियां दीं ऊंची आवाज़ से मार्ग-दर्शन करते हैं कि हमारे बारे में तो उसने गाली-गलौज में उसके अन्दर जहां तक गन्दगी भरी हुई थी सब निकाली, परन्तु यदि वह वैध सन्तान है तो अब परीक्षा के लिए तथाकथित शर्तों के अनुसार सीधा हमारे सामने आ जाए ताकि हम भी देख लें कि इस फ़रिश्ता स्वभाव तथा पवित्र क़लाम वाले का रूप एवं शक्ल कैसी है। यदि मई 1887 ई० के अन्त तक मुकाबले पर न आया और न अपने जन्मजात स्वभाव को छोड़ा तो देखो! मैं वास्तविक गवाह (अल्लाह) के बाद पृथ्वी तथा आकाश और इस पुस्तक के सभी पाठकों को गवाह बनाकर ऐसे डींगे मारने वाले तथा बहादुर को जो वास्तव में हानि पहुंचाने, लूट मार करने तथा अत्याचार करने की अवस्था में इसी योग्य है निम्नलिखित इनाम देता हूं ताकि मैं देखूं कि अब वह बिल से निकल कर बाहर आता है या इस निम्नलिखित इनाम को भी निगल जाता है। वह इनाम उसके न आने और भाग जाने की स्थिति में यह है-

1. लानत
2. लानत
3. लानत
4. लानत
5. लानत
6. लानत
7. लानत

8. लानत

9. लानत

10. लानत

ये दस पूरी हो गईं।

अब हम इस अवसर पर कुछ आर्यों के नाम लिखते हैं जो हमारी कुछ इल्हामी भविष्यवाणियों के गवाह हैं। ये तो स्पष्ट है कि आजकल एक पक्षपात की ज्वाला भड़कने के कारण जो आर्यों को पैरों से लेकर मास्तिष्क तक जला रही है सहसा इस क़ौम की हालत ऐसी बदल गयी है कि यदि इनमें कुछ सज्जन लोग भी हैं तो वे भी खड़पंचों के शोर एवं कोलाहल के डर से दबे बैठे हैं, क्योंकि ईमान की शक्ति तो है ही नहीं जो इन बकवास करने वालों की ख़री-खोटी बातों की कुछ परवाह न करें बल्कि एक ही धमकी से उदाहरणतया केवल इतना कह देने से कि बिरादरी से निकाले जाओगे, लड़के-लड़कियों के विवाह नहीं होंगे, रिश्ते-नाते सब टूट जाएंगे। लाला लोगों के रंग लाल और शरीर कांपने लगते हैं और फिर तो ऐसी दशा हो जाती है कि किसी मुसलमान पर जितने आरोप और लांछन लगाना चाहें या जो कुछ झूठे आरोप लगाने वालों की ओर से विज्ञापन इत्यादि के प्रकाशित करने का सुझाव हो तो तुरन्त हस्ताक्षर करने के लिए तैयार हो जाते हैं। इसी प्रकार से आजकल क़ादियान के हिन्दू विज्ञापन जारी कर रहे हैं।

ایں نہ از خود ہست جوش جان شان
دست کھڑپنچاں کشد دامانِ شان

अत: ये लोग जो सर्वथा झूठ बना कर विज्ञापन जारी करते रहते हैं और फिर उनमें अधिकतर अभद्र शब्दों का इस्तेमाल करते तथा गालियां भी देते हैं तो वास्तव में उसका यही कारण है कि वे अपने बेकार

जमादारों पर सिद्ध करना चाहते हैं कि हम सच्चे दिल से मुसलमानों के शत्रु हैं और ऐसे दृढ़ हैं कि प्राण जाए, धर्म जाए, ईमान जाए परन्तु बाज़ी न जाए। अत: अब इसी के अनुसार समस्त कार्रवाई होती है। लाला शरमपत मलावामल क़ादियान के निवासियों की ओर से जो एक विज्ञापन प्रकाशित हुआ था कि हम मिर्ज़ा को धेखेबाज़ जानते हैं, अल्लाह की ओर से इल्हाम पाने वाला नहीं समझते। वह भी वास्तव में क़ौमी देवी को भेंट चढ़ाई गई थी अन्यथा जो वास्तविकता है उसको तो उनका दिल ही जानता है। परन्तु इसी विचार से जिसका हम ऊपर वर्णन कर आए हैं इन दोनों आर्यों ने भी झूठ गढ़ने पर कमर कस ली है और यह विचार पूर्णतया भुला दिया है कि हमारे ऊपर ख़ुदा भी है। अत: ख़ुदा का प्रकृति का नियम एक प्रतापी के लिए जैसे मित्रों को चाहता है वैसे ही शत्रुओं को भी। इसलिए हम इन शत्रुओं के होने को भी बुद्धिमत्ता से खाली नहीं समझते, क्योंकि वास्तविक शमा (दीपक) के लिए परवानों का होना भी आवश्यक है। सूर्य इतनी ऊंचाई, इतनी शक्ति और इतनी किरणों के होने पर भी शत्रुओं से सुरक्षित नहीं और शत्रु भी वही जो वास्तव में उसी के लाए हुए तथा हाथ से पाले हुए हैं। एक ओर बादल उसका शत्रु है जो उसके प्रकाशमान मुख पर अपनी काली चादर का पर्दा डालना चाहता है तथा एक ओर धूल उससे शत्रुता कर रही है जो उसके स्वच्छ चेहरे पर धब्बा लगाना चाहती है, परन्तु सूर्य उन्हें अपने प्रकाशमान तेज़ से कहता है कि हे बादल! तू क्यों इतना ऊंचा होता है? तू शीघ्र ही बूंद-बूंद हो कर नम्रता के साथ धरती पर गिरेगा और हे धूल! तू उसके साथ ही समाप्त हो जाएगी। अत: उपरोक्त तथा कथित पक्षपात की भावना से यह तो हम जानते हैं कि आजकल आर्यों के संयुक्त जोश ने जो मरणासन्न रोगी के पुन: होश में आने की

भांति अन्तिम समय में उनमें पैदा हो गया है अनुचित तौर पर उन्हें चतुर और निडर कर रखा है, जिसके कारण वे अपने परमेश्वर के परमेश्वर को ही छोड़ते जाते हैं। सत्य बोलने तथा लज्जा से भी ख़ाली हो बैठे हैं, परन्तु चूंकि सच्चाई एक ऐसी वस्तु है जो किसी न किसी यत्न से अपना प्रकाशमान चेहरा दिखा ही देती है। अत: हमें भी विचार करते-करते चोर पकड़ने का एक उपाय सूझ गया और वह यह है कि इसी पुस्तक में भविष्यवाणियों की एक ऐसी सूची जिनके आर्य लोग साक्षी (गवाह) हैं लिखी जाए। इस प्रकार कि सर्वप्रथम क्रम संख्या फिर आर्य का नाम फिर प्रत्येक नाम के सामने अलग-अलग उन भविष्यवाणियों का विवरण लिखा जाए जिनके घटित होने का गवाह वह आर्य हो जिसका मुक़ाबले में नाम लिखा हो और फिर ऐसे नामों के अनुसार नक्शे के प्रकाशित होने के बाद जो अभी लिखा जाएगा क़ादियान के आर्यों पर जो विद्रोह फैलाने के मूल कारण हैं अनिवार्य होगा कि यदि वे वास्तव में हमें धोखेबाज़ समझते हैं तो इसी क़ादियान में एक सार्वजनिक सभा में एक ऐसी क़सम खाकर, जो प्रत्येक गवाही के नीचे लिखी जाएगी इन इल्हामों और भविष्यवाणियों के बारे में अनभिज्ञता प्रकट करे तब हम भी उन का पीछा छोड़ देंगे और उस सर्वशक्तिमान (ख़ुदा) के हवाले कर देंगे जो झूठे को बिना दण्ड नहीं छोड़ता और अपमान पूर्वक अपने मालिक का नाम लेने वाले को ऐसा ही अपमानित करता है जैसे कि वह अल्लाह तआला की झूठी क़सम खाकर उस प्रतापी के सम्मान की कुछ परवाह नहीं करता। परन्तु यदि अब भी आर्यों ने यह स्पष्ट निर्णय न किया और केवल धोखेबाज़ी की आड़ में दूर से तीर मारते रहे तथा घर में कुछ और बाहर कुछ और, अख़बारों, विज्ञापनों में कुछ और तथा दूसरे लोगों के पास कुछ और कहते रहे तो हे पाठको! आप लोग समझ

जाएं कि यही इनकी हठधर्मी और झूठा होने की निशानी है। अतः इस जल्से की हर हाल में आवश्यकता है ताकि हम भी देख लें कि सच का पालन करना और झूठ को त्यागना उनमें कहां तक पाया जाता है। स्पष्ट रहे कि हमने जितने इल्हाम नीचे लिखे हैं यह केवल उदाहरण के तौर पर लिखे गए हैं और बहुत सी इल्हामी भविष्यवाणियां जिनके यही आर्य लोग और उनके अन्य भाई गवाह हैं जो लम्बाई के डर से छोड़ दी गई हैं, किन्तु जल्से के आयोजना के समय सब का वर्णन होगा।

خوش بود گر محک تجربہ آید بمیاں
تاسیہ روئے شود ہر کہ دروغش باشد

अब कुछ इल्हामी भविष्यवाणियां उदाहरण के तौर पर निम्नलिखित हैं-

संख्या	नाम आर्य	किस इल्हाम या क़श्फ का गवाह है
1.	केशधारी आर्य भाई किशन सिंह निवासी क़ादियान	मुहम्मद हयात खां जज का उस अपराध से बरी हो जाना, जिसमें वह गिरफ्तार होकर बुरे ढंग से सरकार की यातनाएं सहन करके एक लम्बे समय तक पड़ा रहा। एक अनुमान से बहुत दूर की बात थी। अतः मैंने उन दिनों में उसके लिए बहुत दुआ की, क्योंकि इस खानदान से उसका निष्कपटतापूर्ण संबंध था। अतः ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से मुझ पर उसका परिणाम स्पष्ट हो गया और मैंने

संख्या	नाम आर्य	किस इल्हाम या क़श्फ का गवाह है
		इस घटना से लगभग पांच या छ: माह पूर्व अनुमानत: साठ या सत्तर लोग हिन्दुओं और मुसलमानों में से और साथ ही उस आर्य को उसके बरी होने के परिणाम की ऐसी विकट परिस्थिति में सूचना दे दी जबकि हयात ख़ान के बारे में भयानक अफ़वाहें उड़ रही थीं, यहां तक कि कुछ को उसके फांसी मिल जाने का भय था। अत: यदि इस गवाह के अनुसार यह बयान सही नहीं है तो उसको चाहिए कि निर्धारित जल्से में इस प्रकार क़सम खाए कि मैं अपने परमेश्वर को साक्षी मानकर सच्चे दिल से उसकी क़सम खाता हूं कि यह भविष्यवाणी मुझे बिल्कुल नहीं बताई गई और यदि बताई गई है और मैंने झूठ बोला है तो हे सर्वशक्तिमान परमेश्वर मुझ पर तथा मेरे परिवार पर किसी पीड़ादायक मार के द्वारा अपनी चेतावनी भेज दे।
2.	लाला मलावामल खत्री निवासी क़ादियान	मलावामल को टी-बी (तपेदिक़) का रोग हो गया। जब उसकी हालत गंभीर हो गई तो उसके लिए दुआ की गई। इल्हाम हुआ- قُلْنَا يَا نَارُ كُوْنِيْ بَرْدًا وَّسَلَامًا अर्थात् हे तप की आग ठंडी हो जा। फिर स्वप्न में दिखाया कि मैंने उसको क़ब्र से

संख्या	नाम आर्य	किस इल्हाम या क़श्फ का गवाह है
	वह आर्य	निकाल लिया है। ये इल्हाम और स्वप्न दोनों उस घटना से पहले बताए गए। अत: कुछ सप्ताह के बाद वह स्वस्थ हो गया। फिर एक दिन प्रात: काल यह इल्हाम हुआ कि आज अर्बाब लश्कर ख़ान के परिजनों में से किसी का रुपया आएगा। परीक्षा करने के लिए यही आर्य साहिब डाकख़ाना में गए और दस रुपए आने की सूचना लाए जो लश्कर ख़ान के बेटे अर्बाब सरवर ख़ान ने भेजे थे। यदि यह बात सच नहीं है तो मलावामल को चाहिए कि निर्धारित जल्से में इस प्रकार क़सम खाए कि मैं अपने परमेश्वर को साक्षी मानकर सच्चे दिल से उसकी क़सम ख़ाता हूं कि ये दोनों प्रकार की भविष्वाणियां कदापि मुझे नहीं बताई गईं और यदि बताई गईं हों और मैंने झूठ बोला है तो हे सर्वशक्तिमान परमेश्वर! मुझ पर और मेरे परिवार पर किसी पीड़ादायक मार से अपनी चेतावनी भेज दे। स्पष्ट रहे कि मलावामल ने अपने 14 अगस्त 1885 ई० के पत्र में जो मीर अब्बास अली साहिब की ओर लिखा था भी उसमें इन दोनों भविष्यवाणियों की सच्चाई का इक़रार कर लिया है जो हमारे पास मौजूद है।

संख्या	नाम आर्य	किस इल्हाम या क़श्फ का गवाह है
3.	लाला शरमपत खत्री निवासी क़ादियान	लाला शरमपत राय का भाई किसी फ़ौजदारी मुक़द्दमे में पकड़ा गया था। चीफ़ कोर्ट अपील थी। लाला शरमपत ने दुआ के लिए कहा। अतः कई बार दुआ की गई। अन्ततः में दुआ स्वीकार होकर अन्तर्यामी ख़ुदा की ओर से प्रकट किया गया कि मिस्ल चीफ़ कोर्ट से दोबारा छान-बीन के लिए वापस आएगी और फिर छोड़ दिया जाएगा। परन्तु उसका दूसरा ब्राह्मण मित्र जिसका नाम खुशहाल है बरी नहीं होगा जब तक पूरा-पूरा दण्ड न भुगत ले। अतः यह ख़बर घटना से पूर्व ठीक भय एवं ख़तरे के समय लाला शरमपत को बताई गई। फिर जब पूरी हुई तो एक पत्र द्वारा उसे याद दिलाया गया तो उसने उत्तर लिखकर भेजा कि आप पर यह परिणाम इसलिए प्रकट किया गया है क्योंकि आप नेक पुरुष हैं। (2) दूसरे दिलीप सिंह के बारे में घटना से पूर्व बताया गया था कि मुझे कश्फ़ी तौर पर ज्ञात हुआ है कि पंजाब आना उसके भाग्य में नहीं। या तो मरेगा या अपमानित होगा और अपने प्रयोजन में असफल रहेगा। (3) पंडित दयानन्द के बारे में उसकी मृत्यु

संख्या	नाम आर्य	किस इल्हाम या क़श्फ का गवाह है
	वही आर्य	से दो माह पूर्व लाला शरमपत को सूचना दी गई कि अब वह अति शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होगा बल्कि कश्फ़ी अवस्था में मैंने उसको मुर्दा पाया। (4) एक अपने ज़मींदारी मुक़द्दमे के बारे में जिन भागीदारों के साथ दायर था और कई वर्ष तक विभिन्न अदालतों में होकर चीफ़ कोर्ट तक पहुंचा। मुझे दुआ करने के बाद यह इल्हाम हुआ था اُجیب کلّ دُعائك اِلّا فی شرکائك अर्थात् मैं तेरी सारी दुआएं स्वीकार करूंगा जो तूने कीं परन्तु भागीदारों के बारे में नहीं। अन्त में इस मुक़द्दमे में भागीदारों की विजय हुई। अन्तत: में तो भागीदार अदालतों में पराजित रहे परन्तु अन्त में चीफ़ कोर्ट में पूर्णत: विजयी हो गए। संभवत: पचास से अधिक लोगों को इस इल्हाम की ख़बर होगी और उन सब में से यह लाला साहिब भी हैं जिनको मुक़द्दमों के आरंभ में ही यह इल्हाम सुना दिया गया था। (5) एक बार मस्जिद में अस्र की नमाज़ के समय यह इल्हाम हुआ कि मेरी इच्छा है कि तुम्हारा एक और विवाह करूं। यह

संख्या	नाम आर्य	किस इल्हाम या क़श्फ का गवाह है
		सब मैं स्वयं करूंगा और तुम्हें किसी बात का कष्ट नहीं होगा। इसमें यह एक फारसी की भी पंक्ति है। ہر چہ باید نو عرو سے راہماں سامان کنم وآنچہ مطلوب شما باشد عطائے آں کنم और इल्हामों में यह भी प्रकट किया गया कि वे क़ौम के सज्जन और उच्च-वंशीय होंगे। अत: एक इल्हाम में था कि ख़ुदा ने तुम्हें अच्छे वंश में पैदा किया है और फिर अच्छे वंश से दामादी का संबंध प्रदान किया है। अत: घटना से पूर्व ये समस्त इल्हाम लाला शरमपत राय को सुना दिए गए। उसे भली भांति ज्ञात है कि बिना तलाश और बिना परिश्रम के केवल ख़ुदा तआला की ओर से अवसर निकल आया अर्थात् बहुत ही कुलीन, सज्जन तथा श्रेष्ठ ख़ानदान सय्यद सनदी जो ख़्वाजा मीर दर्द साहिब देहलवी स्वर्गवासी के रोशन ख़ानदान की यादगार हैं जिनके ऊंचे ख़ानदान को देखकर कुछ नवाबों ने उन्हें लड़कियां दी थीं। उदहारणतया नवाब अमीनुद्दीन ख़ान पिता आदरणीय नवाब अलाउद्दीन ख़ान लोहारो रियासत के शासक की पुत्री मीर नासिर नवाब साहिब ससुर इस ख़ाकसार के बड़े भाई के साथ विवाह हुआ। ऐसे सम्मानीय सादात के ख़ानदान से

संख्या	नाम आर्य	किस इल्हाम या क़श्फ का गवाह है
		इस ख़ाकसार का यह घनिष्ठ संबंध पैदा हुआ और इस निकाह के समस्त आवश्यक ख़र्च, तैयारी मकान इत्यादि तक ऐसी आसानी से ख़ुदा तआला ने पूरे किए कि थोड़ी सी भी चिन्ता नहीं करनी पड़ी तथा अब तक अपने उसी वादे को पूरा करता चला जा रहा है। (6) छठी वह भविष्यवाणी जो निम्नलिखित संख्या.1 में वर्णित है जिसका गवाह केशधारी आर्य है। लाला शरमपत भी उसके गवाहों में सम्मिलित है। अब मैं कहता हूं कि यदि यह सब भविष्यवाणियां जो लिखी गई हैं लाला शरमपत उनको सच नहीं समझता और सर्वथा बनाया हुआ झूठ जानता है तो उसका अनिवार्य कर्त्तव्य है कि एक सार्वजिनिक जल्से का आयोजन करके हमारे सामने इस प्रकार क़सम खाए कि मैं अपने परमेश्वर को साक्षी मान कर सच्चे दिल से उसकी क़सम खाता हूं कि इन इल्हामी भविष्यवाणियों में से मुझे किसी की ख़बर नहीं और न मुझे कोई बताई गई और न कोई बात मेरे सामने पूरी हुई और यदि इस बात में मैंने झूठ बोला है तो हे सर्वशक्तिमान परमेश्वर! मुझ पर और मेरी सन्तान पर किसी दु:ख की मार से चेतावनी भेज।

संख्या	नाम आर्य	किस इल्हाम या क़श्फ का गवाह है
4.	बिशनदास ब्राह्मण पुत्र हीरासिंह	बिशनदास ब्राह्मण पुत्र हीरानन्द को इस इल्हाम की सूचना दी गई थी कि आज एक सज्जन अबदुल्लाह ख़ान का डेरा इस्माईल ख़ान से पत्र आने वाला है और वह कुछ रुपए भी भेजेगा। अतः यह व्यक्ति स्वयं ही परीक्षा के उद्देश्य से पोस्ट आफ़िस गया और एक्स्ट्रा असिसटेण्ट अबदुल्लाह ख़ान का पत्र लाया जो डेरा इस्माईल ख़ान से आया था जिसके साथ दस रुपए भी आए थे। अतः इसी प्रकार की क़सम देकर बिशनदास से भी पूछा जाना चाहिए। इस व्यक्ति ने हरनामदास आर्य निवासी बटाला के सामने इस इल्हाम के देखने का इक़रार भी किया है।
5.	बैजनाथ ब्राह्मण पुत्र भगतराम	बैजनाथ ब्राह्मण पुत्र भगतराम को कश्फ़ी तौर पर सूचना दी गई थी कि एक वर्ष की अवधि तक तुझ पर संकट आने वाला है और कोई ख़ुशी का अवसर भी होगा। अतः इस भविष्यवाणी पर उसके हस्ताक्षर कराए गए जो अब तक मौजूद हैं। तत्पश्चात एक वर्ष के अन्दर ही उसके पिता का जवानी की आयु में ही देहान्त हो गया। उसी दिन में उनके यहां विवाह का समारोह भी था।

संख्या	नाम आर्य	किस इल्हाम या क़श्फ का गवाह है
		अर्थात् किसी का विवाह था। यह भविष्यवाणी भी क़सम देकर परन्तु उसी प्रकार की क़सम के साथ उससे पूछनी चाहिए।

इतनी भविष्यवाणियां हमने बतौर नमूना लिख दी हैं और शेष ठीक जल्से के अवसर पर प्रस्तुत की जाएंगी। यदि क़ादियान के आर्य लोग अपनी अज्ञानता की क़सम खा लेंगे तो फिर हिन्दुओं को बात करने का अवसर मिल जाएगा। बहरहाल अब हमारे विरोधी आर्य इस सुझाव को स्वीकार करें या न करें, किन्तु स्मरण रखें कि यदि निर्णय करना चाहते हैं तो हज़ार बल खाकर अन्तत: इसी मार्ग का अनुकरण करना होगा। हिन्दी कहावत प्रसिद्ध है- सुर जुटे और कोढ़ निखुटे? सार्वजनिक जल्से में उपरोक्त नमूने की क़सम खा लेना केवल (अन्तिम) सीमा है जिससे निर्णय हो जाएगा अन्यथा कितनी शर्म की बात है कि केवल झूठे आरोपों के द्वारा प्रयास किया जाए कि समस्त इल्हाम कला और धोखे से बनाए जाते हैं। विचार करना चाहिए कि इस भलेमानस हिन्दू ने अपनी पुस्तक में जिसका नाम फन व फ़रेब ग़ुलाम अहमद की कैफ़ियत (मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद के कला एवं धोखे का विवरण) रखा है किस प्रकार अपने दिल से ही निराधार झूठ की इमारत बना ली है। जिसे वह अपनी इस पुस्तक के पृष्ठ-24 में लिखता है अत: उसकी गन्दी इबारत नीचे लिखी जाती है

अब ताज़ा इल्हाम सुनिए। क़ादियान में जान मुहम्मद कश्मीरी मिर्ज़ा की मस्जिद के इमाम का पांच वर्ष का लड़का बहुत बीमार होकर मरणासन्न हो गया था। उस समय की बुरी हालत को देख कर मूर्ख से मूर्ख व्यक्ति उसको कुछ क्षणों का मेहमान समझता था। इस कठिन परिस्थिति में इमाम साहिब मिर्ज़ा के पास गए। मिर्ज़ा इस लड़के को पहले

अपनी आंख से देख चुका था। इमाम साहिब ने पूरी हालत पुनः सुना कर कहा कि आप दुआओं को स्वीकार करने वाले हैं (हम शब्द से इस हिन्दू की विद्वता प्रकट है) दुआ कीजिए। मिर्ज़ा ने फ़रमाया आप के आने से पूर्व ही इल्हाम हुआ कि इस लड़के के लिए कब्र खोदो। मिर्ज़ा के मुंह से इस शब्द का निकलना ही था कि इमाम साहिब के होश बिगड़ गए। वास्तव में क्यों न बिगड़ते। क्योंकि यही एक लड़का था वह भी बुढ़ापे की आयु का मिर्ज़ा तो 'नीम हकीम ख़तरा-ए-जान' ही था, परन्तु ख़ुदा भी झूठों को झूठा सिद्ध करने के लिए विचित्र क़ुदरत दिखाता है कि जब कथित इमाम दुखी और शक्तिहीन अवस्था में घर वापस आया तो इल्हाम का विपरीत प्रभाव पाया। अर्थात् लड़के के स्वस्थ होने वाले लक्षण देखे। सारांश यह कि अभागे मुंह से यह शब्द निकले ही थे कि लड़का पल-पल स्वस्थ होने लगा। जब लोगों ने दुआ स्वीकार करने वाले साहिब (यह वही शब्द हिन्दू की विद्वता का है) की हंसी उड़ाई तो उत्तर दिया कि इल्हाम ग़लत नहीं हो सकता। यह बच्चा सदा जीवित नहीं रह सकता। झूठ गढ़ने वाले आर्य का क़िस्सा समाप्त हुआ।

अब विचार करना चाहिए कि वह कंजर अवैध सन्तान कहलाते हैं, वे भी झूठ बोलते हुए शरमाते हैं। परन्तु इस आर्य में उतनी शर्म भी शेष नहीं रही। जिस क़ौम में इस स्वभाव के और अमानतदार लोग हैं वे क्या कुछ उन्नतियां न करेंगे। अब इस उच्च वंशीय आर्य पर अनिवार्य है कि एक जल्सा करवा कर हमारे सामने इस आरोप को सिद्ध कराए ताकि वास्तविक रिवायत करने वाले (अर्थात् किसी से कोई बात सुनकर ज्यों की त्यों दूसरे से कहने वाला) को क़सम देकर पूछा जाए और इस निराधार आरोप के लिए हम न केवल इस रिवायत करने वाले को क़सम देंगे बल्कि स्वयं भी क़सम उठाएंगे। दोनों पक्षों की क़सम का यह विषय

होगा कि यदि सच-सच अपनी पूर्ण याददाश्त से लेशमात्र भी न्यूनाधिक किए बिना मैंने नहीं कहा तो हे सर्वशक्तिमान ख़ुदा और हे सर्वशक्तिमान परमेश्वर एक वर्ष तक अपने महाप्रकोप से मेरा ऐसा विनाश कर तथा ऐसा भयंकर कष्ट पहुंचा कि देखने वालों को नसीहत मिले। फिर यदि एक वर्ष तक ख़ुदा के प्रकोप से वास्तविक रिवायत करने वाला सुरक्षित रहा तो हम अपने झूठा होने का स्वयं विज्ञापन दे देंगे। क्योंकि हम जानते हैं कि ख़ुदा तआला ऐसे झूठे आरोप को बिना निर्णय के नहीं छोड़ेगा। यह तो हमारे लिए और अल्लाह से एक इल्हाम पाने वाले के लिए संभव बल्कि बहुत बार होता है कि कोई स्वप्न या इल्हाम अस्पष्ट तौर पर कई अर्थ किए जाएं, परन्तु यह झूठा आरोप कि हमें अटल इल्हाम हो गया कि जान मुहम्मद का लड़का दीन मुहम्मद अब मरेगा उसकी क़ब्र खोदो। यहां तक कि जान मुहम्मद को यह ख़बर दी कि अब तेरा लड़का दीन मुहम्मद अवश्य मरेगा। दीन मुहम्मद के नाम इल्हाम हो चुका, क़ब्र खोदने का आदेश हुआ। वह ख़बर सुनकर रोता-रोता घर तक गया। यह झूठ की गन्दगी किस ने खाई है। ऐसा ईमानदार तनिक हमारे सामने आए। किन्तु अब भी यदि पुस्तक का लेखक अपने चोर स्वभाव को नहीं छोड़ेगा और सार्वजनिक जल्से में रिवायत करने वाले को क़सम दिलाकर निर्णय नहीं करेगा तो वहीं दस लानतों का मैडल जो हम उसे पहले दे चुके हैं अब भी मौजूद है-

1. लानत
2. लानत
3. लानत
4. लानत
5. लानत

6. लानत
7. लानत
8. लानत
9. लानत
10. लानत

उसका कथन- सैकड़ों पंडितों ने यह बात सिद्ध की है कि परमेश्वर ने सृष्टि के आरंभ में ही ऋषियों को पवित्र वेदों का उपदेश दिया। इसके अनुसार ऋषियों ने समस्त ज्ञान एवं कला को प्रकट किया।

मेरा कथन- मैं कहता हूं कि वास्तविक सच्चाई के समक्ष पेट की उपासना करने वाले पंडितों के छल-कपट कैसे ठहर सकते हैं? वेदों की ऋृतियां स्वयं सिद्ध कर रही हैं कि वे अनादि नहीं हैं। देखो ऋग्वेद अष्टक प्रथम, अध्याय प्रथम, सूक्त-1 श्रुति-2। ऐसा हो कि अग्नि जिसकी महिमा प्राचीन काल और वर्तमान काल के ऋषि करते चले आए हैं देवताओं का ध्यान इस ओर आकर्षित करे। अत: जबकि वेद स्वयं ही इस पक्ष में हैं कि उनके प्रकट होने से पहले एक कालखंड व्यतीत हो चुका है आरिफ़ और मुल्हम भी गुज़र चुके हैं। इसमें स्पष्ट तौर पर सिद्ध होता है कि वेद बहुत बाद में हुआ है। इसीलिए सान्याचार्च आदि भाष्यकारों ने यही अर्थ लिखे हैं। और फिर इसी ऋग्वेद में ऐसे सम्राटों का भी वर्णन है जो इन वेदों के अस्तित्व से पूर्व गुज़र चुके हैं और अन्वेषकों ने सिद्ध कर लिया है कि जिन ऋषियों के नाम सूक्तों पर लिखे हैं उनमें से अधिकतर व्यास जी के युग के लगभग हुए हैं और वेदों से यह भी प्रकट होता है कि वेदों के काल में इस देश के मूल निवासी और थे जो किसी अन्य किताब को इल्हामी स्वीकार किए बैठे थे और वेदों तथा वेदों के देवताओं को नहीं मानते थे। इस पहलू से बहुधा परस्पर लड़ाइयां

होती रहती थीं यही राय प्रोफेसर विल्सन साहिब ने जगह-जगह अपने वेद भाष्य में लिखी है परन्तु उन सुशील स्वभाव हिन्दुओं ने बड़े धैर्य के साथ प्राण दिए। परन्तु वेद की शिक्षाओं को स्वीकार न किया। केवल वेदों को न मानने के कारण हज़ारों जिज्ञासुओं, ब्रह्मज्ञानियों (आरिफों) तथा बुद्धिमान आर्यों के सर काटे गए तथा दुष्ट ब्राह्मणों ने ऐसे-ऐसे उत्तम स्वभाव और पवित्र विचार लोगों को मार डाला जिनके समान लोग इस समुदाय में मिलना कठिन हैं। यदि वेदों में कुछ सच्चाई होती तो सुशील आर्य जो बुद्धिमान और दार्शनिक थे वे वेदों से इस प्रकार क्यों विमुख हो जाते कि एक-एक करके मारे गए, परन्तु वेदों को स्वीकार न किया। यदि वेदों की किसी एक-आधी श्रुति से यह विषय भी निकलता हो कि वे अनादि हैं तो स्वीकार करने योग्य नहीं क्योंकि दावा बिना सबूत है जिसे दूसरी श्रुतियां स्वयं रद्द करती हैं। और यदि यह कहो कि मनुजी वेदों को अनादि ही ठहराते हैं तो इसका उत्तर यह है कि मनु की गवाही बिना प्रमाण हो या किसी अन्य की गवाही विश्वसनीय नहीं। तो समझना

फ़ुट नोट- यूरोप के अन्वेषकों ने बड़ी जांच-पड़ताल के बाद वेदों के सम्पादन का समय 14वीं शताब्दी ई० बताया है और उनकी इस राय का सच्चा होना एक स्थान से, जिसे सर एडवर्ड कालब्रूक ने वेदों में खोजा है। सही ठहरता है। अत: वह उसके विवरण का इस प्रकार उल्लेख करते हैं कि प्रत्येक वेद में खगोल शास्त्र की एक-एक पुस्तक इस कारण लगाई गई है कि पत्री का क्रम ज्ञात हो और उससे उन कर्त्तव्यों के समयों का ज्ञान हो सके जो उसके पद के लिए अनिवार्य हैं। अत: वह स्पष्ट और सुदृढ़ प्रमाण जिस पर उन्होंने अपनी उपरोक्त राय स्थापित की है यह है कि जो स्थान कर्क राशि तथा मकर राशि का इस पुस्तक में ठहराया है वह वही स्थान है जो ई० पूर्व 14वीं शताब्दी में उन दिनों राशियों का था। अर्थात् कोई सन्देह नहीं कि वेदों का सम्पादन इसी काल खण्ड में हुआ था।

('तारीख़-ए-हिन्द' लेखक- अतफिन्स्टन साहिब)

चाहिए कि बुद्ध जी के मुकाबले पर मनु जी की हैसियत ही क्या है? क्या कुछ भी शर्म नहीं आती। स्पष्ट रहे कि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश इत्यादि पुस्तकों में वेदों को अनादि सिद्ध करने के लिए बहुत हाथ-पैर मारे। अन्त में हर ओर से निराश होकर ब्राह्मणों की दैनिक डायरी को प्रमाण ठहराया। किन्तु याद रहे कि प्रमाण पूर्णतया तुच्छ एवं बे फायदा है। यह अत्यन्त प्रसिद्ध घटना तथा सर्वमान्य घटना है कि दैनिक डायरी (तिथि पत्र) राजा भोज के समय से चार सौ वर्ष पूर्व खो गयी थी अर्थात् बौद्ध धर्म के उत्थान के समय में और यह जो अब ब्राह्मणों के हाथ में है यह तो एक नक़्ली वस्तु है जो सर्वथा घृणा के योग्य है और तनिक भी विश्वसनीय नहीं। इसमें बुद्धि के विपरीत और बेकार जीवनियां तो बहुत लिखी हैं परन्तु सिकन्दर महान का वर्णन कहां है। जिसका वर्णन करना दैनिक डायरी की दृष्टि से अत्यावश्य था। इसी प्रकार पुराने सिक्कों की गवाही से सिद्ध होता है कि एक सौ पचास वर्ष तक हिन्दुस्तान में यूनानियों का शासन रहा है परन्तु इस दैनिक डायरी में इस लम्बी घटना के संबंध में डेढ़ सदी समाप्त होने का संकेत तक भी नहीं पाया जाता तो क्यों इस बेहूदा छलपूर्ण षड़यंत्र का नाम रोज़नामचः (दैनिक डायरी) रखना चाहिए। इंग्लेण्ड के इतिहासकारों ने बहुत अनुसंधान करके सिद्ध किया है कि वेदों का काल चार हज़ार वर्ष के अन्दर अन्दर पाया जाता है और मेरी समझ में वेदों का काल ज्ञात करने के लिए स्वयं वेदों का ही ध्यानपूर्वक पढ़ना पर्याप्त है। मूल बात यह है कि हिन्दू लोग इतिहास के बहुत कच्चे हैं और झूठ बोलना, डींगे मारना अतिशयोक्ति करना शायद इनके धर्म में पुण्य में सम्मिलित है, क्योंकि इनका कोई कथन-व-कर्म झूठ अथवा निरर्थक अतिशयोक्तियों से रिक्त नहीं पाया जाता। अत: महाभारत, रामायण, भगवत्, मनुशास्त्र तथा अन्य पुराणों और स्वयं वेदों के पढ़ने से

उनकी यह आदत स्पष्ट तौर पर सिद्ध होती है के आस-पास ही हुए हैं। वेदों से यह भी स्पष्ट होता है कि वेदों के काल देश में के वास्तविक निवासी और थे जो किसी अन्य पुस्तक को इल्हामी मानते थे तथा वेदों एवं वैदिक देवताओं को नहीं मानते थे। इसी दृष्टिकोण से प्राय: आपसी लड़ाइयां होती रहती थीं। यही मत प्रोफ़ेसर विलसन साहिब ने जगह-जगह अपने वेदभाष्य में लिखा है। अफ़सोस हिन्दू लोग वेदों के उर्दू और अंग्रेज़ी अनुवाद को इतना बुरा समझते हैं कि उनकी ओर देखना भी नहीं चाहते। और संस्कृत तो ऐसी लुप्त है कि कठिनाई से विश्वास किया जाता है कि लाख हिन्दुओं में से कोई एक भी ऐसा संस्कृतविद हो कि वेदों को स्पष्ट रूप से पढ़ सके। फिर इस पक्षपात और मूर्खता की कोई सीमा है जो बिना देखे वेदों के संबंध में अकारण दावा किए बैठे हैं और सुमेर पर्वत की भांति एक अवास्तविक श्रेष्ठता का ताज उसे पहनाया गया है। विचार करना चाहिए कि बुद्ध जी कितने प्रसिद्ध और विख्यात ब्रह्म ज्ञानी तथा पंडितों के शिरोमणि (सरताज) गुज़रे हैं, जिनकी श्रेष्ठ अभिलाषा के आगे दयानन्दी विचारधाराएं एक गोबर के ढेर से अधिक महत्त्व नहीं रखतीं। वह अपने बौद्ध शास्त्र (अध्याय2, सूत्र-1) में कहने हैं कि वेद परमेश्वर की नहीं हो सकते, क्योंकि उनके समय का इतिहास जो बताया गया है वह पूर्णतया वास्तविकता के विरुद्ध तथा झूठ है। इसी प्रकार उनमें ख़ुदा की वाणी होने का कोई प्रमाण नहीं पाया जाता। उनके अर्थ और विषय बुद्धि के विपरीत हैं। अत: विचार करना चाहिए कि बुद्ध जी जैसे प्रसिद्ध ज्ञानी से बढ़कर जिनकी श्रेष्ठता लगभग पचास करोड़ लोग मानते हैं और कौन सा प्रमाण है? यदि है तो वह प्रस्तुत करना चाहिए। वेदों को प्रारंभ से किसी आर्य देश के बुद्धिमान ने स्वीकार नहीं किया तथा कितने ही अत्याचारी ब्राह्मणों ने इस स्वार्थ प्राप्ति के लिए हज़ारों वध भी किए

(जैसा कि शास्त्रों से सिद्ध है) में जिसने डेढ़ शताब्दी पूर्व की संकेत तक भी नहीं पाया जाता। तो फिर क्या इस व्यर्थ और धोखे से भरी हुई नकली वस्तु का नाम दैनिक डायरी रखना चाहिए? अंग्रेज़ इतिहासकारों ने बड़ी छान-बीन करके सिद्ध किया है कि वेदों का समय चार हज़ार वर्ष के अन्दर ही पाया जाता है। मेरी जानकारी के अनुसार वेदों का समय ज्ञात करने के लिए स्वयं वेदों का ही ध्यानपूर्वक पढ़ना पर्याप्त है। मूल बात यह है कि हिन्दू लोग इतिहास के बहुत कच्चे हैं और झूठ बोलना, डींगे मारना तथा बात को बढ़ा-चढ़ा कर व्यक्त करना संभवत: इनके धर्म में पुण्य समझा जाता है, क्यों कि उनका कोई कथन एवं कार्य झूठ बोलने अथवा निर्रथक बढ़ा-चढ़ा कर बात करने से खाली नहीं पाया जाता, जैसा कि महाभारत, रामायण, भागवत मनुशास्त्र तथा अन्य पुराणों और स्वयं वेदों के पढ़ने से उनका यह स्वभाव स्पष्ट तौर पर सिद्ध होता है।

अन्तत: यदि हम ऐसे स्पष्ट और व्यापक सबूतों से आंखें बंद करके मान भी लें कि वेद कुछ अनादि काल के हैं तो क्या व्यक्तिगत विशेषताओं के सिद्ध हुए बिना केवल अनादि होना उनको ख़ुदा तआला की वाणी (कलाम) बना देगा हरगिज़ नहीं। स्पष्ट है कि महानता बुद्धि से होती है न कि आयु से। वैज्ञानिक जिन्होंने जीव विज्ञान में खोज की है वे लिखते हैं कि कछुए की आयु बड़ी होती है यहां तक कि किसी बाहरी आघात के बिना कम ही मरता है। बहुत से कछुए ऐसे होंगे जो आदिकाल में जन्म लेकर अब तक जीवित मौजूद हैं। अत: यदि वेदों का अनादि होना उनकी आन्तरिक विशेषताओं के प्रमाण के बिना स्वीकार कर लिया जाए तो उनके पद की चरम सीमा कछुए के समान होगी। अर्थात् केवल वृद्ध होना विशेषता पर प्रमाण हरगिज़ नहीं हो सकता। बल्कि आन्तरिक विशेषताओं को प्राप्त किए बिना आयु और वर्ष में पुराना हो जाना इसी

उदाहरण का चरितार्थ होगा कि گو سالہ ما پیر شد گاؤ نشد और जैसा कि हम व्यक्त कर चुके हैं कि वेदों के अनादि होने पर कोई प्रमाण भी नहीं। हां यदि यह कहो कि वेदों का दोषपूर्ण होना ही उसके अनादि होने पर प्रमाण है तो संभवत: यह उपाय स्वीकार हो सके, क्योंकि.

پیری وصد عیب چنیں گفتہ اند

फिर हम यह भी कहते हैं कि व्यक्तिगत विशेषताओं के अतिरिक्त जितनी भी बाहरी महानताएं हैं चाहे वह आयु में अधिकता हो या धन की अधिकता, सत्ता-प्राप्ति हो या क़ौम की दृष्टि से सम्माननीय हो इत्यादि इत्यादि वे सब तुच्छ हैं और केवल उन्हीं के आधार पर महानता का दम भरना गधों का काम है न कि इन्सानों का। मैंने सुना है कि लॉर्ड अलिनबरा जो पहले समय में हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल थे उनकी पत्नी एक प्रतिष्ठित खानदान में से थी जो क़दीम (अनादि) होने का दावा करता था फिर उस पर दूसरी प्रतिष्ठा इस लेडी साहिबा को यह प्राप्त हुई कि लॉर्ड साहिब की पत्नी बनी। अब उसकी विशषताओं का हाल सुनिए। कहते हैं कि यह स्त्री अब तक जीवित है और यद्यपि वैध तौर पर नौ ख़सम कर चुकी है। परन्तु पति के अतिरिक्त अन्य पुरुषों की कोई गिनती नहीं और प्राय: अन्य पुरुषों के साथ भागती भी रही है। फिर अन्त में अब्दुल नामक मुसलमान क़ौम ऊंटबान से विवाह किया परन्तु उसके तहत भी नहीं रुकी। महोदय अब बताइये कि इस स्त्री की दोनों प्रतिष्ठाएं इस व्यक्तिगत बेशर्मी के साथ कुछ मुकाबला कर सकती हैं? अत: आपका वेद अनादि भी सही मान लो कि बाबा आदम से पहले का है। परन्तु हम पुन: निवेदन करते है कि केवल प्राचीन होने के कारण महान नहीं ठहर सकता किन्तु संभवत: मूर्खों की दृष्टि में। हां यदि वेद की महानता सिद्ध करना है तथा उसमें ख़ुदा का कलाम होने का सबूत दिखाना है तो उसकी ऐसी व्यक्तिगत विशेषताएं तथा रूहानी

(आध्यात्मिक) लाभ दिखाओ जिनके कारण वह ऐसा अनुपम हो जैसा कि ख़ुदा तआला अनुपम है। क्योंकि हम देखते हैं कि जो चीज़ ख़ुदा तआला से निकली है उसके समान बनाने में कोई मनुष्य समर्थ नहीं हो सकता, यहां तक कि एक मक्खी के बनाने में भी सम्पूर्ण सृष्टि असमर्थ है। दूसरे हमें यह भी स्पष्ट तौर पर दिखाई देता है कि ख़ुदा तआला ने केवल अपनी अपनी कथनी में ही नहीं अपनी करनी (कार्यों) में भी अपने इरादों को प्रकट किया है। अत: कथन और कर्म में समानता भी आवश्यक है। तीसरे हम यह भी देखते हैं कि ख़ुदा तआला ने अपनी पवित्र एवं पूर्ण विशेषताओं की ओर हमें भी एक आध्यात्मिक (रूहानी) आकर्षण प्रदान किया है या यों कहो कि आन्तिरक तौर पर महसूस करने की एक ऐसी शक्ति प्रदान की गई है जिससे हमें ज्ञात हो जाता है कि कौन सी विशेषताएं ख़ुदा तआला की प्रतिष्ठा के योग्य हैं और कौन-कौन सी विशेषताएं ख़ुदा तआला की ख़ुदाई प्रतिष्ठा के प्रतिकूल हैं। अर्थात् ख़ुदा के कलाम (वाणी) की पहचान करने कि लिए यही तीन निशानियां हैं। परन्तु क्या ये निशानियां वेदों में पाई जाती हैं? कदापि नहीं। पंडित दयानन्द जिन्होंने नरकुस और निखट्टू की विश्वसनीय पुस्तकों की छान-बीन की है उनको वेद का यह सारांश हाथ लगा कि जिस चीज़ को परमेश्वर कहा जाता है वह करोड़ों प्राचीन, अनादि तथा स्वयंभू तत्त्वों में से एक तत्त्व है जो अपने अस्तित्व में उनके समान अनादि होने में उनके बराबर और अब हम दयानन्द जी को वाह-वाह न कहें तो और क्या कहें जिसने वैदिक एकेश्वरवाद (तौहीद) को ऐसा सिद्ध किया कि पुराने मुश्रिकों के भी कान काट दिए। क्योंकि यद्यपि पुराने मुश्रिक वेदों के मानने वाले अब तक यह तो मानते आए थे कि हमारे वेदों में सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि और विष्णु इत्यादि की पूजा अवश्य लिखी है और उनसे मनोकामनाएं मांगने का आदेश है। परन्तु यह वेदों का पवित्र मामला अब तक उनको भी न सूझा था कि अपने अस्तित्व के कण-कण में ख़ुदा से नि:स्पृह तथा

अनादि होने में उसके समान और अस्तित्वों के फैलाव में उससे बढ़कर हैं। यह वैदिक ज्ञान दयानन्द जी के ही भाग में था। देखो अब इस वेद के सिद्धान्त में कितने दोष हैं। सर्वप्रथम तो जब परमेश्वर प्रत्येक वस्तु का सहारा और प्रत्येक प्रकटन का वास्तविक द्योतक न हुआ तो फिर किस बात का परमेश्वर हुआ। केवल करोड़ों अनादि अस्तित्त्वों में से वह भी एक अस्तित्व हुआ जो उन आदिवासियों में से वह भी केवल एक आदिवासी है। दूसरा बड़ा भारी दोष यह कि अस्तित्त्वों के फैलाव की दृष्टि से वह अनन्त आत्माओं (रूहों) की तुलना में एक कण के समान हुआ क्योंकि निस्सन्देह दो अनादि अस्तित्त्वों का फैलाव एक अनादि से बहुत अधिक होता है। अत: जबकि करोड़ों रूहें जिनकी संख्या उसी स्रष्टा को ज्ञात है वेद के अनुसार अनादि और परमेश्वर हुईं। तो बेचारे परमेश्वर का अस्तित्त्व उन असंख्य, अनादि अस्तित्त्वों की तुलना में क्या अस्तित्त्व और क्या वास्तविकता रखता है। निस्सन्देह बहुत से अनादि अस्तित्त्व से इतना अधिक होगा कि उसकी उनसे कुछ भी तुलना नहीं होगी। तीसरा बहुत बुरा दोष यह है कि जब परमेश्वर की रूह (आत्मा) तथा अन्य समस्त आत्माएं अनादि और परमेश्वर होने में एक ही प्रकृति (फ़ितरत) एवं विशेषता रखती हैं तो वे अकारण समान वास्तविकता भी रखती होंगी,★ परन्तु सत्यार्थ प्रकाश के पृष्ठ 263 में पंडित दयानन्द

★फुटनोट- वेदों में इसी बात की बहुत चर्चा है कि परमेश्वर की आत्मा (रूह) तथा अन्य चीज़ों की रूहें (आत्माएं) एक जैसी वास्तविकता रखती हैं। अत: यजुर्वेद में एक श्रुति यह है कि मनुष्य की रूह कहती है कि वह ख़ुदा (परमेश्वर) जो सूर्य में है वही मैं ही हूं। देखो यजुर्वेद अध्याय 40, मंत्र-17, ऋग्वेद भाग-2, सूक्त-90, मंत्र-1 में लिखा है कि परमेश्वर की हज़ार आंखें, हज़ार सर और हज़ार पांव हैं। दूसरे मंत्र में है कि सब रूहें उसी की रूह हैं और जो कुछ है वही है तथा था भी वही। चौथे मंत्र में है कि पृथ्वी की समस्त सृष्टि उसका चौथा भाग है और तीन भाग आकाश पर हैं। ये वे श्रुतियां हैं जिनसे वेदान्त के मामले निकाले गए हैं। अब पंडित दयानन्द के शिष्य इन श्रुतियों के

इक़रार कर चुके हैं कि रूह एक सूक्ष्म शरीर है जो शरीर से निकलने के बाद ओस की भांति पृथ्वी पर गिरती है और फिर टुकड़े-टुकड़े हो कर किसी घास पात पर फैल जाती है। अब हमारा आरोप यह है कि यदि रूह शरीर या भौतिक वस्तु है तो इससे अनिवार्य हो गया कि वेद की शिक्षाओं के अनुसार परमेश्वर भी शरीर एवं भौतिक होगा और वह भी टुकड़े-टुकड़े होकर पृथ्वी पर गिरे तथा खाए जाने योग्य है। संभवत: इसी विशेषता के अनुसार इन्द्र परमेश्वर की रूह पृथ्वी पर गिर कर कोशिका ऋषि की पत्नी के गर्भ में जा ठहरी थी, जिसके बारे में ऋग्वेद प्रथम अष्टक में स्पष्ट तौर पर यही कथन लिखा है। अब हे आर्य! बधाई हो कि तुम्हारे परमेश्वर की सम्पूर्ण वास्तविकता प्रकट हो गई और स्वयं दयानन्द की गवाही से सिद्ध हो गया कि तुम्हारा परमेश्वर एक सूक्ष्म शरीर है जो अन्य रूहों की भांति खाया जाता है तब ही तो वह कभी रामचन्द्र बना कभी कृष्णा और कभी मीन और एक बार तो सूअर बन कर सूअरों की भांति स्वादिष्ट भोजन खा कर अपने दर्शन करने वालों को प्रसन्न कर दिया। आश्चर्य कि जिनके परमेश्वर का यह हाल हो वे पवित्र क़ुर्आन पर आरोप लगाएं कि उसमें ऐसी कोई आयत नहीं जो ख़ुदा तआला को शरीर तथा भौतिक होने से पवित्र व्यक्त करती हो। जबकि पवित्र क़ुर्आन की पहली आयत ही यही है कि ख़ुदा तआला शरीर तथा भौतिक होने से पवित्र है जैसा कि वह फ़रमता है- اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْن۔

अर्थात् सम्पूर्ण प्रशंसा, स्तुति ख़ुदा ही के लिए है समस्त लोकों का प्रतिपालक (रब्ब) है जिसका स्वामित्व प्रत्येक लोक पर है जिनकी सीमाएं

अर्थ चाहे किसी प्रकार से करें किन्तु बहरहाल यह तो स्वयं दयानन्द के इक़रार तथा उन श्रुतियों से प्रमाणित है कि परमेश्वर की रूह तथा अन्य रूहें समान वास्तविकता रखती हैं। इसलिए जबकि अन्य रूहें वेदानुसार एक बारीक शरीर हैं तो इसी प्रकार परमेश्वर की रूह भी बारीक शरीर ठहरी। (इसी से)

ज्ञात होने के कारण एक सीमित करने वाले स्रष्टा की ओर मार्गदर्शन करें। शब्द आलम उसी से निकला है जिसकी सीमाएं ज्ञात हों और जिस वस्तु की सीमाएं ज्ञात हों वह या तो शरीर तथा भौतिक होगी और या रूहानी तौर पर किसी सीमा तक अपनी शक्ति रखती होगी।

जैसे मनुष्य की रूह, घोड़े की रूह, गधे की रूह इत्यादि निर्धारित सीमाओं तक शक्तियां रखती हैं। अतः यह सब आलम (संसार) के अन्तर्गत आती हैं। और वह जो इन सब का स्रष्टा तथा इनसे श्रेष्ठतम है वह ख़ुदा है। अब ध्यानपूर्वक देखना चाहिए कि ख़ुदा तआला ने इस आयत में न केवल यह स्पष्ट किया कि वह शरीर और भौतिक होने से श्रेष्ठतम है बल्कि यह सिद्ध भी कर दिया कि यह समस्त वस्तुएं सीमित होने के कारण एक स्रष्टा की आवश्यकता सिद्ध करती हैं जो सीमाओं एवं प्रतिबंधों से मुक्त है। अब पाठक समझ सकते हैं कि आर्यों की बुद्धि को पक्षपात ने कितना मार लिया है कि जो विषय पवित्र क़ुर्आन की पहली आयत से ही निकलता है उस पर दृष्टि नहीं डाली और विद्वत्ता का यह हाल है कि यह तक ख़बर नहीं कि 'आलम' किसे कहते हैं, जबकि 'आलम' एक ऐसा शब्द है कि प्रत्येक दार्शनिक और हकीम इसका यही अर्थ लेता है तथा पवित्र क़ुर्आन की सामान्य परिभाषा में आरंभ से अन्त तक इसका यही अर्थ लिया गया है और संसार की समस्त इल्हामी पुस्तकों के अनुयायी पूर्ण रूप से अंधों के अतिरिक्त यही अर्थ लेते हैं। अतः इस स्पष्ट ग़लती से आर्यों की बौद्धिक प्रकाश की वास्तविकता प्रकट हो गई। अब एक चुल्लू भर पानी में डूब मरें कि ऐसी स्पष्ट ग़लती की। ख़ुदा ने चाहा तो हम "क़ुर्आनी शक्तियों का प्रदर्शन स्थल" पुस्तक में यह सिद्ध करके दिखाएंगे कि वेद तो स्वयं अल्लाह की विशेषताओं के शत्रु हैं और कोई अन्य पुस्तक ऐसी नहीं जो अल्लाह की विशेषताओं के

पवित्र वर्णन में पवित्र क़ुर्आन से तुलना कर सके। हां बाइबल में कुछ सच्चाइयां थीं परन्तु ईसाइयों और यहूदियों के बेईमानी से भरे हस्तक्षेप ने उनके सुन्दर चेहरे को ख़राब कर दिया। अब पवित्र क़ुर्आन का तो ऐसा उदाहरण है कि जैसे कि एक अत्यन्त भव्य इमारत हो जिसमें प्रत्येक मकान ढंग से बना हुआ है, भोजनालय अलग, सोने का कमरा अलग, स्नान गृह अलग, स्टोर रूम अलग, चारों ओर अत्यन्त सुन्दर वाटिका और नहरें बहती हों। वफ़ादार नौकर और स्थान-स्थान पर रक्षक मौजूद। किन्तु बाइबल का यह उदाहरण कि यद्यपि आरंभिक काल में कुछ अपने विचार में उसकी इमारत भी अच्छी थी। आवश्यकतानुसार मकान, कमरे तथा बैठक इत्यादि बनी हुई थीं। एक वाटिका भी थी, सहसा एक भूकम्प आया कि मकान गिर गया, वृक्ष उखड़ गए, नहरों तथा स्वच्छ पानी का निशान न रहा और लम्बे समय के कारण ईंटों पर बहुत सा कीचड़ और गन्दगी पड़ गई और ईंटें कहीं की कहीं सरक गईं, वह ढंग से बनी हुई इमारत और अपने-अपने स्थान पर संतुलित तथा जो पवित्र मकान थे सब नष्ट हो गए। हां कुछ ईंटें रह गईं, जिनको चोरों ने अपनी इच्छानुसार जहां चाहा रखा। वृक्षों का भी यही हाल हुआ, क्योंकि वे गिर जाने के कारण जलाने के अतिरिक्त किसी योग्य न रहे। अब मूर्ख चोरों के अतिरिक्त वीरान और सुनसान पड़ी है। कोई सच्चा सेवक भी नहीं तथा स्वयं गिरे हुए घर तथा गिरी हुई वाटिका में सच्चे सेवक का क्या काम। ख़ैर ईसाइयों की ख़राबियों को वर्णन करने का तो यहां अवसर नहीं केवल आर्यों के पक्षपात को स्पष्ट करना अभीष्ट है। मैंने आज तक किसी की मूर्खता पर ऐसा आश्चर्य नहीं किया और न किसी के पक्षपात से मैं ऐसा हैरान हुआ जैसा इन सुजाखे आर्यों के कथन से कि पवित्र क़ुर्आन ख़ुदा तआला को शरीर और भौतिक बताता है तथा पवित्रता की आयत कोई नहीं। कैसे

अन्धे हैं। क्या वह जो अपने कलाम के प्रारंभ में ही अपने अस्तित्व को समस्त आलमों से श्रेष्ठ और उनका प्रतिपालक बताता है वह इस बात का समर्थक है कि समस्त लोकों में प्रविष्ट, शरीर तथा भौतिक हूं। मैं पुनः कहता हूं कि क्या जिसकी शिक्षाएं इतनी महान हैं कि-

اَيْنَمَا تُوَلُّوْا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ۔

(अलबक़रह-116)

जिस ओर मुंह फेरो उस ओर ही ख़ुदा है। क्या वह जो कहता है-

اَللّٰهُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ۔

(अन्नूर-36)

कि उसकी क़ुदरत का प्रकाश सम्पूर्ण पृथ्वी, आकाश तथा कण-कण के अन्दर आ रहा है। क्या वह जो फ़रमाता है-

اَللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ

(आले इमरान-3)

कि वही वास्तविक उपास्य (मा'बूद) प्रत्येक वस्तु की जान तथा प्रत्येक अस्तित्व का सहारा है। क्या वह जो बता रहा है कि-

لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْئٌ۔

(अश्शुरा-12)

لَا تُدْرِكُهُ الْأَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْأَبْصَارَ

(अलअन्आम-104)

कि उसकी जैसी कोई भी वस्तु नहीं। आंख की देखने की शक्ति और हृदय की विचार शक्ति उसकी पराकाष्ठा तक नहीं पहुंच सकती और उसे प्रत्येक दृष्टि और विचार की सीमाएं ज्ञात हैं। क्या जिसने यह कहा कि-

نَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ۔

(क़ाफ़-17)

कि मैं मनुष्य के ऐसे निकटतम हूं कि ऐसी उसकी प्राण धमनी भी नहीं क्या जिसने यह कहा कि

وَ كَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطًا

(अन्निसा-127)

कि ख़ुदा वह है जो प्रत्येक चीज़ को परिधि में लिए हुए है।

क्या ऐसे पवित्र और सर्वांगपूर्ण (ख़ुदा) के बारे में कोई बुद्धिमान सन्देह कर सकता है कि उसने ख़ुदा को शरीर और भौतिक ठहरा कर 'आलमीन' (समस्त लोकों) में सम्मिलित कर दिया है। परन्तु जो कुछ वेदों पर घटित होता है मैं नहीं जानता कि आर्य लोग उसका क्या उत्तर दे सकते हैं। हम अभी वर्णन कर चुके हैं कि वेदों के अनुसार ख़ुदा तआला एक सूक्ष्म शरीर है जो ओस की भांति पृथ्वी पर गिरने के योग्य है। और इन्शाअल्लाह ऋग्वेद की कई श्रुतियां भी उदाहरण के तौर पर और क्योंकि ख़ुदा तआला ने लाखों दिलों में हमारे लिए निष्कपटता तथा प्रेम डाल दिया है, यहां तक कि अमरीका और यूरोप के देशों में भी बहुत सी प्रसिद्धि देकर कई उत्तम विचार एवं विद्वजनों को इस ओर फेर दिया है। इसलिए हमारा यह भी विचार है कि यद्यपि कुछ भी आवश्यकता नहीं परन्तु इन मित्रों के सहयोग से इस काग भाषा अर्थात् संस्कृत की वास्तविक श्रुतियां और साथ ही अंग्रेज़ी इबारत भी जो वेदों का अनुवाद है कभी-कभी पुस्तक में लिखी जाया करें, क्योंकि बहुत से योग्य पुरुष इस सेवा के लिए भी मौजूद हैं। यद्यपि हम ऐसा करने को तैयार हैं और ख़ुदा की सामर्थ्य ने उसके सब सामान भी पैदा कर दिए हैं, परन्तु फिर भी आर्यों से हरगिज़ यह आशा नहीं कि वे अपने बदनाम करने वाले पक्षपात का मुंह काला करके न्याय की ओर क़दम बढ़ाएं। क्योंकि प्रत्यक्ष तौर पर देखा जाता है कि जिन अंग्रेज़ों ने संस्कृत में बड़े-बड़े कमाल किए

हैं और जिन योग्य ब्रह्म समाज वालों ने इस खोई हुई भाषा में बड़ी-बड़ी योग्यताएं पैदा की हैं यहां तक कि वेदों के भाष्य बनाए उन विद्वान लोगों की राय को भी इन लोगों ने स्वीकार नहीं किया। उन्हें स्वयं तो वेद का मक्खी के बराबर भी ज्ञान नहीं, केवल दयानन्द के अस्त-व्यस्त विचार हैं, परन्तु दूसरों के सामने बातें बनाते हैं। प्रत्येक बुद्धिमान समझ सकता है कि किसी धर्म पर आरोप लगाने के लिए उनके मान्य सिद्धान्तों को जान लेना पर्याप्त है। क्योंकि वास्तव में सिद्धान्त ही धर्म की परिधि का केन्द्र होते हैं और उन्हीं पर बहस होती है। यदि मुसलमानों को संस्कृत पढ़े बिना संस्कृत पढ़े हिन्दुओं के साथ शास्त्रार्थ (मुबाहस:) करना उचित नहीं तो फिर हिन्दुओं को अरबी पढ़े बिना मुसलमानों पर कोई आरोप लगाना कब उचित है। इन्दरमन कौन सी अरबी भाषा पढ़ा हुआ है। लेखराम को क्या एक आयत पढ़ने की योग्यता है। फिर ये दोनों पूर्णतया अज्ञान एवं अरबी भाषा से सर्वथा अनभिज्ञ क्या अधिकार रखते हैं कि क़ुर्आनी ज्ञानों एवं सिद्धान्तों की मीन-मेख करने के लिए नाम भी लें। उन्हें तो अपनी संस्कृत की भी ख़बर नहीं। यह तो दूर की बात है कि अरबी भाषा के दो शब्द भी जोड़ सकें या सही पढ़ सकें। दयानन्द तो उर्दू पढ़ने से भी वंचित थे तो फिर क्यों उसने मुसलमानों के साथ शास्त्रार्थ किए और वेद भाष्य तथा 'सत्यार्थ प्रकाश' में अपनी दुर्गंधपूर्ण अनभिज्ञता की बहुत कुछ गन्दगी छोड़ गए। अत: मुसलमान इस प्रकार का आरोप हरगिज़ नहीं लगाएंगे कि किसी को अरबी भाषा नहीं आती बल्कि वे देखेंगे कि जिस बात पर आरोप लगाया गया है वह वास्तव में हमारा सिद्धान्त है या नहीं। फिर जैसी स्थिति हो वैसा कार्य करेंगे।

लन्दन-पार्लियामेण्ट में भारतीय अदालतों की सैकड़ों अपीलें अंग्रेज़ी में प्रस्तुत होती हैं परन्तु नियुक्त किए गए जजों पर यह आरोप नहीं

लगता कि तुम्हें तो उर्दू का ही ज्ञान नहीं तुम फैसला क्या करोगे। क्योंकि जब दोनों पक्षों के बयान तथा गवाहों की गवाही या लिखित सबूत और सहायक जजों की रायों का सही तौर पर अंग्रेज़ी में अनुवाद हो चुका तो फिर उर्दू की क्या आवश्यकता रही। इसलिए हम कहते हैं कि यदि आर्यों के हृदय में ऐसा ही मूर्खों जैसा भ्रम बैठा हुआ है तो वे क्यों मुहर लगा कर अपनी नवीन आस्था संहिता प्रकाशित नहीं करवा देते जिसमें व्याख्या करते हुए लिखा जाए कि हम पहले प्रकाशित हुई आस्थाओं को छोड़ते हैं और अब हमारी नवीन आस्थाएं ये हैं। फिर देखें कि इन आस्थाओं की भी कैसी ख़बर ली जाती है।

मैं पूर्ण विश्वास से कहता हूं कि सामान्य हिन्दुओं का वेद-वेद करना उसी समय तक है जब तक उन्हें वेदों की विषय-वस्तुओं का ज्ञान नहीं। क्या ही अच्छा हो कि अंग्रेज़ी सरकार सामान्य जनता का धोखा दूर करने के लिए वेदों का उर्दू भाषा में शाब्दिक अनुवाद एक ऐसी निर्धारित की हुई समिति से करा दे जिसमें आर्यों के योग्य सदस्य भी सम्मिलित हों और इस समिति में कुछ श्रेष्ठ ब्रह्म समाज वाले भी सम्मिलित हों। फिर वह अनुवाद सामान्य तौर पर हिन्दुओं इत्यादि में बांट दिया जाए। हिन्दुओं को वेदों से यहां तक अनभिज्ञता है कि गाय-बैल का न मारना भी एक धार्मिक आस्था समझी गई है। फिर खाना तो बहुत दूर इस मांस का देखना भी पसन्द नहीं करते जबकि मनुशास्त्र जिस पर पंडित दयानन्द अपनी बहुत सी बातों का दारोमदार रखते हैं, बड़ी ज़ोरदार आवाज़ में कह रहे हैं कि बैल का मांस खाना न केवल उचित है बल्कि बड़े पुण्य की बात है। ऋग्वेद प्रथम अष्टक में लिखा है कि जिस त्वचा से हवन के कार्य पूर्ण होते हैं वह अवश्य गाय की त्वचा (खाल) चाहिए। परन्तु अब हिन्दुओं के नज़दीक गौबध से बढ़कर कोई राजा अपने निर्धारित

दिनों में भैंसों को तलवार से काटते हैं। और ज्वालामुखी तथा कई अन्य स्थानों पर देवियों को प्रसन्न करने के लिए ये कार्य होते रहते हैं किन्तु कभी पक्षपात के पर्दों से इस ओर ध्यान नहीं जाता कि ये उसी वैदिक आदेश के अवशेष हैं। यजुर्वेद अध्याय 24, मंत्र, 27 में स्पष्ट तौर पर लिखा है- बृहस्पति के लिए गाय की बलि दी जाए तथा ऋग्वेद अष्टक-2 अध्याय-3, सूक्त-6 में इस मांस को खाने की स्पष्ट तौर पर अनुमति है, जबकि ऋग्वेद मण्डल-6, सूक्त-16 बड़े प्रेम के साथ लिखा है कि गाय का मांस सबसे अच्छी ख़ुराक है। फिर ऋग्वेद अष्टक-4, अध्याय-1 में चर्चा के तौर पर व्यक्त किया है कि एक बार तीन सौ भैंसों की जलाने योग्य बलि दी गई और वर्तमान में जो एक पंडित जी की ओर से एक पुस्तक कलकत्ता में प्रकाशित हुई है जिसकी प्रतियां जगह-जगह फैल गई हैं। वह न केवल उचित बल्कि बड़े ऊंचे स्वर में यह दावा करते हैं कि पहले युग में गौमांस बड़ी रुचि-पूर्वक खाया जाता था तथा अच्छे-अच्छे चर्बी वाले टुकड़े ब्राह्मण के सामने प्रस्तुत किए जाते थे। ऋग्वेद प्रथम अष्टक की एक श्रुति की व्याख्या में प्रोफेसर विलसन लिखते हैं कि वेद की एक बड़ी विश्वसनीय गवाही इस बात पर है कि वैदिक काल में सामान्यतया गौमांस खाया जाता था और जगह-जगह हिन्दुओं की दुकानों पर बिकता था।

अतः न्याय का स्थान है कि जिस गाय के खाने के लिए यह निर्देश है अब उसे अवैध समझा जाता है। क्या इससे सिद्ध नहीं होता कि आर्यों को वेदों की कुछ भी परवाह नहीं। वे केवल दिखाने के दांत रखते हैं न कि खाने के। फिर विचार करना चाहिए कि वेद की शिर्कपूर्ण शिक्षाएं सम्पूर्ण विश्व में कैसी प्रसिद्ध हो रही हैं। चौदह करोड़ हिन्दू इस में लिप्त हैं। जनता जगन्नाथ और गंगा की ओर नारे लगाते हुए चली

जाती है परन्तु दयानन्द जी को इस्लामी तौहीद (एकेश्वरवाद) का प्रभाव देखकर अब यह चिन्ता हुई कि वेद हाथ से जाता है। इसके लिए कोई उपाय करना चाहिए। किन्तु उसने वास्तव में अपने वेदों की कुछ कला (हुनर) नहीं दिखाई बल्कि उसके कई अन्य दोष खोल गया। इंग्लैण्ड, अमरीका, जर्मनी और फ्रांस में वेदों का अनुवाद हज़ारों बल्कि लाखों लोगों की दृष्टि से गुज़रा है परन्तु किसी को ख़बर तक नहीं कि वेदों में एकेश्वरवाद भी है। इन्हीं अंग्रेज़ों ने पवित्र क़ुर्आन का अनुवाद किया तो क़ुर्आनी एकेश्वरवाद (तौहीद) ने यूरोप के देशों में हलचल मचा दी, यहां तक कि 'कार्ल लॉयक' और डेविन पोर्ट इत्यादि प्रसिद्ध अंग्रेज़ों ने जिनकी पुस्तकें 'हिमायत-ए-इस्लाम' इत्यादि प्रकाशित होकर हिन्दुस्तान में भी आ गई हैं क़ुर्आनी महिमाओं और उसके पवित्र एकेश्वरवाद पर ऐसी गवाहियां दीं कि पक्षपात के बहुत से अवरोधों के बावजूद उन्हें कहना पड़ा कि क़ुर्आन एकेश्वरवाद के विषय में तथा दोष रहित होने में एक अद्वितीय पुस्तक है जिसकी आस्थाएं पूर्णतया बुद्धिसंगत और विचारशील व्यक्ति का धर्म हो सकता है। इसी प्रकार एक बिलिण्ड नामी अंग्रेज़ विद्वान जिन्होंने वर्तमान समय में इस्लाम से संबंधित एक पुस्तक लिखी है। वह इस बात के समर्थक हैं कि एकेश्वरवाद को संसार में दोबारा स्थापित करने वाले इस्लाम के पैग़म्बर हैं। उन्होंने अल्लाह के एकेश्वरवाद को इस श्रेष्ठतापूर्वक फैलाया है कि अरब के रेगिस्तान में अभी तक एकेश्वरवाद की सुगंध आती है।

अब बताना चाहिए कि वेद के एकेश्वरवाद के बारे में किस मध्यस्थ ने गवाही दी। दोनों अनुवाद क़ुर्आन और वेद के इंग्लैण्ड तथा फ्रांस आदि में गए। अन्त में उन मध्यस्थों की भी राय हुई कि क़ुर्आन में ऐकेश्वरवाद तथा वेद में अनेकेश्वरवाद भरा हुआ है।

अब हम अपने पहले विषय की ओर लौट कर कहते हैं कि हिन्दुओं के लिए यह अत्यन्त दिल तोड़ने वाली घटना तथा गंभीर आघात पहुंचने का स्थान है कि अल्लाह की किताब के वे वास्तविक लक्षण जिनका अभी हम ऊपर वर्णन कर आए हैं वेद में नहीं पाए जाते।

(1) वेद में ख़ुदा तआला की विशेषताएं नहीं बल्कि उसके दोष और कमज़ोरियों को अभिव्यक्त किया है कि वह एक कण पैदा करने की भी सामर्थ्य नहीं रखता। क्योंकि वेद की वास्तविक जड़ आवागमन की अनिवार्यता है और अनन्त काल तक आवागमन की अनिवार्यता का मामला तब ही क़ायम रह सकता है कि जब प्रत्येक वस्तु को परमेश्वर के समान स्वयंभू समझा जाए और साथ ही यह भी स्वीकार किया जाए कि सदैव की मुक्ति पाने का द्वार बन्द है। अत: किसी वस्तु के पैदा करने की सामर्थ्य न रखना, यह स्पष्ट तौर पर उस अस्तित्व (ख़ुदा) की अपूर्णता एवं कमज़ोरी है जिसे सम्पूर्ण कायनात का ख़ुदा और परमेश्वर कहा जाए।

(2) वेद में रूहानी लाभ तथा पवित्र विशेषताएं भी नहीं, क्योंकि आर्य लोग और समस्त हिन्दू स्वयं स्वीकार करते हैं कि वेद के ऋषियों के अतिरिक्त अन्य सब पर वास्तविक विवेक का द्वार बन्द है। समस्त विवेकशील लोगों के एकमत से वास्तविक विवेक उस पूर्ण मारिफ़त का नाम है जो पूर्व कही हुई बात को वर्तमान के दर्पण में दिखलाए तथा सुनकर प्राप्त विश्वास को देखकर हुए विश्वास की श्रेणी तक पहुंचा दे (अर्थात् इल्मुल यक़ीन को ऐनुलयक़ीन की श्रेणी तक पहुंचा दे) अर्थात् जिस ज्ञान को बच्चों की भांति पुस्तक में पढ़ा गया है वह स्वयं अपनी जान पर घटित भी हो जाए जैसा कि कहा गया है कि परम शिष्य वह है जो पूर्ण रूप से अपने गुरू का रूप बन जाए और जो कुछ वास्तविक एवं

व्याख्यात्मक तौर पर गुरू पर कृपा हुई थी वही कृपा उस पर प्रतिबिम्बित तौर पर संक्षिप्त रंग में हो जाए। सारांश यह कि समस्त रूहानी निशानों में गुरू का एक आदर्श बन जाए। अल्लाह की किताब और रसूल का मूल कारण यही है ताकि एक दीपक से हज़ारों दीपक प्रकाशित हो जाएं। परन्तु इस विवेक से हिन्दुओं के समक्ष वेद निरुत्तर है। वेदों के अनुसार यह बात असंभव है कि कोई व्यक्ति वेद का अनुकरण करके वह वास्तविक ज्ञान तथा विवेक प्राप्त कर सके जो केवल वाद-विवाद से उन्नति करके ख़ुदा तआला से प्रत्यक्ष वार्तालाप प्राप्त हो जाए, जबकि वेद ही इस बात को कहने वाले हैं कि वास्तविक ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं हो सकती। अत: इस से सिद्ध है कि स्वयं वेद के इक़रार से चार ऋषियों के अतिरिक्त किसी अन्य हिन्दू को मुक्ति प्राप्त ही नहीं। अर्थात् वेदों में अल्लाह की किताब होने की यह निशानी नहीं पाई जाती कि वास्तविक विवेक का द्वार न केवल चार बेनाम व्यक्तियों पर बल्कि सम्पूर्ण संसार पर खोलते हों। अत: जबकि जिस उद्देश्य के लिए अल्लाह की पुस्तक आया करती है वेदों से वह उद्देश्य ही प्राप्त नहीं हो सकता तथा पाप से मुक्त होना केवल हज़ारों यूनानियों के दण्ड पर आधारित है तो वेद किस रोग की औषधि हैं।

(3) इसी प्रकार हम देखते हैं कि ख़ुदा तआला के कार्य से वेदों का मार्ग-दर्शन कोई समानता नहीं रखता। क्योंकि पृथ्वी और आकाश पर दृष्टि डालने से हमें स्पष्ट दिखाई देता है कि ख़ुदा तआला अत्यन्त दयालु है और वास्तव में जैसा कि उसने कहा है-

وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا۔ (इब्राहीम - 35)

अर्थात् उसकी नेमतें असंख्य है। परन्तु वेदों की शिक्षा यह है कि दान के तौर पर एक कण भी नहीं दिया गया बल्कि जो कुछ मनुष्यों

को उनके आराम की वस्तुएं दी गई हैं वे उन्हीं के पूर्व कर्मों का फल हैं तथा उन वस्तुओं को उत्पन्न करने वाले उनके ही कर्म हैं। जैसे पृथ्वी, आकाश, चन्द्र, सूर्य, नक्षत्र पंच★ महाभूत, वनस्पतियां तथा जड़ पदार्थ इत्यादि जिनमें मनुष्य के लिए लाभ भरे हुए हैं, वे आर्यों के किसी पूर्ण पुण्य से उत्पन्न हुए हैं और यदि आर्यों के पवित्र कर्म न होते तो न पृथ्वी होती, न आकाश होता, न चन्द्र होता न सूर्य न नक्षत्र, न वनस्पतियां, न जड़ पदार्थ यहां तक कि कुछ भी न होता।

अब हे पाठकगण! बताओ कि संसार में इससे बेकार कोई अन्य धर्म भी होगा। एक ओर तो ये लोग गाय, बैल, घोड़े आदि पशुओं के बारे में यह कहते हैं कि ये किसी पूर्व पाप से पैदा हुए हैं तथा एक ओर यह भी कहते हैं कि हमारे शुभ कर्मों ने उनको गाय, बैल इत्यादि बनाया है, क्योंकि ये हमारे आराम पाने की वस्तुएं हैं। अत: देखना चाहिए कि उनके विचार विपरीत हैं। एक बात दूसरी बात का खण्डन करती है। फिर विचार करना चाहिए कि क्या इस बात की कल्पना की जा सकती है कि सूर्य, चन्द्र और पृथ्वी इत्यादि मनुष्य की उत्पत्ति के बाद तथा उसके शुभ कर्मों के अनन्तर पैदा हुए हैं। क्या यह सच हो सकता है कि ये जितनी भी नेमतें हैं एक अयोग्य मनुष्य उतने ही कर्म भी करता है और जैसे दाम देता है उसी के अनुसार वहां से वस्तुएं भी मिलती हैं। आजकल यदि शूद्र या साहसी को भी ये स्पष्ट बातें समझाई जाएं तो उसको समझने में थोड़ी सी भी कठिनाई नहीं होगी परन्तु ये लोग अब तक नहीं समझते और बड़ी लज्जा से मुख पर अभी तक यही बात है कि अन्य समस्त पुस्तकें गिलट तथा खोटी हैं और वेद खरा (शुद्ध) सोना है। अत: न्याय करने वालो! हमने यह वेद का सोना आप लोगों के समक्ष

★पांच प्रधान तत्त्व जिससे संसार की सृष्टि हुई- आकाश, वायु, अग्नि, जल तथा पृथ्वी। (अनुवादक)

रख दिया है। अब आप लोग स्वयं विचार कर लें कि इस सोने में कहां तक खरापन भरा हुआ है।

(4) इसी प्रकार हम देखते हैं कि हमारी अन्तर्आत्मा तथा हार्दिक प्रकाश से जो हमें प्रदान किया गया है वेद की शिक्षाएं अनुकूलता नहीं रखतीं हैं। हमारा विवेक इन बातों को कदापि स्वीकार नहीं करता कि जिस पर हमारा सम्पूर्ण जीवन निर्भर है और जो हमारे प्रत्येक प्राशिक्षण का केन्द्र-बिन्दु है वह ऐसा निर्बल हो कि न तो स्वयं उत्पन्न कर सके,न कोई कृपा कर सके न क्षमा याचना से हमारे पाप क्षमा कर सके न हमारे प्रयासों से हमें वास्तविक विवेक तक पहुंचा सके अर्थात् कुछ भी न कर सके। तो फिर ऐसे का होना क्या और न होना क्या। यदि यही परमेश्वर है तो परलोक की वास्तविकता ज्ञात हो गई। वेदों की उपासना की शिक्षाएं इससे भी अधिक सुन्दर हैं। किसी क़ौम को मध्यस्थ बना कर देख लो। कोई व्यक्ति इस बात का समर्थक नहीं होगा कि वेद शिर्क की शिक्षा से रिक्त है। हमने वेदों पर बहुत विचार-विमर्श किया और यथा सामर्थ्य उनके मालूम करने के लिए ज़ोर लगाया। अन्ततः हम पर स्पष्ट हो गया कि ये चारों वेद प्राचीन सांसारिक वस्तुओं के उपासकों के विचारों का संकलन हैं तथा उस काल खण्ड की रचना है कि जब वास्तविक सर्वशक्तिमान तक नहीं पहुंच पाए थे। अतः वे लोग जो मारिफ़त संबंधी शास्त्रों का अल्पज्ञान रखते थे उन्होंने युग का उलट-फेर तथा पृथ्वी एवं आकाशीय घटनाओं में आकाशीय ग्रहों तथा पंच महाभूतों का पर्याप्त प्रभाव देखकर अपने दिलों में यही समझ लिया कि यदि कोई समस्त कायनात का प्रतिपालक और कुशलता पूर्वक संसार की व्यवस्था करने वाला है तो यही वस्तुएं हैं, इनके अतिरिक्त यदि कुछ है तो संसार में हस्तक्षेप करने से वंचित तथा बेकार है। अतः वास्तव में अल्लाह की विशेषताओं का

इन्कार करना और ख़ुदा तआला को सर्वशक्तिमान के विशेषण से बेकार समझना यही देव उपासना तथा आवागमन का वास्तविक कारण है। क्योंकि जब ख़ुदा तआला को अपने कुशल व्यवस्थागत कार्यों से वंचित समझा गया तो आवश्यकता-पूर्ति के लिए देवता बनाए गए और भाग्य के उतार-चढ़ाव तथा परिवर्तनों को पूर्व कर्मों का कारण ठहराया गया। अत: इस ही विचार से ये दोनों ख़राबियां पैदा हो गईं। अर्थात् आवागमन एवं देव-उपासना। आर्य लोग जिन्होंने वेदों के सुधार का उत्तरदायित्त्व अपने ऊपर लिया है बड़े परिश्रम से छुपाना चाहते हैं और व्यर्थ प्रयास कर रहे हैं कि वेदों को अनेकेश्वरवाद की शिक्षा से पवित्र ठहराएं। परन्तु उनके हित में क्या ही अच्छा होता कि चारों वेद इस संसार से ऐसे नष्ट हो जाते कि कोई विरोधी उनकी आन्तरिक अपवित्रताओं को देखने का अवसर न पा सकता।

रहीं वेद की विद्याएं और कलाएं तो उनके बारे में तो हम कुछ चर्चा कर चुके हैं तथा कुछ और भी चर्चा होगी। अन्तत: हम यह भी स्पष्ट करना उचित समझते हैं कि हमने इस पुस्तक के लेखक आर्य के बारे में क़ादियान के हिन्दुओं से सुना है कि उस की जीभ पर सरस्वती चढ़ी हुई है। अत: अब हम ज्ञात करना चाहते हैं कि क्या उस सरस्वती के उतारने के लिए हमारा इतना ही लेख पर्याप्त है या किसी अतिरिक्त भरपाई की भी आवश्यकता है।

★ ★ ★

हिन्दुओं के वेदों की कुछ वास्तविकता और उनकी शिक्षा का कुछ नमूना

प्रोफेसर विलसन अपने ऋग्वेद के अनुवाद की भूमिका में लिखते हैं कि ऋग्वेद के एक सौ इक्कीस मन्त्रों से जो प्रथम अष्टक में है सेंतीस केवल अग्नि की ही प्रशंसा में हैं उनमें अग्नि के साथ अन्य देवताओं की महिमा का वर्णन किया गया है और पेंतालीस मंत्रों में इन्द्र की महिमा का वर्णन है तथा अन्य शेष मंत्रों में से बारह मंत्र वायु देव की प्रशंसा में हैं जो कि इन्द्र के सहपंथी हैं तथा ग्यारह अश्विनी की प्रशंसा में हैं जो सूर्य के पुत्र हैं। चार मंत्र प्रातः काल के देवता की प्रशंसा में हैं और चार विश्वदेव की प्रशंसा में हैं जिनको सरभव देवता भी कहते हैं। अन्य शेष मंत्रों में निम्नकोटि के देवताओं की महिमा का वर्णन है। इस कथन से स्पष्ट है कि उस कालखण्ड में महाभूतों की उपासना होती थी। उसका कथन पूर्ण हुआ।

वेद के अनुवादक प्रोफेसर विलसन का यह मत है जिसको उन्होंने अपने ऋग्वेद के अनुवाद की भूमिका में लिखा है। अब हम यह नमूने के तौर पर ऋग्वेद की कुछ ऋ्रुतियां लिखते हैं जिनकी प्रमाणिकता को हमने न केवल एक पुस्तक से अपितु कई माध्यमों से और पूर्ण तौर पर जानने वालों की गवाही से प्रमाणित करा लिया है। अतः अब आर्यों के लिए यह हरगिज़ उचित नहीं होगा कि केवल गर्दन हिलाकर उन श्रुतियों का इन्कार कर दें, बल्कि इन्कार की अवस्था में उन पर अनिवार्य होगा कि यह अनुवाद सही नहीं है तो जिस अनुवाद को वे सही समझते हैं उसका शाब्दिक अनुवाद व्याख्या सहित प्रकाशित करा दें ताकि ब्रह्म समाज के

विद्वान जो संस्कृत की पुस्तकों के अच्छे जानने वाले हैं मध्यस्थ के तौर पर मध्य में आकर फैसला कर दें और यदि आर्य लोग अब भी खामोश रहे तो फिर उन पर डिग्री है। वे श्रुतियां ये हैं-

ऋग्वेद संहिता प्रथम अष्टक

अध्याय-1 अनुवाक-1,

सूक्त-1

(1) मैं अग्नि देवता की जो होम का बड़ा गुरू और देवताओं को भेंटें पहुंचाने वाला धनवान है उपलब्ध करता हूं।

व्याख्या- व्याख्याकार लिखता है कि जिस शब्द से धनवान अनुवाद किया गया है वह शब्द संस्कृत की वास्तविक पदावली में रत्नाधात्मा है जिसका अर्थ है रत्न रखने वाला (जौहरी) परन्तु रत्न धन-सम्पत्ति को भी कहते हैं। इस श्रुति में काव्य संबंधी वर्णन है सर्वप्रथम अग्नि को एक ऐसा देवता निर्धारित किया गया है जिस से समस्त देवताओं से पूर्व आहुति देनी पड़ती है। अर्थात् होम का घी इत्यादि सर्व प्रथम अग्नि पर ही डाला जाता है। अत: इस दृष्टि से वह प्रथम देवता है जिसकी वेदों में सर्वप्रथम प्रशंसा हुई है, बल्कि ऋग्वेद की पदावली का प्रारंभ ही अग्नि की प्रशंसा से होता है और यह अग्नि देवता तो आहुतियां अन्य देवताओं को पहुंचाता है वह क्या वस्तु है? उनसे अभिप्राय वह भाप (या धुआं) है जो घी इत्यादि को अग्नि पर डालने से अग्नि में से उठती है और वायु में मिल जाती है जो वायु देवता है। फिर इन्द्र देवता अर्थात् जिसकी पहुंच वायु मंडल के अत्यन्त शीतल भाग तक है। फिर पृथ्वी देवता पर उसका प्रभाव पड़ता है। यह तो इस श्रुति की विषय वस्तु है तथा इसमें शाब्दिक कारीगरी यह है कि अग्नि को जिसका रंग चमकदार एवं प्रकाशमान है

रत्नाधात्मा अर्थात् रत्नों वाला कहा गया है, क्योंकि अग्नि की चमक से एक संबंध है। जैसे अग्नि एक रत्नों वाला तथा धनवान देवता है जिसके पास इतने रत्न हैं कि देवताओं को आहुतियां देता है।

अब मैं कहता हूं कि यह काव्य-संबंध तो सब हुए परन्तु क्या इस श्रुति में परमेश्वर का भी कहीं वर्णन है। हे आर्यो! कुछ न्याय से काम लो। ईमान द्वारा अपनी अन्तर्आत्मा से ही पूछकर देखो कि इन शिष्टतापूर्वक अर्थों के अतिरिक्त इसके अन्य अर्थ भी हो सकते हैं, हरगिज़ नहीं हो सकते। क्योंकि यदि अग्नि को परमेश्वर समझा जाए तो वे अन्य देवता कौन से हैं जिनको परमेश्वर आहुतियां पहुंचाता है? इस प्रकार तो पद्य का भी सत्यानाश हो जाएगा। क्योंकि इस सूक्ष्म विचारक कवि ने अग्नि को उसके प्रकाशमान रंग के कारण एक रत्नवान से उपमा दी है। जैसा कि अग्नि को चमत्कार रत्नों से अन्य कवि भी उपमा देते आए हैं। स्वर्गीय शैख़ सा'दी ने भी एक पद्य में अग्नि की रत्नों से उपमा दी है। अत: यदि हम अग्नि से तात्पर्य आग न लें बल्कि परमेश्वर लें तो इन समस्त भावों की गंभीरता मिट्टी में मिल जाएगी। परन्तु हम किसी प्रकार अग्नि से अभिप्राय परमेश्वर नहीं ले सकते। क्योंकि ऐसा मानने से आगे आने वाली श्रुतियों से वेदों का और भी भांडा फूट गया है। देखो इसी अग्नि की दूसरी प्रशंसा इसी अष्टक (अन्विका) 4, सूक्त-1 पृष्ठ-57 में यह श्रुति है:-

"हे अग्नि जो कि दो लकड़ियों के परस्पर रगड़ने से पैदा होती हैं इस पवित्र कटी हुई कुशा पर देवताओं को ला। तू हमारी ओर से उनको बुलाने वाला है और तेरी उपासना होती है।"

अब आर्यों को विचार करना चाहिए कि क्या परमेश्वर दो लकड़ियों के रगड़ने से पैदा होता है। क्या इससे स्पष्ट अन्य निशान भी होगा कि

कवि ने लकड़ियों का भी वर्णन कर दिया जो अग्नि के भड़कने का कारण है। फिर यदि इस श्रुति पर भी विश्वास न हो तो एक और श्रुति लिखी जाती है उसको पढ़ो तथा कुछ इन्साफ़ करो। वह श्रुति यह है-

> **"हे अग्नि..... शुभ कर्मों को उन्नति देने वाली जिन देवताओं की हम उपासना करते हैं उनको उनकी स्त्रियों के साथ सम्मिलित कर। हे प्रकाशमान जीभ वाली उन्हें सोमरस पीने को दे।**
>
> देखो अष्टक-1 अन्विका-4, सूक्त-3

देखो इस स्थान पर भी कवि ने चमक के कारण अग्नि को प्रकाशमान जीभ वाली कहा है और उस का कार्य यह बताया है कि वह अन्य देवताओं को तथा साथ ही उनकी स्त्रियों को सोमरस पिलाती है। अत: अग्नि को उसके भाप पैदा करने के कारण देवताओं को पिलाने वाली समझा गया। अब विचार करो क्या यह परमेश्वर होने का लक्षण है? फिर यदि यह श्रुति भी हृदय की आशंका दूर न कर सके तो लीजिए एक और श्रुति प्रस्तुत है-

> **"हे अग्नि देवता अपनी चतुर और शक्तिशाली घोड़ियां जिनको शीतल वायु का नाम देते हैं अपने रथ में जोत तथा उनके द्वारा देवताओं को यहां ला।"**
>
> देखो वही अष्टक अन्विका-4, सूक्त-3

इस श्रुति में कवि ने अग्नि के तीव्र अंगारों को घोड़ियों के रूप में कल्पना की है तथा अग्नि-समूह को जो भड़क रहा है एक रथ मान लिया है और अभिप्राय उसका यह है कि इस अग्नि से भाप उठेगी और वायु इत्यादि में पहुंचेगी, जैसा कि वह एक अन्य श्रुति में लिखता है जिसकी यही अन्विका और यही सूक्त है-

"हे अग्नि...... तू इन्द्र, वायु, बृहस्पति, मित्र, पुषान, फागा, अदित्यावन और मरूत के समूह को आहुति प्रदान कर।"

इन्द्र वायुमंडल के शीतल भाग का नाम वायु हवा का नाम और अन्य चारों वर्षा के मासों के नाम हैं। मरूत महीने की हवाएं है। कवि ने इस सब को देवता निर्धारित कर दिया है। इसका अर्थ यह है कि सर्वप्रथम गर्म होने से ही भाप उठती है तो जैसे अग्नि भाप को उठा कर फिर उन्हीं इन्द्र आदि को वह आहुति प्रदान करती है, सम्पूर्ण वेद में इसी विवाद का बारम्बार वर्णन किया गया है कि पहले भाप वायु में मिलकर इन्द्र के पेट में पड़ती है जैसा कि इसी अष्टक अन्विका-3, सूक्त-1 में उल्लेख है कि इन्द्र का पेट अत्यधिक सोमरस पीने के कारण समुद्र के समान फूल जाता है और तालू की नमी के समान सदैव नमी युक्त रहता है। इन्हीं भोजनों से इन्द्र का पेट भरता है और शक्ति प्राप्त होती है। पहले वर्णन हो चुका है कि इन्द्र को पिलाने वाला अग्नि ही है। अब इन समस्त कारणों से सिद्ध होता है कि वास्तव में अग्नि से तात्पर्य आग ही है तथा अग्नि शब्द का सामान्य और शब्दकोशीय अर्थ आग ही है। समस्त ऋग्वेदीय कथन बारम्बार इसी की गवाही दे रहे हैं तथा वेद के पूर्व भाष्यकारों ने भी यही अर्थ लिखे हैं। मंत्रों का काव्य-संबंध भी इसी को चाहता है, और जिन विशेषताओं से अग्नि को सम्बद्ध किया गया है वे भी आग ही की विशेषताएं हैं न कि परमेश्वर की। हिन्दुओं का यह विचार हमेशा से चला आया है और अब भी है। यही कारण है कि ज्वालामुखी की आग करोड़ों हिन्दुओं की दृष्टि में एक बहुत बड़ी देवी है। हमने बहुत से हुन्दुओं को ऐसा ही कहते हुए सुना है कि इस कलियुग में ज्वालामुखी के अतिरिक्त किसी वस्तु में सच शेष नहीं रहा।

इस बात को कौन नहीं जानता कि बहुत से हिन्दू आग को भी परमेश्वर समझते हैं। हिन्दुओं में अग्नि पूजकों के सम्प्रदाय जिन्हें सागिंग कहते हैं इसी आधार पर निकाले हैं। पंडित दयानन्द भी अपने वेद भाष्य में जिसे उन्होंने 1877 ई० में बनारस की नीरास कम्पनी के प्रकाश भवन से प्रकाशित किया था कई स्थानों पर स्वीकार करते हैं कि अग्नि से अभिप्राय आग ही है किन्तु इसका दूसरा अर्थ परमेश्वर भी बताते हैं। इसलिए उन्हें परमेश्वर के दो-दो अर्थ करने पड़े और बहुत यत्न किए परन्तु इस बात में सफल नहीं हो सके। उनके लिए उचित होता कि वे सीधे-सीधे शब्दों को व्याकरण के अनुचित प्रणाली के शिकंजे पर अकारण न चढ़ाते और न अपनी ओर से एक अप्रमाणित शब्दकोश गढ़ते, बल्कि मध्यस्तरीय होने का दावा करके वेदान्तियों की भांति अग्नि, वायु, पानी और मिट्टी इत्यादि को परमेश्वर कह देते। इस प्रकार संभवत: वेदों के कुछ दोष छुप सकते। बहरहाल हम आर्यों के योग्य लोगों से यह चाहते हैं कि वे इन मंत्रों का स्पष्टीकरण करके हमारे लेख के मुकाबले पर प्रकाशित करें और फिर किसी मध्यस्थ को दिखाएं तथा दयानन्दी धोखों पर घमण्ड न करें। यद्यपि उनके इस भ्रम का उपचार बहुत कठिन है कि दयानन्द वेद के ज्ञान में बड़ा प्रकाण्ड विद्वान था, किन्तु तीन बातों पर विचार करने से उनकी यह कठिनाई सरल हो सकती है।

प्रथम यह कि जिन पुराने पंडितों से दयानन्द ने मतभेद किया है वास्तव में अधिकतर मत उन्हीं के पक्ष में हैं। वही हैं जो सैकड़ों बल्कि हज़ारों वर्षों से वेदों की देव उपासना को प्रकाशित करते आए हैं।

द्वितीय बात यह कि व्यावहारिक रूप से जिस चीज़ ने शास्त्रों के अनुसार जीवनयापन करने वाले तथा संयम धारण करने वाले हिन्दुओं में रिवाज़ पाया है वे सृष्टि पूजा की आस्थाएं हैं। जो उनके ऐसे स्थानों

पर जो शुभ तथा मार्ग-दर्शन के झरने समझे जाते हैं। ऐसे युगों से अपना अधिकार मांग रहे हैं जिनका प्रारंभ ज्ञात करना कठिन है। उदाहरणतया बनारस शहर जो हिन्दुओं का एक विश्वविद्यालय समझा गया है जिसमें प्रत्येक देश से ब्राह्मण और पंडित आकर दस-दस, बारह-बारह वर्ष तक ज्ञान प्राप्त करते हैं। यह शहर शिर्क (अनेकेश्वरवाद) से ऐसा परिपूर्ण है कि संभवत: यह अद्वितीय हो। इस शहर में पंडितों के असंख्य देवताओं के असंख्य मंदिर हैं, जिनमें से कुछ के विषय में कहा जाता है कि अत्यन्त प्राचीन तथा ऋषियों के समय के हैं। यह शहर गंगा के पूर्व किनारे पर लम्बाई में ढाई मील और चौड़ाई में सामान्यत: एक मील तक आबाद है। कदाचित इस दृष्टिकोण से कि गंगा भी एक बड़ी देवी है उसके किनारे पर यह बसाया गया है। यद्यपि इस शहर में प्रत्यक्ष विशेषता कुछ ऐसी नहीं परन्तु फिर भी यह विशेषता समझी गई है। अधिकतर हिन्दू वृद्ध होकर इस शहर की ओर प्रवास कर जाते हैं क्योंकि उनके विचार में उसमें मरना स्वर्ग में पहुंचा देता है। अब देखना चाहिए कि यह वही शहर है जिसमें प्रारंभ से बहुत से पंडित होते चले आए हैं और अब भी हैं। जैसे यह शहर साक्षात् वेद है। परन्तु प्रत्येक गली-कूचे में उस गन्दगी के समान जो इस शहर की गलियों में पाई जाती है जगह-जगह देवी-देवताओं की मूर्तियां उपासना के लिए स्थापित की हुई दिखाई देती हैं। अत: जब वेद ने इसी शहर पर जो आर्य विद्वानों की खान समझा जाता है यह प्रभाव डाला। आज से नहीं बल्कि हज़ारों वर्ष से, तो अन्य स्थानों पर वह कौन सा अच्छा प्रभाव डालेगा।

तृतीय यह कि यदि वेदों का शाब्दिक अनुवाद (चाहे बड़े-बड़े पक्षपाती आर्य अपने हाथ से करें) किसी अन्य देश में भेजा जाए। उदाहरणतया इंग्लैण्ड, या अमरीका या रूस में तो कोई व्यक्ति इन मंत्रों

में एकेश्वरवाद (तौहीद) नहीं समझ सकता, क्योंकि इसका तो अनुवाद भी हो चुका। अब यदि अनुमान के तौर पर स्वीकार भी कर लें कि वेदों में यद्यपि शिर्क की शिक्षा है, किन्तु गुप्त रूप से उसमें तौहीद (एकेश्वरवाद) छुपी हुई है। तो ऐसी पहेलियों से अल्लाह की जनता को क्या लाभ होगा और पंडितों के हज़ारों प्रकार के विद्यमान शिर्कों पर कौन सा अच्छा प्रभाव पड़ेगा। क्या ऐसा पोच और कमज़ोर कथन उस भयानक तूफ़ान को समाप्त कर सकता है जिसके स्वयं हिन्दुओं के बड़े-बड़े आचार्य कारण बन रहे हैं और बड़ी बुलन्द आवाज़ से दावा करते हैं कि वही मामले सही हैं जो हमने समझे हैं और वेद के अनुसार हैं। यदि कोई पवित्र विचार पंडित से हो निरा बनारस का ठग न हो तो वह गवाही दे सकता है कि अब वेद स्वयं शिक्षा के योग्य हैं, न यह कि वर्तमान परिस्थितियों को ठीक कर सकते हैं।

चतुर्थ अल्लाह तआला की दी हुई बुद्धि का इस्तेमाल करते समय ज्ञात होगा कि ढंगों, लक्षणों और स्पष्ट कथनों से वेदों में सृष्टि-उपासना की शिक्षा सिद्ध होती है वे समस्त प्रमाण अटल और विश्वसनीय हैं। जैसा कि जगह-जगह प्रत्येक मंत्र में पंडित दयानन्द ने भी अपने वेद भाष्य में स्वीकार कर लिया है कि वास्तव में अग्नि से अभिप्राय आग है और वायु से अभिप्राय हवा है। परन्तु उसके अन्य अर्थ भी हैं। जैसा कि ऋग्वेद प्रथम अष्टक के दूसरे सूक्त के प्रथम तीन मंत्रों में जो वायु की महिमा का वर्णन करते हैं उनमें भी पंडित दयानन्द ने अपने वेदभाष्य में स्वीकार कर लिया है कि अग्नि तथा वायु वास्तव में आग और हवा के नाम हैं। किन्तु यह परमेश्वर के नाम भी है। अब देखना चाहिए कि जिन बातों का अन्य समस्त पंडित दावा करते हैं उनको स्वयं भी इक़रार है, किन्तु उन्होंने जो नया विचार व्यक्त किया है दूसरे पंडित उससे सर्वथा

इन्कारी हैं और दयानन्द ने कोई ऐसा कारण भी प्रस्तुत नहीं किया जो थोड़ा सा भी सन्तोषजनक हो। उसके वेदभाष्य को ध्यानपूर्वक सुना है और उन ब्रह्म समाज वाले विद्वानों की पुस्तकें भी देखी हैं जो दयानन्दी विचारों के खण्डन के लिए प्रेरित हैं। हम ख़ुदा की क़सम सच-सच कहते हैं कि हमें प्रत्येक वाक्य से अपना आदेश जताने की दुर्गन्ध आती है जो एक मोटी समझ और अयोग्यता से मिश्रित हो तथा एक देहाती एवं गंवार भाषण में व्यक्त किया गया है। मैं उन शुभ आस्थाएं रखने वालों को जिन्होंने अपनी स्वभाविक बुद्धि को बेकार छोड़कर अपना धर्म-ईमान दयानन्द के सुपुर्द कर दिया है इस आध्यात्मिक (रूहानी) मृत्यु में उन लोगों की मृत्यु के समान पाता हूं जो अपनी मूर्खता से अपने आप को जगन्नाथ के रूप में पहियों के नीचे डाल देते हैं जो उन्हें पूर्ण रूप से कुचल देते हैं। परन्तु उनका तो शरीर कुचला जाता है किन्तु दयानन्दी अस्तित्व के रथ ने हिन्दुओं के विवेक एक बुद्धि★ को कुचला है और जैसे वैश्याएं जगन्नाथ की मूर्ति के सामने नाचते हुए बेशर्मी से हरकतें करती हैं तथा अलग-अलग तौर तरीकों से जो पूर्णत: बेशर्मी एवं निर्लजता

★फुटनोट- बंगाल की खाड़ी में जगन्नाथ एक शहर है और वहां एक प्रसिद्ध मंदिर है जिसमें जगन्नाथ की मूर्ति स्थापित की गई है। धार्मिक मेलों के आयोजन पर यह मूर्ति एक रथ में रखी जाती है जो संभवत: 15 या 16 पहियों का होता है और फिर इस मूर्ति को अत्यन्त बनावटी वस्त्र पहना कर एक मन्दिर से दूसरे मन्दिर तक ले जाते हैं। बड़े-बड़े पण्डित और साधू उन मेलों में जमा होते हैं जिनके लिए डा. बर्नी के कथनानुसारसैकड़ों वेश्याओं ने स्वयं को दान किया हुआ होता है। इस सबके बावजूद वे सब पण्डित और साधू शुभ आस्थावान ऐसे हैं कि इस रथ के पहियों के नीचे मरने को तैयार होते हैं और जो व्यक्ति स्वयं को रथ के पहियों के नीचे डाल दे तथा उनसे कुचला जाकर अपने प्राण गंवाए ऐसे व्यक्ति को हिन्दुओं में अत्यन्त महात्मा एवं पवित्र समझा जाता है। इसी से

से किये जाते हैं इस बेजान और बेज़बान स्त्री को प्रसन्न करना चाहती हैं। ऐसा ही आर्यों के छटे हुए बदमाश ख़ुदा तआला के पवित्र अवतारों को गालियां देकर अपनी समझ में दयानन्द की रूह (आत्मा) को प्रसन्न कर रहे हैं। यद्यपि उन्हें ज्ञात नहीं कि वह कहां पड़ा है और किस अवस्था में है। जितनी आर्यों ने हमें गन्दी गालियां दीं और गालियों से भरे हुए पत्र लिखे तथा मार डालने की हमें धमकियां दीं उसका तो हमें अफसोस नहीं क्योंकि हम जानते हैं कि उनका स्वभाव ही ऐसा है परन्तु ख़ुदा तआला के पवित्र अवतारों को गालियां देना और दिल दुखाने वाला अपमान करना यह उन्होंने अच्छा आचरण नहीं अपनाया। हमारे पास जितने उन लोगों के बेनाम पत्र मौजूद हैं और जो कुछ लेखराम पेशावरी के हस्ताक्षर किए हुए पत्र अब तक पहुंचे हैं जिनको हमने सुरक्षित रखा हुआ है। इससे एक बुद्धिमान निर्णय कर सकता है कि दयानन्दी धर्म ने उनके दिलों पर किस प्रकार का प्रभाव डाला है।

अब हम अपने पहले विषय की ओर लौटकर दावे के साथ कहते हैं कि हिन्दुओं के वेद कदापि शिर्क (अनेकेश्वरवाद) से ख़ाली नहीं हैं और जितने हमने बतौर नमूना वेदों के मन्त्र लिखे हैं इसी से पाठक समझ सकते हैं कि वेदों में बजाए एकेश्वरवाद के क्या भरा हुआ है। परन्तु अफसोस कि फिर भी मंदबुद्धि और दुर्विचार आर्य दयानन्दी दाव-पेच से निकलना नहीं चाहते तथा बुद्धि एवं न्याय दोनों को छोड़ कर सर्वथा चापलूसी के मार्ग से यह दावा करते हैं कि अवश्य दयानन्दी राय पहुंचने वाली है। इस दावे में चारों ओर से बहुत लज्जित भी होना पड़ता है परन्तु कुछ ऐसे लाज-शर्म से दूर जा पड़े हैं कि तनिक भी इन लज्जाओं से दर्दमन्द नहीं होते। हमें याद है कि एक बार एक आर्य ने हमारे समक्ष चर्चा की कि स्वामी दयान्द जी ने अपने वेद भाष्य में सिद्ध करके दिखा दिया है कि

अग्नि, वायु आदि परमेश्वर के नाम हैं। हमने कहा कि तुम्हारे स्वामी जी तो स्वयं स्वीकार करते हैं कि अग्नि वायु से अभिप्राय उन मन्त्रों में आग और हवा भी है। देखो उनका वेदभाष्य ऋग्वेद प्रथम अष्टक सूक्त-1। हाल खींच-तान अग्नि और वायु आदि का नाम परमेश्वर भी रखते हैं परन्तु इस पर उनके पास कोई प्रमाण नहीं। और जो हमारे पास प्रमाण इस बात के हैं कि अवश्य अग्नि, वायु आदि से अभिप्राय आग और हवा आदि महाभूत या आकाशीय पिण्ड हैं, उनको न स्वामी जी और न उनका कोई सहायक तोड़ सकता है तब उस आर्य ने पूछा कि भला आप बताएं कि वे प्रमाण कौन से हैं। इस पर वही अटल और विश्वसनीय कारण जो ऋग्वेद की ऋुतियों की व्याख्या में अभी हम लिख चुके हैं वह सब उस हिन्दू को सुनाई गईं तब कुछ चुप रह कर और सोच–विचार कर बोला–क्या स्वामी जी ने उसका कुछ उत्तर नहीं दिया इस पर उन मन्त्रों का वेदभाष्य प्रस्तुत किया गया कि यदि कुछ उत्तर लिखा है तो तुम ही सुना दो। फिर क्या था ऐसा चुप हुआ कि बेशर्मी के सारे बहाने दबे रह गये। सहसा उर्दू ऋग्वेद के खोलने से उस मन्त्र पर जो प्रथम अष्टक अन्विका–1, सूक्त–2 में हैं नज़र जा पड़ी–हे बुद्धिमान मित्र व द्रोण (यह दोनों सूर्य के नाम हैं) हमारे यज्ञ को सफल करो तुम विशाल जनसमुदाय के लाभ हेतु उत्पन्न हुए हो। बहुतों को तुम्हारा ही आसरा है। तब उस आर्य को यह ऋुति भी दिखाई गई कि देखो इस में सूर्य का सृष्टि होना स्वीकार करके फिर उससे प्रार्थना भी की है अपितु उस पर आसरा भी किया है। अतः इस श्रुति का दिखाना उस आर्य के हित में ऐसा हुआ कि जैसे कोई मरे हुए सांप को एक और डण्डा मार देता है यह समस्त अपमान आर्यों को उठाने पड़ते हैं परन्तु हम देखते हैं कि वे इन बदनामियों की कुछ भी परवाह नहीं करते और न तो अपने विचारों के

पक्ष में और न उन उत्तम प्रमाणों के खण्डन में जो मौखिक या लिखित तौर पर उनको दिखाये जाते हैं किसी प्रकार का प्रमाण बौद्धिक अथवा धार्मिक पुस्तकों से दे सकते हैं। हां गालियां और अपशब्दों की गन्दगी उनके दिलों में बहुत है। अत: जो कुछ उनकी थैली में है वही प्रत्येक प्रश्न करने वाले को पुण्यदान की तरह देते हैं और पुण्य की आशा रखते हैं। सत्य है उचित बात का उचित उत्तर देना उन लोगों का काम नहीं **जिन का परमेश्वर भी समस्त रूहों (आत्माओं) और विश्व के कण-कण पर केवल हुक्म जताने के तौर पर अधिकार रखता है न किसी उचित अधिकार से जो प्रमाण के साथ स्वीकार करने योग्य हो।**

हमारा विचार है कि जितना क़लम का ज़ोर और वर्णन करने की क्षमता तथा जानकारियों का फैलाव प्राचीन काल के आर्यों में पाया जाता है और जिस समझदारी से उन्होंने वेदान्त के मामलों को निकाल कर वेदों की अनेकेश्वरवाद की शिक्षाओं पर पर्दा डालना चाहा है और सर्वेश्वरवाद की चादर को फैलाकर अग्नि, वायु, इन्द्र, सूर्य, चन्द्र आदि को एक सरल विधि से उस चादर के नीचे ले लिया है। यह विधि बनावट से ख़ाली और बहुत कुछ वेदों की सहायता करने वाली है। क्योंकि सहृदय व्यक्ति समझ सकता है कि एक ही सबसे बड़ी शक्ति है जो सम्पूर्ण हस्तियों (अस्तित्वों) में काम कर रही है। परन्तु और भी अधिक ध्यानपूर्वक विचार करने पर सिद्ध होगा कि वर्तमान वेदों की शिक्षाएं सर्वेश्वरवाद के मामलों से भी समानता नहीं रख सकतीं क्योंकि कुछ स्थानों पर स्रष्टा के एक अलग अस्तित्व को भी मान लिया है और ठीक-ठीक सृष्टि उपासकों की तरह अग्नि और जल आदि को अलग-अलग देवता मानकर उससे कामनाएं मांगीं हैं और देवताओं की बहुत सी प्रशंसा की है। कोई छोटा, कोई

बड़ा, कोई बूढ़ा, कोई जवान और प्रत्येक स्थान पर सृष्टि की विशेषताएं स्पष्ट रूप से व्यक्त कर दीं हैं तथा पवित्र हृदयों को नफ़रत दिलाने वाली प्रशंसाएं उन देवताओं की की हैं और स्पष्टता पूर्वक अपनी चर्चा को उस सीमा तक पहुंचा दिया है जिससे साफ–साफ समझ में आ जाता है कि यह वक्ता सृष्टि उपासना को अपना धर्म मानता है न कि और कुछ।

सबसे बड़ी ख़राबी यह है कि कई स्थानों पर वेद आवागमन का समर्थक है जैसा कि ऋग्वेद के प्रथम अष्टक में कितने मन्त्र ऐसे हैं कि एक स्पष्ट कथन से आवागमन के मामले की शिक्षा देते हैं और स्पष्ट है कि आवागमन के स्वीकार करने से वेदान्त का मामला स्थापित नहीं रह सकता क्योंकि वेदान्ती प्रत्येक रूह (आत्मा) को सृष्टि समझते हैं और इस बात के समर्थक हैं कि परमेश्वर ने अपने अधिकार से मनुष्य की रूह (आत्मा) को एक सीमा तक शक्तियां दी हैं। और स्वयं ही प्रत्येक सृष्टि की सीमा निर्धारित की है। अत: यह कथन आवागमन के मामले को मिथ्या सिद्ध करने वाला है। क्योंकि आवागमन के अनुसार प्रत्येक पुरुष और स्त्री, मनुष्य तथा जानवर की सीमा का निर्धारण पूर्व कर्मों के कारण है और पूर्व कर्मों की श्रृंखला तब ही स्थापित और सुरक्षित रह सकती है कि जब रूहों को स्वयं भी मानें अन्यथा नहीं। जैसा कि प्रत्येक स्वस्थ बुद्धि समझ सकती है। अत: इससे स्पष्टतया सिद्ध होता है कि वेदों के अनुसार समस्त रूहें और संसार का कण-कण स्वयंभू ही है और जब प्रत्येक वस्तु वेदों के अनुसार स्वयंभू हुई तो वही संकट, वही बुराइयां, वही ख़राबियां सामने आएंगी जिनकी कुछ चर्चा हम कर चुके हैं और जैसा कि हमने अपनी पुस्तक 'सुर्मा चश्म आर्य' में लिखा है फिर हम चेतावनी के रूप में लिखते हैं कि ख़ुदा तआला का वास्तविक एकेश्वरवाद आवागमन के साथ कदापि एकत्र नहीं हो सकता। जब तक आर्य लोग आवागमन को पूर्णत: नहीं

छोंड़ेंगे तब तक ख़ुदा तआला की महानता और प्रताप पर कदापि उनकी नज़र नहीं पड़ेगी। मनु जी की पवित्र पुस्तक जिसको एक ओर हम वेदों का भाष्य कह सकते हैं और दूसरी ओर आर्यों के सामाजिक जीवन का इतिहास अनुमान कर सकते हैं जिस पर पण्डित दयानन्द ने भी बहुत कुछ आधार रखा है तथा आर्य समाज की इमारत का एक स्तम्भ ठहरा दिया है उसमें आस्थाओं के ज्ञान के अतिरिक्त प्रजा के प्रति कर्त्तव्य के मामले भी वेद के अनुसार ऐसे विचित्रतम वर्णन हुए हैं कि बस पाठक आश्चर्य के सागर में डूब जाता है और सहसा कहना पड़ता है कि वेदों के एकेश्वरवाद की विशेषताओं के अतिरिक्त प्रजा के प्रति कर्त्तव्यों का पालन करने का भी खूब न्यायोचित विधि याद है।

जैसा कि मनुजी वेदों के अनुसार कहते हैं कि यदि शूद्र की पुत्री से कोई सज्जन ब्राह्मण आदि व्यभिचार कर बैठे तो कोई दोष की बात नहीं, किसी प्रकार का दण्ड नहीं परन्तु यदि कोई नीच जाति का किसी सज्जन की पुत्री से ऐसा कार्य करे तो जान से मार दिया जाए या वह प्राणों का मूल्य चुकाये जो लड़की के माता पिता निर्धारित करें। देखो मनु संहिता अध्याय- 8 श्लोक 365। फिर श्लोक 380 में लिखा है ब्राह्मण यद्यपि कितना ही बड़ा पाप करे कदापि मृत्यु दण्ड नहीं होना चाहिए। ब्राह्मण के वध के समान कोई पाप नहीं। ब्राह्मण नीच जाति की लड़की से विवाह कर सकता है और यदि किसी नीच जाति के पास सोना, चांदी या सुन्दरता हो तो ब्राह्मण उसे अपने उपयोग में ला सकता है परन्तु यदि कोई नीच जाति वाला ऐसा कार्य करे तो जलते हुए लोहे की चादर पर जला कर मारा जाए।

ऐसा ही यदि ब्राह्मण किसी शूद्र को वेद पढ़ता हुआ सुन पाये तो उसके कानों में पिघला हुआ सिक्का और जलती हुई मोम डाली जाए। यदि वह उसको पढ़े तो उसकी जीभ काट डालनी चाहिए यदि वह उसको

कंठस्थ करे तो उसका दण्ड यह है कि उसका शरीर काट कर उसका दिल निकाला जाए। ब्राह्मण सबका मुखिया है यदि किसी ब्राह्मण की सम्पत्ति वेदों की शिक्षा प्राप्त करने में समाप्त हो जाए तो उसको अधिकार है कि अपनी आवश्यकता की वस्तुएं किसी वैश्य या शूद्र के घर से स्वयं चुरा ले या चोरी करवा ले। ऐसे अत्याचार पीड़ित व्यक्ति की फ़रियाद बादशाह को नहीं करनी चाहिए। शूद्र की मुक्ति इसी में है कि ब्राह्मण की सेवा करे अन्य सब कर्म अलाभकारी हैं। नीची जाति को रुपये जमा करने की अनुमति नहीं क्योंकि कहीं ऐसा न हो कि वह धनी होकर ऊँची जाति के लोगों पर अधिकार करे (देखो मनु स्मृति, अध्याय-9 श्लोक-23)

अब यदि किसी आर्य का यह विचार हो कि मनु जी ने वेदों के विरुद्ध लिखा है तो पहली बात तो ऐसा विचार अनुमान के विरुद्ध है जिससे मनु जी पर न केवल यह आरोप लगता है कि उन्होंने झूठ बोला अपितु यह भी सिद्ध होता है कि वह वेदों के परम शत्रु और अपने अस्तित्व में पाप तथा शिर्क (अनेकेश्वरवाद) की ओर प्रेरित थे। फिर हम यह भी कहते हैं कि मनु जी को झुठलाना कोई सरल बात नहीं अपितु उस अवस्था में हो सकता है कि जब बहुत से भाष्यकार प्राचीनकाल की गवाही दें कि वेदों का आंचल इन विषयों से पवित्र है और यह सब मनु जी के तमोगुण की बनावट है। परन्तु ऐसी गवाही तब स्वीकार योग्य हो सकती है कि जब इन समस्त विषयों के विरुद्ध वेदों की श्रुतियां प्रस्तुत की जाएं जो स्पष्ट रूप से इन बातों का खण्डन करती हों परन्तु क्या किसी आर्य की हिम्मत है कि ऐसा काम कर दिखाए। अत: जब तक ऐसी सार्वजनिक गवाही और वेदों के ऐसे मंत्र प्रस्तुत न हों तब तक मनु जी पर चार्जशीट नहीं हो सकती अपितु यही समझा जाएगा कि यह सब वेद ही की करतूत है।

★ ★ ★

लेखराम पेशावरी के ज्ञान और बुद्धि का नमूना

यह वही लेखराम आर्य है जिसने हमारे बारे में, हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में और हज़रत ईसा मसीह के बारे में आरोप लगाना, गन्दी गालियां देना, गन्दे विज्ञापन प्रकाशित करवाना और निराधार अपमान को आरोप के रूप में प्रस्तुत करना अपना नियम बना रखा है।

हमारी पुस्तक बराहीन अहमदिया के खण्डन में इसी हिन्दू ने जिसका नाम शीर्षक में लिखा है कुछ पृष्ठ प्रकाशित करवाए हैं और जैसा कि इन लोगो की आदत है बहुत कुछ झूठे आरोप और निराधार अपमान तथा एक दुर्गन्धपूर्ण मूर्खता के साथ पवित्र क़ुर्आन पर आरोप लगाए हैं। यह पुस्तक जिसका नाम 'बराहीन अहमदिया का खण्डन' रखा है इस व्यक्ति के ज्ञान की योग्यता और बुद्धि के अनुमान का एक दर्पण है। हमें कदापि आशा नहीं कि शिष्ट हिन्दू इस पुस्तक को पढ़कर फिर यह राय व्यक्त कर सके कि इसके लेखक का बुद्धि, समझ और आध्यात्मिक ज्ञान से कुछ परिचय है या सभ्यता और सज्जनता से उसके स्वभाव का कुछ सम्बन्ध है। इस पुस्तक की वास्तविकता से हमें पूरी जानकारी है और हमें इस समय उन हिन्दुओं की बुद्धि पर बहुत अफसोस है जिन्होंने एक ऐसे मूर्ख, जो बुद्धि से काम नहीं लेता के काले किए हुए पृष्ठों को मूल्य देकर खरीदना चाहा है। हम शीघ्र इस साक्षात मूर्खता के गन्द और झूठ को अपनी व्यापक पुस्तक बराहीन अहमदिया भाग–पाँच में व्यक्त करेंगे और अत्यन्त स्पष्ट तौर पर दिखाएंगे कि आर्यों के लिए ऐसे व्यक्ति का मार्गदर्शन तथा उसकी यह पुस्तक लज्जा के योग्य है या नहीं। यदि हम चाहते तो इस पुस्तक का खण्डन जो पुस्तक के रूप में हमारे पास तैयार पड़ा है, इस पुस्तक के प्रकाशित होने से पहले प्रकाशित कर देते परन्तु हम पहले आर्यों की

बुद्धि का परीक्षण करना चाहते हैं कि वे इस हिन्दू की पुस्तक पर क्या राय व्यक्त करते हैं और कहां तक उसका साथ देते हैं क्योंकि उस अवस्था में बहुतों की बुद्धि, समझ, और न्याय के अनुमान का परीक्षण हो जाएगा। जिस व्यक्ति ने हमारी किसी पुस्तक को पढ़ा होगा वह यदि चाहे तो गवाही दे सकता है कि हमारी पुस्तकें केवल ऊपरी चमक या जल्दी का काम कदापि नहीं होतीं अपितु एक इन्साफ करने वाले और बुद्धिमान शासक की जाँच पड़ताल के समान हैं जो मुकद्दमा की गहराई तक पहुंचकर और प्रत्येक समीक्षा योग्य मामले का पूरा पूरा समाधान करके फिर आदेश करता है। अब हम बतौर नमूना पेशावरी साहिब के विचारों में से एक दो बातें व्यक्त करते हैं। वह अपनी पुस्तक के पृष्ठ–25 पर रूहों (आत्माओं) के स्वयंभू होने का यह प्रमाण प्रस्तुत करते हैं कि न तो रूहें मिश्रण को स्वीकार करने वाली हैं और न ही टुकड़े–टुकड़े होने वाली चीज़ें हैं फिर उनका जन्म कैसे हुआ। अत: सिद्ध हुआ कि रूहें अनादि हैं।

अब पाठक समझ सकते हैं कि कहाँ तक इस व्यक्ति में प्रमाण को पहचानने का तत्त्व है। इतना नहीं जानता कि जो कुछ मैं व्यक्त करता हूं वह तो आर्यों की ओर से स्वयं एक दावा है कि उनका परमेश्वर केवल जोड़ने जाड़ने की शक्ति रखता है और जो चीज़ें मिश्रण स्वीकार करने वाली या टुकड़े न होने वाली हैं उनको परमेश्वर पैदा नहीं कर सकता क्योंकि परमेश्वर का काम जोड़ना–जाड़ना है। इससे अधिक उसमें शक्ति नहीं परन्तु इस दावे पर कोई दलील प्रस्तुत नहीं करते कि क्यों शक्ति नहीं। इसी दावे को लेखराम ने बड़े विश्वास के साथ प्रमाण के स्थान पर प्रस्तुत कर दिया है। अब लेखरामी योग्यता को जांचने के लिए यही नमूना पर्याप्त है कि वह ऐसे दावे को जो अपने समझने के लिए स्वयं प्रमाण का मोहताज है, प्रमाण समझ बैठा है जैसे वर्णन कर रहा है कि रूहों कि स्वयंभू होने पर

यह प्रमाण है कि हम आर्य लोग किस व्यापक और टुकड़े न होनी वाली चीज़ को उत्पन्न हुई नहीं मानते। हे भले आदमी! क्या प्रमाण इसी बात का नाम है कि जिस चीज़ को स्वयं न मानें वही न मानना प्रमाण समझा जाए। अत: जिस व्यक्ति में दावा और प्रमाण में अन्तर करने का तत्त्व नहीं क्या वह यह अधिकार रखता है कि आर्यों की ओर से वकील बन कर शास्त्रार्थ और वाद–विवाद के मैदान में आए तथा क्या ऐसे वकील का गढ़ा हुआ एवं संवारा हुआ सब आर्यों को स्वीकार होगा। अभी थोड़ा समय गुज़रा है कि जब दयानन्द ने यह राय व्यक्त की कि मेरे परमेश्वर को रूहों (आत्माओं) की ख़बर नहीं कि कहाँ हैं और कितनी हैं तो इस पर तत्काल मुन्शी जीवनदास ने सफ़ीर हिन्द अमृतसर में पर्चा छपवाया कि दयानन्द की ऐसी ऐसी रायें हम कदापि स्वीकार नहीं करेंगे। वह हमारा कोई पथ-पदर्शक नहीं, जबकि स्पष्ट है कि दयानन्द इस व्यक्ति की भांति निरा काठ का पुतला नहीं था। हाँ वेद में जो कुछ भला लिखा है वह कुछ स्पष्टीकरण के शिकन्जा पर चढ़ा कर छुपाना चाहता था जिस में वह असफल रहा। अत: जबकि सभ्य व्यक्तियों ने दयानन्द की बातों को स्वीकार करना न चाहा तो फिर लेखराम की यह नई बात कैसे स्वीकार करेंगे और यदि स्वीकार भी कर लें तो बहरहाल आशा की जाती है कि इस व्यक्ति के ये लेख जिनका आधार सर्वथा मूर्खता और पक्षपात पर है आर्यों की और भी क़लई खोलेंगे। भला विचार करने का स्थान है कि यही तो आर्यों की ओर से दावा है कि रूहें (आत्माओं) और कण-कण इस संसार का स्वयंभू है। क्यों स्वयंभू है? यही कारण है कि परमेश्वर सिवाय परस्पर जोड़ने के किसी व्यापक चीज़ को पैदा करने की शक्ति नहीं रखता। अब इसी दावे को यह योग्य व्यक्ति प्रमाण के तौर पर प्रस्तुत करता है। नहीं जानता कि प्रमाण तो वह होता है जिसके मामले ऐसे स्पष्ट हों कि

जो दोनों पक्षों को मानने पड़ें। परन्तु क्या यह मामला झगड़ा करने वालों का माना हुआ या विषय के सिद्धान्त में से है कि किसी अमिश्रित वस्तु के पैदा करने की अल्लाह तआला शक्ति नहीं रखता अपितु यह तो आर्यों की ही प्रमाण रहित आस्था है कि जो उनके परमेश्वर के परमेश्वरपन का पूर्णत: खण्डन करती है क्योंकि जिस हालत में उनका यह कथन है कि समस्त रूहें और कण-कण इस संसार का स्वयंभू है जो आरम्भ से स्वयं ही चला आता है तो इस अवस्था में अवश्य यह आरोप लगेगा कि उन चीज़ों पर उनके परमेश्वर का अधिकार किस प्रकार है। क्या हक़ जताने के कारण या बलपूर्वक। यदि कोई हक़ बनता है तो स्पष्ट है कि पैदा करने का हक़ होगा परन्तु पैदा होने के तो आर्य समर्थक ही नहीं तो फिर दूसरी बात माननी पड़ी कि बलपूर्वक अधिकार है अर्थात् इस बात का समर्थक होना पड़ा कि परमेश्वर अपनी अधिक शक्ति के कारण कम शक्तियों पर विजय पा गया। फिर जिस कुएं या खाई में चाहा डालता रहा। अब स्पष्ट है कि अधिकार में केवल बल का प्रयोग वह चीज़ है जिसको दूसरे शब्दों में अत्याचार कहते हैं तो इससे स्पष्ट हुआ कि आर्यों के अनुसार परमेश्वर बहुत अत्याचारी है जिसने बिना व्यक्तिगत अधिकार के अकारण ऐसे ही करोड़ों वर्षों से आवागमन के चक्कर में उन्हें डाल रखा है और पाप यह कि तुम मेरी आज्ञा का पालन क्यों नहीं करते। भला तेरी आज्ञा पालन क्यों करें? तू है कौन और तेरा अधिकार क्या है? क्या तूने पैदा किया या पूर्व कर्मों के बिना अपनी ओर से कुछ दिया या कृपा कर सकता है, क्या हमेशा के लिए सांसारिक कष्टों से छुड़ा सकता है। अन्तत: तू कौन सी चीज़ अपनी ओर से दे सकता है ताकि तेरी आज्ञा का पालन किया जाए।

अब विचार करना चाहिए कि इस अवस्था के अतिरिक्त कि ख़ुदा तआला को अपना स्रष्टा और अपना प्रतिपालक और अपनी कृपाओं का

स्रोत मान लिया जाए, कोई और अवस्था भी है जिससे उसका स्वामित्व स्थापित तथा सिद्ध हो सके। यदि किसी आर्य के मस्तिष्क में है तो प्रस्तुत करे। तुम विचार करके देख लो कि ख़ुदा तआला जो हमारा ख़ुदा कहलाता है उसकी ख़ुदाई की वास्तविक सच्चाई ही यह है कि वह ऐसा अस्तित्व है जो वरदान का स्रोत है, जिसके हाथ से समस्त अस्तित्वों की सृष्टि हुई है। इसी से उसकी उपासना कराने का अधिकार पैदा होता है और इसीलिए हम हार्दिक प्रसन्नता से स्वीकार करते हैं कि उसका हमारे शरीर, हृदय और प्राण पर अधिकारिक क़ब्ज़ा है क्योंकि हम कुछ भी न थे उसी ने हमको अस्तित्व प्रदान किया। अत: जिसने नास्ति से हमें अस्ति किया वह पूर्ण अधिकार से हमारा मालिक है। अब सारांश यह है कि समस्त रूहों और विश्व के कण-कण को स्वयंभू तथा अनादि मान कर एवं इसी प्रकार ख़ुदा तआला को दया करने से भी ख़ाली समझ कर एक कण मात्र भी अल्लाह का अधिकार सिद्ध नहीं होता अपितु यही सिद्ध होता है कि उसका रूहों पर अधिकार एक अनुचित अधिकार है कि सिवाय बलपूर्वक और अत्याचार के और कोई कारण इस अधिकार का पाया नहीं जाता और अत्याचार पर अहंकार भी सीमा से बढ़ा हुआ है क्योंकि जिन चीज़ों को उसने हाथ से पैदा नहीं किया, जिन पर एक कण भर दया नहीं कर सकता उनको अनन्त काल से अकारण आवागमन के चक्कर और हज़ारों दु:खों में डाल रखा है। एक बार मुक्ति देकर और इस परीक्षाभवन में पास करके फिर भी पीछा नहीं छोड़ता और पाप किये बिना बार-बार मुक्तिगृह से बाहर निकालता है। क्या कोई ऐसा दिल है जो ऐसे निर्दयी परमेश्वर से विमुख न हो। ऐसी कठोरता वह क्यों करता है सम्भवत: इसका यह कारण हो कि कोई ऐसा युग भी गुज़रा हो कि रूहों ने भी विजयी हो कर उस पर कोई कठोरता की हो। जिस तरह आरम्भ में राजा रावण, राजा रामचन्द्र

पर हावी हो गया था और रामचन्द्र को उससे बहुत कुछ लज्जाजनक दु:ख पहुंचा था। अत: इसी प्रकार सम्भव है कि ऐसा ही परमेश्वर को भी किसी युग में रूहों से बहुत दिल दुखाने वाला कष्ट पहुंचा हो इसलिए आज वह उन्हीं अत्याचारी रूहों से अपनी कसर निकाल रहा है। और जिस प्रकार रामचन्द्र ने विजयी होकर लंका को जला दिया था यही इरादा परमेश्वर का हिन्दुओं के साथ मालूम होता है कि दिन प्रतिदिन उन्हें नष्ट ही करता जाता है। सम्भवत: मुर्दे को जलाने की भी यही वास्तविकता होगी कि परमेश्वर का प्रकोप उनके बाह्य एवं अन्त:करण पर भड़का हुआ है। अत: उसने मुर्दों में भी प्रकोप का नमूना बनाना चाहा। इसी कारण से प्रत्येक हिन्दू हार्दिक विश्वास से जानता है कि मरने के बाद मेरी ख़ैर नहीं अवश्य किसी योनि में डाला जाऊंगा क्योंकि परमेश्वर तो क्षमावान और दयालु नहीं और एक पाप के बदले में लाखों योनियों का दण्ड तैयार तथा पाप से तो कोई एक भी व्यक्ति ख़ाली नहीं क्योंकि एक क्षण असावधान रहना भी पाप है।

अब इस लेख से यह भी स्पष्ट है कि ख़ुदा तआला को मानने के साथ उसको स्रष्टा, दयालु और कृपालु मानना भी अनिवार्य है। अत: इससे अच्छा ख़ुदा तआला के सामान्य सृष्टिकर्ता होने पर और क्या प्रमाण होगा कि वह ख़ुदा ही उस अवस्था में रह सकता है कि जब उसको सम्पूर्ण विश्व का स्रष्टा माना जाए अन्यथा नहीं। फिर एक दूसरी दलील यह भी है कि यदि हम उसको सम्पूर्ण विश्व का स्रष्टा न मानें अपितु केवल आंशिक तौर पर केवल स्वयंभू चीज़ों को जोड़ने वाला समझ लें तो उसके अस्तित्व पर कोई प्रमाण नहीं हो सकता क्योंकि जब वास्तविक अस्तित्व चीज़ों का जो हज़ारों कारीगरियों से भरा हुआ है स्वयंभू है तो फिर इस पर क्या तर्क है कि इनके जोड़ने-जाड़ने के लिए परमेश्वर की आवश्यकता है। यह सब

वर्णन 'सुर्मा चश्म आर्य' पुस्तक में स्पष्ट रूप से दर्ज है।

दूसरा तर्क रूहों के स्वयंभू होने पर इस बुद्धिमान ने यह लिखा है कि जब रूहों की मृत्यु नहीं तो सृष्टि भी अनिवार्य नहीं होती परन्तु यह भी दावा ही है कि जिस पर कोई प्रमाण नहीं। इतना तो सत्य है कि आर्यों के अनुसार समस्त रूहें यहां तक कि वे कीड़े जो गन्दगी में पड़ जाते हैं जैसे जूँ, पिस्सू, खटमल और दीमक आदि सब कभी नष्ट न होने वाली रूहें हैं जो कभी नष्ट नहीं हो सकतीं। परन्तु वैज्ञानिक फिलास्फरों ने इसको स्वीकार नहीं किया। हकीम अरस्तु ने बड़ी खोजबीन से इस बात को सिद्ध किया है कि सर्वशक्तिमान ने केवल मनुष्य की रूह को ऐसा बनाया है कि वह शेष रहेगी दूसरी समस्त रूहें नष्ट हो जाती हैं अपितु वैज्ञानिकों के अनुसार कुछ रूहें ऐसी हैं जिनका पलक झपकते ही उत्पत्ति और विनाश का समय गुज़र जाता है। अफ़्लातून ने ऐसा विचार किया था कि समस्त रूहें मनुष्य की रूह के समान शेष रहने योग्य हैं परन्तु अरस्तु आदि हकीमों पर जो उसके बाद थे यह गलती स्पष्ट हो गई जैसा कि अब तक यह परम्परा देखी जाती है कि पहले लोगों की गलतियों के संशोधनकर्ता बाद में आने वाले ही होते हैं। यूरोप के आधुनिक दार्शनिक जिन्होंने फीसागोरस की थ्योरी के अनुसार खगोल शास्त्र में संशोधन किया और बत्लीमूसी की थ्योरी के दोष निकाले और विचित्र-विचित्र खोजें भौतिकशास्त्र में कीं उन्होंने भी अफ़्लातून को इस विचार में झूठा समझा कि समस्त रूहें आरम्भ से हैं और हमेशा रहेंगी। अपितु बेकन आदि दार्शनिक इस बात के समर्थक हैं कि रूह आरम्भ से नहीं और समस्त रूहों से केवल इन्सान की रूह हमेशा रहने के लिए उत्पन्न की गई है न कि दूसरे जीवों की रूहें। अत: अफ़्लातून की राय का समस्त दार्शनिकों ने खण्डन कर दिया। अफ़्लातून ने और भी कई

स्पष्ट गलतियां की थीं जैसे अफ़्लातून की कहावत का मामला जिस के कारण बहुत सी बुराई-भलाई और लानत-मलामत उसकी अब तक होती रही है। दार्शनिकों में से एक समूह जो निरीश्वरवादी और ख़ुदा तआला का इन्कार करने वाला है जिनका सम्प्रदाय आजकल यूरोप में तेज़ी से फैलता जाता है वह मनुष्य की रूह का भी शरीर से अलग होने के बाद नष्ट होना विचार करते हैं। और आर्य इस बात से भी परिचित हैं कि इनकी कौम में वह सम्प्रदाय जो सबसे बढ़ कर वेदों पर चलने का दावा करता है और लगभग समस्त हिन्दू उसी सम्प्रदाय के अनुयायी नज़र आते हैं जिसको वेदान्ती कहते हैं। उस सम्प्रदाय का यही धर्म है कि प्रत्येक रूह परमेश्वर से ही निकली है और उसके अस्तित्व का अंग है और फिर परमेश्वर में ही मिल जाती है जैसे एक बूंद समुद्र में गिर कर।★ अब यद्यपि आर्यों को आवागमन के सिद्धान्त का विरोध और आवागमन के आधार को नष्ट करने के कारण तथा दूसरी बुराइयों के विचार से इस वेदान्ती धर्म को स्वीकार करना उचित ज्ञात नहीं होता परन्तु फिर भी वे ख़ूब जानते हैं कि वेदान्तों के अनुसार पुण्यात्माओं की रूह अपने व्यक्तित्व से नष्ट होकर परमेश्वर का अंग बन जाती है जैसा कि वह पहले भी परमेश्वर का अंग था। बहरहाल रूह के नष्ट होने के वे भी समर्थक हुए क्योंकि जो चीज़ अपना निश्चित व्यक्तित्व छोड़

★**फुटनोट-** हिन्दुओं की बहुत सी विश्वसनीय पुस्तकों में पाया जाता है कि प्रत्येक रूह परमेश्वर से निकली और परमेश्वर में ही मिल जाती है जैसा कि एक स्थान पर लिखा है कि सम्पूर्ण जीव परमेश्वर के वाक्य हैं और अन्ततः उस में ही लीन हो जाने वाले हैं देखो भगवत गीता अध्याय 13 से 15 तक। फिर लिखा है कि परमेश्वर ने चाहा कि एक से अनेक हो जाएं तब उसने तपस्या करके प्रत्येक चीज़ को बनाया और स्वयं जीव बन कर उसमें प्रविष्ट हो गया। वह स्वयं ही स्रष्टा और स्वयं ही सृष्टि है। वही सत्य और वही असत्य है। (तैत्रीय ब्राह्मण- पृष्ठ-83) इसी से।

देती है तो फिर उसको मौजूद नहीं कहा जाता। ऐसा ही आर्यों में कुछ नास्तिक मत वाले भी प्राचीन काल से चले आए हैं जिनके शास्त्र भी अब तक मौजूद हैं वे भी एकमत होकर यही कहते हैं कि मौत के साथ ही रूह नष्ट हो जाती है और कोई नाम व निशान शेष नहीं रहता। अब इस छानबीन से मालूम हुआ कि आर्यों की यह आस्था कि रूह अपने अस्तित्व की हैसियत से इसी प्रकार अवश्य शेष रहने वाली है जैसे ख़ुदा तआला और समस्त सृष्टि की रूह। यहाँ तक कि वे कमज़ोर कीड़े जो एक गन्दे फल में पड़ जाते हैं सब परमेश्वर की तरह आरम्भ से अन्त तक बाक़ी रहने वाले हैं। यह केवल एक दावा है जिसको आज तक किसी प्रमाण से सिद्ध नहीं किया गया। मुसलमान सर्वथा ऐसा नहीं मानते कि रूह अपने अस्तित्व की हैसियत से हमेशा बाकी रहने वाली है और न किसी दार्शनिक ने सिवाए एक बहिष्कृत कथन वाले व्यक्ति के ऐसा विचार किया है।

यदि हम लोग ऐसा मानते तो आर्यों की तरह हमें भी स्वीकार करना पड़ता कि समस्त कीड़ों-मकोड़ों की तरह रूह हमेशा रहने वाली है परन्तु न हमारा और न समस्त दार्शनिकों का यह मत है। हाँ हम यह कहते हैं कि बिना किसी व्यक्तिगत अनिवार्यता के विशेष ईश्वरीय कृपा ने मनुष्य की रूह को आजीवन बन्दगी के भेद से हमेशा बाक़ी रहने का उपहार प्रदान किया है। परन्तु यह बाक़ी रहना निश्चित है जिसका विशेष रूप से मनुष्य के लिए प्रबन्ध किया गया है। यदि व्यक्तिगत अनिवार्यता के तौर पर होता तो कीड़ों-मकोड़ों की रूह ने क्या पाप किया था जो इस अनिवार्यता से अWके देखने वालों को केवल शुभ चिन्तक के तौर पर सूचित करते हैं और कृपालु ख़ुदा तआला अकेला गवाह है कि हम सच

और बिल्कुल सच कहते हैं कि यह व्यक्ति धार्मिक ज्ञान आदि विद्याओं से पूर्णत: अनभिज्ञ अत्यन्त मंदबुद्धि प्रकृति का और साक्षात् मूर्ख है। हाँ गालियां देने, झूठे आरोप लगाने और अपशब्द बोलने में भंगियों और सांहसियों से भी बढ़कर है। पादरियों और इन्दरमन तथा कन्हैया लाल अलखधारी के निराधार आरोप जो इस्लाम पर और पवित्र क़ुर्आन पर उन्होंने गढ़े हैं और अपनी मूर्खता तथा अन्धेपन के कारण उन बातों को आरोप का स्थान बना लिया है जो असल बुद्धिमत्ता और उसके रहस्यों एवं मारिफ़त से भरे हुए हैं वही आरोप जो सैकड़ों बार रद्द हो चुके हैं उर्दू पुस्तकों और अख़बारों इत्यादि से उसने ले लिए हैं। यदि कोई लज्जावान हो तो एक ही उत्तर पाकर अपनी स्पष्ट ग़लती और मूर्खता देखकर शर्म से मर जाए। किन्तु इस स्वभाव के लोग मरा भी नहीं करते लज्जा और शर्म का अभाव जो हुआ। हम शीघ्र ही आर्यों को दिखाएंगे कि ऐसे व्यक्ति का पेशवा बन बैठना उनके लिए कलंक का टीका है या नहीं।

★ ★ ★

بررسولاں بلاغ باشدوبس		گر نیاید بگوش رغبت کس

تمت رسالۂ شحنۂ حق بعون قادر مطلق
از تصنیفات جناب حافظ کلام ربّانی محافظ
الہام یزدانی جناب مرزا غلام احمد صاحب
رئیس قادیان دام فیوضہ

शहन-ए-हक़ पृष्ठ 42 से संबंधित हाशिया

दयानन्दी धोखों का एक बड़ा नमूना यह है कि उसने हिन्दुओं को मुसलमानों के प्रति कुधारणा रखने के लिए अपने सत्यार्थ प्रकाश में सर्वथा दग़ाबाज़ी से जो उसकी नस-नस में भरी हुई थी लिखा कि हिन्दू का नाम जो आर्यों के लिए बोला जाता है वास्तव में यह फ़ारसी शब्द है जिसका अर्थ 'चोर' है। मुसलमानों ने तिरस्कार के तौर पर आर्यों का नाम चोर रखा है। इसलिए हिन्दू कहलाने से बचना चाहिए। इस दंगा भड़काने वाले लेख से दयानन्द का मूल उद्देश्य यह था कि एक ओर तो हिन्दू लोग मुसलमानों से क्रोधित हो जाएंगे, दूसरी ओर आर्य समाज की भी उन्नति होगी, क्योंकि आर्य कहलाने से जन सामान्य को यह धोखा लग जाएगा कि दयानन्दी धर्म बड़ी शीघ्रता से फैलता जाता है। जब सत्यार्थ प्रकाश में यह लेख प्रकाशित हुआ तो शायद 1881 या 1879 था कि हमने अख़बार वकील हिन्द अमृतसर में उसका एक ऐसा पूर्ण खण्डन प्रकाशित कराया जिसके साथ सदी का क्रमानुसार एक नक्शा भी संलग्न था और हमने सिद्ध कर दिया था कि इस्लाम के आने से काफी समय पूर्व ही हिन्दू शब्द हमेशा से इस क़ौम के लिए बोला जाता है। हमें याद है कि उस लेख में हमने सब्आ मुअल्लक़ा का एक शे'र भी लिखा था जो इस्लाम के प्रसार से पर्याप्त समय पहले का है और वह यह है-

وظلم ذوی القربٰی اشدّ مضاضة　　علَی المرء من وقع الحسام المهند

इस के अर्थ ये हैं कि अपनों का अत्याचार हिन्दी तलवार से बढ़कर है।

फिर इसके बाद एक पंडित ने भी दयानन्दी दावे का खण्डन लिखा और हिन्दू के शब्द का इश्तिक़ाक़ (एक शब्द से दूसरा शब्द बनाना) व्याकरण के अनुसार संस्कृत की धातु से ही सिद्ध किया। शायद उस हिन्दू का नाम महेश चन्द्र था। फिर सबके बाद पादरी टाम्स हावल

ने वह निबन्ध लिखा जिसको अब हम पाठकों को समर्पित करते हुए आर्य सज्जनों से पूछते हैं कि पादरी साहिब के उस लेख को पढ़कर हमें सूचना दें कि अब भी पंडित दयानन्द का छल सिद्ध है या नहीं? क्योंकि स्पष्ट सबूत के मिलने के बाद दयानन्द उन दो आरोपों में से एक आरोप के अन्तर्गत अवश्य आएगा या तो उसे धोखेबाज़ कहना पड़ेगा जिसने फूट डालने के लिए अकारण यह दग़ाबाज़ी की और या उसका नाम निपट मूर्ख रखना पड़ेगा जो ऐसी स्पष्ट और व्यापक तथा प्रसिद्ध बात से अपरिचित रहा। अत: अब हम ज्ञात करना चाहते हैं कि आर्य लोग इन दोनों नामों में से अपने दयानन्द के लिए किस नाम को पसंद करते हैं। क्या उसे धोखेबाज़ कहा जाए या मूर्ख। अब वह निबन्ध जिसे हमने प्रकाशित अख़बार निरंजन प्रकाश अमृतसर से नक़ल किया है उसे यथावत् लिखा जाता है-

हिन्दू★ तथा आर्य नाम का बयान

ज्ञान के विशेषज्ञों और मर्मज्ञों ने हिन्दू नाम के बारे में लिखा है कि यह शब्द उस दरिया के नाम से बना है जो सिन्धु कहलाता है, क्योंकि बहुत से शब्द जो संस्कृत भाषा से फारसी भाषा में आ गए हैं वे इस

★हाशिए का हाशिया– दयानन्द जी जिन्होंने 1876 ई० से आर्य समाज की स्थापना की है। वह और उनके अनुयायी प्राय: वर्णन करते हैं कि हिन्दू फ़ारसी में चोर को कहते हैं और यह नाम हमारी क़ौम का हमारे दुश्मनों अर्थात् मुहम्मदियों ने रखा हुआ है उनका यह बयान मात्र ग़लत है। नहीं बल्कि दो उद्देश्यों के लिए एक धोखा है।

प्रथम- यह कि हिन्दुओं को इस नाम से नफ़रत हो जाए और अकारण स्वयं को आर्य लिखा करें और इस कटूनीति से दयानन्द जी के पंथ की संख्या में दिन-प्रतिदिन वृद्धि होती जाए।

प्रकार से परिवर्तित पाए जाते हैं, अर्थात् जिन संस्कृत शब्दों के प्रारंभ में (स) होता है तो फ़ारसी भाषा में उन शब्दों के पूर्व का (स) (ह) में बदल जाता है। जैसे जो शब्द संस्कृत में (सप्त:) है वह फारसी में (हफ्त:) हो गया है और वैसा ही वस्म का वहम और सहस्त्र का फारसी में हज़ार और इसी प्रकार सिन्धू का हिन्दू हो गया हुआ मालूम होता है

शेष हाशिया - द्वितीय- हिन्दुओं और मुहम्मदियों में जो एकता और मेल-जोल हो रहा है उसके स्थान पर बैर पैदा हो जाए। फारसी जानने वाले लोग यह जानते हैं कि हिन्दू फारसी में भी एक शब्द है जिसके परिभाषिक मायने चोर के किए गए हैं परन्तु यह शब्द हिन्दू का जो हिन्दुओं की क़ौम पर बोला जाता है वह शब्द नहीं जो फ़ारसी में इस्तेमाल हुआ है और यह भी जानना चाहिए कि हिन्दू शब्द जो फ़ारसी में आया है उसके पारिभाषिक मायने केवल चोर ही के नहीं बल्कि कभी वह प्रियतम के मायने भी देता है। जैसा कि शीराज़ी कहता है-

بخالِ ہندوش بخشم سمر قند و بخارارا

यदि यह कहा जाए कि फ़ारसी में हिन्दू के मायने बुरे और अच्छे दोनों प्रकार के इस्तेमाल हुए हैं। इसलिए हिन्दू नाम को छोड़ना चाहिए तो इस कारण से न हिन्दू नाम बल्कि और भी बहुत से नाम छोड़ने पड़ेंगे। उदाहरणतया राम का शब्द भी फ़ारसी में अच्छे मायने नहीं रखता। क्योंकि फ़ारसी में राम ग़ुलाम (दास) और आज्ञाकारी को कहते हैं। यदि हिन्दू परिवर्तित करने योग्य है तो राम नाम भी परिवर्तित होना चाहिए। फिर इसी प्रकार आर्य अरबी में वैर रखने वाली क़ौम को कहते हैं वह भी बदला जाए और फिर वैद संस्कृत में हकीम को कहते हैं परन्तु फ़ारसी में बिना फल वाले एक वृक्ष का नाम है और फिर अनादि संस्कृत में उसको कहते हैं जिसका प्रारंभ न हो परन्तु मात्राओं को परिवर्तित करने से इनाद दुश्मनी को कहते हैं। दयानन्द अपने लेखो में वेदों को अनादि पुकारते रहे हैं तो यहां पर क्यों फारसी के मायनों को ध्यान में नहीं रखा गया। जो हिन्दू नाम पर फारसी के मायनों का ध्यान रखा जाता है। अत: यदि हिन्दू नाम परिवर्तित करने योग्य है तो अनादि भी जो वेदों पर लगाया गया है परिवर्तित योग्य समझना चाहिए। फिर हम पूछते हैं कि क्या यह बात

जिससे अभिप्राय है सिन्ध नदी के किनारे के निवासी। द्वितीय- संभव है यह हिन्दू नाम संस्कृत के दो शब्दों से बना हो अर्थात् हीन और दोष से जिसका अर्थ दोष रहित है और संभव है कि बार-बार प्रयोग करने के कारण उनमें से कुछ अक्षर छूट भी गए हों जैसा कि अब हिन्दुस्थान के स्थान पर हिन्दुस्तान बोला जाता है और बार–बार प्रयोग करने के कारण

शेष हाशिया - उचित है कि जिन नामों के मायने दूसरी भाषाओं में बुरे हों उनको परिवर्तित करना उचित है तो जिसमें कुछ भी बुद्धि हो और उसकी बुद्धि को किसी मतलब से अंधा न कर रखा हो कभी न कहेगा कि वे परिवर्तित किए जाएं। क्योंकि हमें दूसरों की भाषा से क्या मतलब है। हर एक को अपनी ही भाषा में देखना चाहिए कि हमारी भाषा में इस शब्द या नाम के क्या मायने हैं वैसा ही हिन्दुओं और आर्यों को अपने नामों के मायने अपनी संस्कृत भाषा में देखने चाहिए न कि फारसी और अरबी भाषा में। परन्तु हमें तो इसके विपरीत यह ज्ञात होता है कि दयानन्द जी और उनके अनुयायी संस्कृत भाषा के शब्दों को फारसी भाषा के शब्दों से पराजित समझ कर संस्कृत के शब्द छोड़ते रहे हैं। उदाहरणतया जब दयानन्द जी ने सुना कि फारसी भाषा में असीरबाद के मायने क़ैद होने के हैं तो इस दृष्टि से उन्होंने संस्कृत शब्द आशीर्वाद को त्याग दिया और उसके स्थान पर नमस्ते ठहरा दिया। हालांकि जो शब्द आशीर्वाद है वह संस्कृत में अच्छे मायने रखता है और बहुत पुराना शब्द है। और मनुस्मृति तथा हिन्दुओं की अन्य विश्वसनीय पुस्तकों में बहुत से स्थानों पर पाया जाता है। नहीं बल्कि उसके इस्तेमाल की अत्यधिक ताकीद भी की गई है। देखो मनुस्मृति अध्याय-2, श्लोक-126 अनुवाद, जो व्यक्ति आशीर्वाद देने की बात को नहीं जानता उसको प्रणाम करना चाहिए वह शूद्र के समान है और यह प्रत्येक पर स्पष्ट है कि भिन्न-भिन्न भाषाओं के कुछ-कुछ शब्द और नाम आपस में कुछ समान भी हुआ करते हैं परन्तु उनके अर्थों में बहुत बड़ा मतभेद पाया जाता है और यह किसी हाल में संभव नहीं कि प्रत्येक नाम या शब्दों के अर्थ समस्त भाषाओं में अच्छे या बुरे आपस में अनुकूल हों। यदि हमें इस कारण शब्द और नाम छोड़ने और परिवर्तित करने पड़ें तो सम्पूर्ण संसार के शब्द और नाम छोड़ने

स्थान से परिवर्तित होकर स्तान हो गया है। बुद्धि भी स्वीकार करती है कि हिन्दुओं के पूर्वजों ने जो बुद्धिमान थे ऐसा नाम अर्थात् हीन-दोष को जिस का अर्थ निर्दोष है अपनी क़ौम का रख लिया हो। फिर संस्कृत भाषा में आर्य नाम तथा फ़ारसी भाषा में 'ईरानी' दोनों एक ही धातु 'आर' से निकलते हैं। आर्य और ईरानी के वास्तविक अर्थ हल चलाकर खेती करने वाले के हैं और वास्तव में इस क़ौम के लोगों का यह 'आर्य' नाम उस समय था जब ये खेती करके हल जोत कर रोज़ी-रोटी कमाते थे। जैसा कि आज तक इस पंजाब में भी खेती करने वाले अराईं कहलाते हैं और इस पेशे के अधिकतर लोग पशुओं विशेष तौर पर बैलों पर अत्याचार भी

शेष हाशिया - तथा परिवर्तित करने पड़ेंगे जो केवल असंभव ही नहीं बल्कि बड़ी मूर्खता है। और दयानन्द जी के अनुयायियों के पास कोई सबूत नहीं है कि इस क़ौम का हिन्दू नाम मुहम्मदियों के अमुक बादशाह ने अमुक युग में रखा था और ज्ञान और होश रखने के बावजूद इस क़ौम के बुज़ुर्गों ने ख़ुशी से या ज़बरदस्ती से स्वयं पर लागू कर लिया था। यह सब पर स्पष्ट है कि हिन्दू राजाओं और विद्वानों ने दयानन्द जी और उनके पंथ वालों के अतिरिक्त इस नाम पर कभी कोई ऐतराज़ नहीं किया और हिन्दुओं की पुस्तकों में इस नाम का प्रचलन पाया जाता है। उदाहरणतया श्री गुरूनानक साहिब के आद ग्रन्थ में इस क़ौम का नाम बार-बार हिन्दू लिखा हुआ मौजूद है और श्री गोबिन्द सिंह साहिब जो फारसी भाषा में भी अच्छी महारत रखते थे उनको कभी यह मालूम न हुआ कि जिस क़ौम में से हम लोग हैं उसका नाम मुहम्मदियों की ओर से बहुत बुरा रखा गया है। इसलिए वह नाम परिवर्तित किया जाए। विचार करने का स्थान है कि अकबर बादशाह जो निष्पक्ष प्रसिद्ध है और जिस के युग में बहुत से हिन्दू दक्ष, अमीर, वज़ीर (मंत्री) तथा फ़ारसी भाषा में पूर्ण योग्यता और स्वतंत्र रूप से निर्वाह (गुज़र-बसर) कर चुके हैं उस समय उन्होंने भी इस नाम पर कुछ ऐतराज़ नहीं किया। फिर जिस हाल में हिन्दुओं के बुज़ुर्ग इस नाम पर रिवाज देते और स्वयं पर स्वीकार करते रहे हैं तथा उस पर कोई ऐतराज़ नहीं किया तो इस से ज्ञात होता है कि वे इस नाम को अच्छा समझते थे न कि बुरा।

किया करते हैं और बेज़बान पशुओं को ऐसे डण्डे से जिसके किनारे पर लोहे की एक नोकदार कील लगी होती है चुभो-चुभो कर हांका करते हैं। इस कारण से वह नोकदार कील उनके नाम से नामांकित होकर 'आर' कहलाती है। अत: जब इस क़ौम ने धीरे-धीरे ज्ञान-कला और सौदागरी में उन्नति की तो आर्य नाम को जो केवल कृषि करने वाले के लिए विशिष्ट था छोड़ दिया और इस आर्य नाम की अपेक्षा संभवत: हीन-दोष को जो धीरे-धीरे हिन्दू हो गया है अपनी कौम के लिए प्रयोग कर लिया यह हिन्दू नाम आर्य नाम की अपेक्षा इस क़ौम में शोभा पा गया।

शेष हाशिया - और दयानन्द जी या उनके अनुयायियों का यह कहना कि हमारी क़ौम का हिन्दू नाम मुहम्मदियों ने रखा है बिल्कुल ग़लत और धोखा है। क्योंकि यह नाम उन पुस्तकों में

शेष हाशिया- पाया जाता है जो मुहम्मद साहिब के जन्म से बहुत पहले लिखी गई थीं। उदाहरणतया आस्तर की पुस्तक जो यहूदियों की पवित्र पुस्तकों में दर्ज है और मुहम्मद साहिब के जन्म से एक हज़ार वर्ष पूर्व लिखी गई थी उसके प्रथम अध्याय की पहली आयत में यह वही अख़्ी सियोरस अर्थात् शेरशाह है जो हिन्दुस्तान से कोश तक शासन करता था। फिर फिलादीस जूसफ़ीस जो एक बड़ा यहूदी इतिहासकार गुज़रा है और सन् 37 ई० में पैदा हुआ था और मुहम्मद साहिब के जन्म से लगभग छ: सौ वर्ष पूर्व हुआ है वह अपनी इतिहास की पुस्तक के आठवें भाग के अध्याय-5 में यों लिखता है कि जीराम शाह सूर ने कुछ आदमी जो समुद्र की स्थिति से ख़ूब परिचित थे सुलेमान के पास भेजे ताकि वे यहां जहाज़ चलाएं और बादशाह ने उन को औफीर देश में भेजा कि जिस का नाम औरियाजिस परसूनसिंस है और यह क्षेत्र हिन्दुस्तान से संबंधित, और यहां का सोना बहुत उत्तम होता है। अत: स्पष्ट है कि मुहम्मद साहिब के जन्म से बहुत पहले यह देश हिन्दुस्तान के नाम से नामांकित, प्रसिद्ध और मशहूर था और और संभवत: इसके निवासी हिन्दू कहलाते थे।

लेखक- टाम्स हाविल, पिण्ड दादन ख़ान।

पृष्ठ 46 से संबंधित हाशिया

हमने एक योग्य और सत्याभिलाषी अंग्रेज़ का एक पत्र जो इस पुस्तक के पृष्ठ 46 पर दर्ज किया है। उसी अंग्रेज़ का एक दूसरा पत्र आज अप्रैल 1887 ई० को अमरीका से पहुंचा है जिसमें इतनी रुचि, निष्कपटता और सच्चाई को पाने की गंध आती है कि हम अपने विरोधी देशवासियों को दिखाने के लिए जो निकट होने के बावजूद बहुत ही दूर हैं, इस पत्र को अनुवाद सहित यथावत् दर्ज कर देना हितकारी समझा और साथ ही यह संक्षिप्त उत्तर जो हमने लिखा है अपने पाठकों को अवगत करने के लिए लिखा गया है। वह पत्र अनुवाद सहित यह है-

3021 ईस्टन एवेन्यू
सेण्ट लुई मिसूरी, यू.एस.ए.
24, फरवरी 1887 ई०
मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब
हमारे सेव्य (मख़्दूम)

आप का पत्र दिनांक 17 दिसम्बर मेरे पास पहुंचा। मैं इतना (अधिक) आभारी और कृतज्ञ हुआ कि वर्णन नहीं कर सकता। मैं उत्तर पहुँचने की समस्त आशाएं समाप्त कर चुका था, परन्तु आपके इस पत्र ने विलम्ब का पूरा-पूरा बदला दे दिया। निपट मूर्खता और समझ की कमी के कारण मैं केवल इतना ही उत्तर लिख सकता हूं कि हमेशा

3021 EASTON AVENUE
ST. Louis Missouri, U.S.A.
february 24th, 1887
MIRZA GHULAM AHMAD
Esteemed sir,

I cannot adequately express to you my gratitude for the letter received from you under date of December 17. I had almost given up all hope of receiving a reply but the contents of the letter and circulars fully repaid me for the delay. I hardly know what to say

से मेरी यही रुचि और अभिलाषा है कि सच्ची वास्तविकताओं का मुझे और भी अधिक ज्ञान हो। आप का विज्ञापन पढ़ने के बाद मेरे दिल में एक विचार ने जन्म लिया जिसे मैं हुज़ूर के सोच-विचार करने के उद्देश्य से प्रस्तुत करूंगा। न केवल तर्कसंगत तौर पर बल्कि ईमानी जोश की प्रेरणा से विश्वास करता हूं कि आप जो रूहानी उन्नति में मुझ से बढ़कर और ख़ुदा से निकटतम हैं मुझे ऐसी शैली में उत्तर देंगे जो अति उत्तम और अधिक उचित हो। यदि मेरे लिए हिन्दुस्तान में पहुंचना संभव होता तो मैं अत्यन्त ख़ुशी से पहुंचता किन्तु मेरी हालत ऐसी है कि पहुंचना असंभव मालूम होता है। मेरा विवाह हो चुका है और तीन बच्चे हैं। दो वर्ष के लगभग हुए हैं मैंने एकान्तवास धारण कर रखा है और ऐसा ही शेष आयु में करता रहूंगा। मेरी आय इतनी नहीं है कि मैं अपने कार्य से बिना

in reply except that I am still very anxious to gain more of the truth than I have thus far found. after reading your circulars an idea occured to me which I will present to you for your consideration knowing or rather feeling confident that you are so much more spiritual than I, so much nearer to God, will answer me in a way that will be for the best. were it possible for me to visit India I would do so only too gladly. But I am so situated that it seems almost an impossibility I am married and have three children. For nearly two years I have been living a life of celibacy and shall continue to do

ख़राबी के पृथक हो सकूं। क्योंकि मैं इस आय से पूर्ण व्यवस्था के साथ अपने परिवार का पोषण कर सकता हूं। इसलिए पर्याप्त सफर खर्च प्राप्त भी कर सकूं, तब भी यह असंभव मालूम होता है कि अपने परिवार के लिए दूर होने की अवस्था में पर्याप्त भण्डार उपलब्ध कर सकूं। इसलिए हिन्दुस्तान में पहुंचना अनुमान से बाहर देख कर मेरे दिल में यह विचार पैदा हुआ कि मैं इसी स्थान पर (आपकी सहायता से) सच्चाई फैलाने में कुछ सेवा कर सकता हूं। यदि जैसा कि आप फ़रमाते हैं इस्लाम धर्म ही सच्चा धर्म है तो फिर क्या कारण कि मैं अमरीका में प्रचार-प्रसार का कार्य न कर सकूं बशर्ते कि मुझ को कोई पथ-प्रदर्शक मिल जाए। मैं सोचता हूं कि मुझे इस प्रकार के प्रचार के लिए उचित अवसर प्राप्त हैं। मुझे विश्वास हुआ है कि न केवल मुहम्मद साहिब ने बल्कि ईसा, गौतम बुद्ध, ज़रतुश्त तथा बहुत से

so as long as I live. My income is not sufficient to justofy me in giving up my business as it requires all that I can make to support my family; therfore, even if I had sufficient means to enable me to make the journey to india I would not be able to furnish support for my family during my absence. Therefore a visit to India being out of the question it occured to me that I might through your aid assist in spreading the truth here. If, as you say the Muhammadan is the only true religion why could I not act as its apostle or promulgator in America. My opportunities for doind so seem to me very good if I had some one to lead me

अन्य लोगों ने सच्चाई की शिक्षा दी। और यह बताया कि हम को न इन्सान की बल्कि ख़ुदा की इबादत और उपासना करना अनिवार्य है। और यदि मुझे यह समझ आ जाए कि जो शिक्षा मुहम्मद साहिब ने दी है वह अन्य पुरुषों की शिक्षा से उत्तमतर है तब मैं इस योग्य हो जाऊंगा कि मुहम्मद स. के धर्म की अन्य धर्मों से बढ़कर सहायता और प्रचार करूं परन्तु उनकी शिक्षा का जो मुझे कुछ ज्ञान हुआ है इतने (कम) ज्ञान से मैं सहायता और प्रचार करने के योग्य नहीं हूं। अमरीका निवासियों का ध्यान सामान्यतया पूर्वी धर्मों की ओर आकर्षित है और बौद्ध धर्म की जांच-पड़ताल में अन्य समस्त धर्मों की अपेक्षा अधिक व्यस्त हैं। मेरे अनुमान के अनुसार आजकल सामान्य लोगों के विचार हमेशा की अपेक्षा इस्लाम धर्म और बौद्ध धर्म को स्वीकार करने के लिए अधिक योग्यता रखते हैं। यह संभव

aright at first. I have been led to believe that not only Muhammad but also Jesus, Gautama, Budha, Zoroaster and many others taught the truth, that we should, however, worship God and not men. If I could know what Muhammad really taught that was superior to the teachings of others. I could then be in a position to defend and promuglate the Muhammadan religion above all others. But the little I do know of his teachings is not sufficient for me to do effective work with. The attention of the Amercian people is being quite generally attracted to the oriental religious but Buddhism seems to be the foremost in their

प्रतीत होता है कि आपके सौजन्य से यह धर्म मेरे देश में फैल जाए। मैं पूर्ण विश्वास रखता हूं कि आप शौक़ एवं लगन के साथ व्यस्त हैं। मैं किसी तर्क पर सन्देह नहीं कर सकता कि आप को ख़ुदा ने आपके सच्चे प्रकाश को फैलाने के उद्देश्य से इल्हाम से सम्मानित किया है। अत: यह मेरे वास्तविक आनंद का कारण होगा कि मैं आपकी शिक्षा का अधिक आदर-सत्कार करूं तथा आप से और शिक्षा भी प्राप्त करूं। अल्लाह तआला जो दिलों के भेदों से परिचित है, जानता है कि मैं सच को तलाश कर रहा हूं और जब कभी मिल जाए स्वीकार करने के लिए तत्पर और उत्सुक हूं। यदि आप सच्चाई के मुबारक प्रकाश की ओर मेरा मार्ग-दर्शन करें तो आप देखेंगे तो मैं ठण्डे जोश वाला अनुयायी नहीं हूं बल्कि एक गर्म जोश अभिलाषी हूं। मैं तीन वर्ष से इसी खोज में हूं और बहुत कुछ मालूम भी कर चुका हूं कि ख़ुदा ने

investigations. The public mind, I think is now more than ever fitted to receive Muhammadanism as wel as Buddhism and it may be that through you it is to be introduced in my country. I am convinced that you are very much in earnest I have no reason to doubt that you are inspired by God to spread the light of truth therefore I would be happy to know more of your teachings and to hear further from you. God who can read all hearts, knows that I am seeking for the truth that I am ready and eager to embrace it wherever I can find it. If you can lead me into its blessed light you will find me not only a willing

मुझ पर बड़ी प्रचुरता के साथ अपनी बरकतें उतारीं और मेरी यह कामना है कि उसके काम को शौक़ और पूर्ण सच्चाई के साथ पूरा करूं। हां यह संघर्ष पैदा हो रहा है कि इस कार्य को किस प्रकार करूं, क्या करूं और किस प्रकार करूं कि इस कार्य को सर्वांगपूर्ण ढंग से पूरा कर सकूं। उसके दरबार में यह हुआ है कि मुझे मार्ग का स्पष्ट मार्ग दर्शन हो और गुमराही से सुरक्षित रहूं। यदि आप मेरी सहायता करें तो मैं आशा करता हूं कि आप ऐसा कर देंगे। मैं आप के पत्र को सुरक्षित रखूंगा और उसे बहुत सम्मान दूंगा। मैं आप के विज्ञापन को अमरीका के किसी प्रसिद्ध अखबार में छपवा दूंगा और उस अखबार की एक प्रति आपके पास भी भेजूंगा जिस में उसकी प्रसिद्धि बहुत फैल जाएगी और वह ऐसा लोगों की दृष्टियों में से गुज़रेगा जो इस प्रकार के मामलों में शौक और ध्यान देंगे। भविष्य में कोई और सच्चाई जिसे

pupil but an anxious one. I have been seeking now for three years and have found a great deal. God has blessed me abundantly and I want to do his work earnestly and faithfully. How to do it is what has moved me how to do it so that the most good may be accomplished. I pray to him that the way may be pointed out clearly to me so that I may not go astray. If you can help me I hope that you will do so. I shall keep your letter and prize it highly. I will get the circulars printed in one of the leading american newspapers so that they will have a widespread circulation and I will send you a copy of the paper.

आप सामान्यतया प्रसिद्ध करना चाहेंगे और मेरे पास इस उद्देश्य से भेजेंगे तो यह मेरे लिए अत्यन्त हर्षोल्लास का कारण होगा और यदि आप मेरी सेवाओं को अमरीका में ख़ुदाई मामलों के प्रचार के योग्य समझें तो आप को हर समय मुझ से इस प्रकार की सेवा कराने का पूरा-पूरा अधिकार है बशर्ते कि मुझ तक आप के विचार पहुंचते रहें और मैं उनकी सच्चाई का क़ायल होता रहूं। मुझे यह तो भली भांति विश्वास हो चुका है कि **मुहम्मद साहिब** ने सच फैलाया और मुक्ति के मार्ग का मार्ग-दर्शन किया और जो लोग उनकी शिक्षाओं के अनुयायी हैं उन्हें हमेशा के लिए खुश और मुबारक जीवन प्राप्त होगा। परन्तु क्या ईसा मसीह ने भी सीधा और सच्चा मार्ग नहीं बताया? और यदि मैं ईसा मसीह की हिदायत का अनुसरण करूं तो फिर क्या मुक्ति (नजात) की ऐसी निश्चित तौर से आशा नहीं की जा सकती जैसा कि

They may reach the eyes of many who will become interested. I shall be happy to receive from you at any time matter which you may have for general circulation and if you should see fit to use my services to further the aims of truth in the country they will be freely at your disposal provided, of course, that I am capable of receiving your ideas and that they convince me of their truth. I am already well satisfied that Muhammmad taught the truth that he pointed out the way to salvation and that those who follow his techings will attain to as condition of eternal bliss. But did not Jesus Christ

इस्लाम धर्म के अनुसरण से? मैं सच मालूम करने के उद्देश्य से प्रश्न कर रहा हूं न कि बहस और वाद-विवाद के उद्देश्य से। मैं सच को तलाश कर रहा हूं। मैं किसी विशेष दावे को सिद्ध करने के लिए वाद-विवाद नहीं करना चाहता। मैं सोचता हूं और समझता हूं कि आप वास्तव में मुहम्मद साहिब की हिदायत के अनुयायी हैं न कि उन आस्थाओं के जो जन सामान्य मुहम्मद स. के धर्म से अभिप्राय लेते हैं और समस्त धर्मों में जो सच-सच वास्तविकताएं मौजूद हैं उनको मानते हैं न उन आस्थाओं को जो आम लोग बाद में अपनी ओर से अधिक करते रहे। मुझे यह भी बहुत अफसोस है कि मैं आपकी भाषा समझ नहीं सकता हूं और न आप मेरी भाषा समझ सकते हैं अन्यथा मैं निश्चित तौर पर कहता हूं कि जो पाठ मैं आप से चाहता था

also teach the way? Now suppose I should follow the way pointed out by Jesus would not my salvation be as perfectly assured as if I followed Islam? I ask with a desire to know that truth and not to dispute or argue. I am seeking the truth not to defend my theory, I think I understand you to be a follower of the esateric teachings of Muhammad and not what is known to the masses of the people as Muhammadannism; that you recognize the truths that underlie all religions and not their esateric features which have been added by men. I too regret very much that I cannot understand your language nor you mine; for I feel quite sure that you

वह आप अवश्य मुझे सिखाते। फिर भी दृढ़ आशा रखता हूं कि यदि मैं ख़ुदा के प्रेम के योग्य होने की अभिलाषा में रहूंगा तो निस्सन्देह वह कोई न कोई ऐसा मार्ग निकाल देगा। मुबारक हो उसका पवित्र नाम- अब उम्मीदवार हूँ कि फिर आप से कुछ और हाल सुनूं। यद्यपि शारीरिक मुलाक़ात न हो सके तथापि रूहानी मुलाक़ात प्राप्त हो। आप पर और आपकी बातें सुनने वालों पर ख़ुदा का फ़ज़्ल हो। दुआ करता हूं कि आप की समस्त आशाएं और योजनाएं पूरी हों। अधिक आदाव-व-नियाज़

आपका-आज्ञाकारी
अलगज़ेण्डर आर. वीब
सेन्ट लुई मसूरी
3021, ईस्टन ऐवेन्यू
अमरीका

could tell many things which I much desire to know. How ever I am impressed to believe that ever I am impressed to believe that God will provide a way of I try to deserve his love. Blessed be his holy name as I hope that I may hear from you and that we again may some day meet in spirit even if we cannotmeet in the body. May the peace of God be with you and with those who listen to your words. I pray that all your hopes and plans may be realised with reverence and esteem.

I am yours respectfully,
ALEX. R WEBB
ST. LOUIS MISSOURI
3021 Easton Avenue.
America

यह उपरोक्त पत्र के उत्तर में लिखे गए पत्र की नक़ल है-

महोदय- आप का पत्र दिनांक 24 फ़रवरी 1887 ई० जो दिल को प्रसन्न एवं सन्तुष्ट करने वाला था मुझे मिला। जिसके पढ़ने से न केवल प्रेम रूपी दर्शन तथा मेरी वह कामना भी, जिस के लिए मैं अपने जीवन को समर्पित समझता हूं (अर्थात् यह कि मैं सच का प्रचार इन्हीं पूर्वी देशों में सीमित न रखूं बल्कि यथाशक्ति अमरीका और यूरोपीय देशों में भी जिन्होंने इस्लामी सिद्धान्तों को समझने के लिए अब तक पूर्ण रूप से ध्यान नहीं दिया इस पवित्र दोष रहित हिदायत को फैलाऊं) कुछ कृतज्ञता पूर्वक आपके निवेदन को स्वीकार करता हूं और मुझे अपने सर्वशक्ति सम्पन्न ख़ुदा से जो मेरे साथ

Reply of the above said Letter.

DEAR SIR,

I received your letter, dated 24th of february 1887 which proved itself to be great delight to my heart and a satisfaction to my anxieties. The contents of the letter not only increased my love toward you but led me to the hope of a partial realization of the object which I have in view for which I have dedicated the whole of my life viz, not to confine the spread of the light of truth to the oriential world but, as far as it lies in my power to further it in Europe, America and Co. where the attention of the people has not been sufficiently attracted towards a proper understanding of the

है दृढ़ आशा है कि वह आपको पूर्ण रूप से सन्तुष्ट करने के लिए मुझे सहायता देगा। मैं आप से वादा करता हूं कि पांच माह तक एक ऐसी पुस्तक जो क़ुर्आन की शिक्षाओं और सिद्धान्तों का दर्पण (आईना) हो, लिखकर फिर अंग्रेज़ी में उत्तम अनुवाद करा के छपवा कर आप की सेवा में भेज दूंगा, जिस पर दृढ़ आशा है कि आप जैसे न्यायवान, प्रतिभाशाली और पवित्र विचार रखने वाले को सहमत होने के लिए विवश करेगा कि हार्दिक प्रफुल्लता, विश्वास-शक्ति और ख़ुदा को पहचानने में उन्नति का कारण, परन्तु शायद फुर्सत की कमी के कारण यह समस्या आ जाए कि मैं एक ही बार में ऐसी पुस्तक आपकी सेवा में न भेज सकूं तो फिर ऐसी स्थिति में दो या

teachings of Islam. Therefore, I consider it an honour to comly with your request; and have a strong confidence in the almighty creator, who is with me that He will assist me in giving you a perfect and permanent satisfaction. I give you my word the course of about five months I will compile a work containing a short sketch of the teachings of the al-Quran, have it translated into English and printed and then send a copy of it to you. I strongly hope that it will bring full and final convition to a justful, considerate and uncontaminated mind like yours, enable your soul endow you with a firm belief in God and improve your knowledge of him. But perhaps it may be, that the various demands on my time may not allow me

तीन बार में भेजी जाएगी। और फिर उसी पुस्तक पर निर्भर नहीं बल्कि आपकी दिलचस्पी पाने से जैसी कि मैं आशा रखता हूं इस सेवा को आजीवन अपने ज़िम्मे ले सकता हूं। आप के प्रेम भरे वाक्य मुझे यह शुभ सन्देश देते हैं कि शीघ्र ही शुभ सन्देश सुनूं कि आपकी स्वाभाविक नेकी ने ख़ुदाई हिदायत ग्रहण करने के लिए न केवल आपको बल्कि अमरीका के बहुत से नेक दिल लोगों को सच्चाई की दा'वत की ओर आकर्षित कर लिया है। अब मैं अधिक कष्ट देना नहीं चाहता और अपने नि:स्वार्थ पत्र को इस दुआ के साथ समाप्त करता हूं सम्पूर्ण कायनात का ख़ुदा दोनों पक्षों को सांसारिक एवं आकाशीय आपदाओं से सुरक्षित रखते हुए हमारी उन कामनाओं को अंजाम तक पहुंचा दे कि समस्त शक्ति और सामर्थ्य उसी को है। आमीन

to spare a sufficient time for sending the whole work at once. In such a case I will send it to you in two orthree batches, I will not end the communication of instruction to you by this treatise but will continue satisfying your thrist after the investigation of truth for the rest of my life. your friendly words permit me to entertain the happy idea that I will in a short time have the intelligence that the instinctive moral greatness has directed not only to you but to many other virtuous men of American to the right way of salvation pointed out by Islam. here I end my letter of earnestness and sincerity. May God you and I be kept secure from all earthly and heavenly

आपका हार्दिक प्रेमी और शुभ चिन्तक-

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद
क़ादियान, ज़िला
गुरदासपुर, पंजाब
4 अप्रैल 1887 ई०

misfortunes and have all our hopes and planes realized.

yours sincerely,
MIRZA GHULAM AHMAD
Chief of Qadian, Gurdaspur
District, Punjab
4 April 1887

تاریخ طبع مصنف

آں صیدِ تیرہ بخت کہ بندی بپائے اوست
شپر مثال بُغضِ خوری اختیار کرد
فرعون شد و عنادِ کلیمی بدل نشاند
یکسر خزاں شد و گلہ ہا از بہار کرد
چوں شحنۂ حق از پئے تعزیر او بخاست
چنداں بکوفتش کہ تنش چوں غبار کرد
تاریخ ردّ آں ہذیانش چہ حاجت است
صیدے رکیک بود کہ موسیٰ شکار کرد

★ ★ ★